माध्यमिक पाठ्यक्रम

201 हिंदी

शिक्षार्थी मार्गदर्शिका

अभिकल्पन तथा निर्माण

डॉ. बालकृष्ण राय

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

ए-24-25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–62,

नोएडा-201309 (उ०प्र०)

Website: www.nios.ac.in, Toll Free No. 18001809393

विषय-सूची

1.	प्रस्तावना तथा शिक्षार्थी मार्गदर्शिका के उद्देश्य	i–v
2.	पाठों की विशेषताएँ	1–68
3.	प्रश्न-पत्र का प्रारूप	69–71
4.	नमूना प्रश्न-पत्र	72–77
5.	नमूना प्रश्न-पत्र के उत्तर	78–82

सलाहकार-समिति

डॉ. सितांशु शेखर जेना
अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

डॉ. कुलदीप अग्रवाल
निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

संपादक-मंडल

श्री अजय बिसारिया
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

डॉ. इंद्रसेन शर्मा
सेवानिवृत्त रीडर
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

डॉ. सुरेश पंत
सेवानिवृत्त उप-प्राचार्य
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. वेद प्रकाश
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

डॉ. रचना भाटिया
सह-निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

डॉ. बालकृष्ण राय
शैक्षिक अधिकारी (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

पाठ-लेखक

श्री अंशुमन ऋषि
प्राध्यापक, हिंदी
कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल,
अशोक विहार, दिल्ली

श्री अजय बिसारिया
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़

डॉ. वेद प्रकाश
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़

श्रीमती किरण गुप्ता
सेवानिवृत्त प्राध्यापिका
केंद्रीय विद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. प्रेम तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफ़ेसर
दयाल सिंह कॉलेज, नई दिल्ली

डॉ. जगदेव शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
लाल बहादुर शास्त्री
संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम समन्वयकर्ता

डॉ. बालकृष्ण राय
शैक्षिक अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

डी.टी.पी. कार्य

शिवम् ग्राफिक्स
431, ऋषि नगर, रानी बाग, दिल्ली-110034

निदेशक की कलम से

प्रिय शिक्षार्थी,

सप्रेम!

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान मुक्त शिक्षा प्रणाली द्वारा देशभर में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने में कटिबद्ध है। स्व अध्ययन सामग्री के माध्यम से आपको अपनी भाषा में विषय को समझने में सहूलियत होगी। माध्यमिक स्तर पर सभी विषयों को व्यापक तथा स्पष्ट रूप में तैयार किया गया है।

ऐसा महसूस किया गया कि कभी-कभी शिक्षार्थी स्व अध्ययन सामग्री को पढ़ने के बाद उसे याद रखने में असमर्थ होते हैं इसलिए उन्हें सुविधा प्रदान करने के लिए शिक्षार्थी मार्गदर्शिका बनाई गई है। इससे न केवल विषय की पुनरावृत्ति में लाभ मिलेगा बल्कि विषय को और स्पष्ट रूप में समझने में मदद मिलेगी।

आपके उज्ज्वल एवं सुखद भविष्य की कामना करता हूँ।

(डॉ. कुलदीप अग्रवाल)
निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

प्रस्तावना

अनोखी शिक्षा प्रणाली

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में अधिगम पद्धति भिन्न है। यहाँ सीखने की प्राथमिक जिम्मेदारी आपकी ही है। यहाँ एक से अधिक विधियों का प्रयोग कर स्व-अध्ययन पर अधिक बल दिया गया है। हम इस संस्थान में पाठ्य पुस्तकों, ऑडियो और वीडियो कार्यक्रमों के स्थान पर स्व-अध्ययन सामग्री का प्रयोग करते हैं। संपर्क कक्षाओं में हम दूरदर्शन और रेडियो आदि जैसे साधनों का प्रयोग करते हैं।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में आपको आज़ादी है कि आप:

- जो चाहें
- जब चाहें
- जहाँ चाहें
- जैसे चाहें
- पढ़ाई कर सकते हैं।

दूसरे शब्दों में यहाँ पढ़ाई का सिलसिला आपके यानी 'शिक्षार्थी' के हिसाब से चलता है। आपको काफी छूट दी गई है। और यह आप पर निर्भर है कि आप कितनी अच्छी तरह इस आजादी का लाभ उठाते हैं। मुक्त शिक्षा की अन्य संस्थाओं की तरह राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान भी निम्नलिखित सुविधाएँ देकर आपकी मदद करता है:

- सीखने के अवसर
- अपने आप पढ़ने की यानी स्वत: शिक्षण सामग्री, और
- पढ़ाई में आपकी प्रगति की जानकारी यानी फीड बैक।

आपकी शिक्षण सामग्री में विशेष रूप से तैयार की गई स्वयं पढ़ी जा सकने वाली छपी हुई सामग्री तथा श्रव्य एवं दृश्य कार्यक्रम शामिल हैं। यह शिक्षण सामग्री विषयों के विशेषज्ञों द्वारा तैयार की जाती है। इन पाठों को प्रभावकारी और अच्छी तरह समझ में आ सकने लायक बनाने के लिए ये महीनों काम करते हैं। ये पाठ सरल और अनौपचारिक शैली में लिखे जाते हैं, इनमें पाठ के उद्देश्य एकदम स्पष्ट किए जाते हैं, ताकि पाठ के शुरू में ही आपको मालूम हो जाए कि पाठ के अंत तक आप क्या कुछ सीख लेंगे। पाठ का लेखक आपको अलग-अलग चरण में सारी बातें समझाता चलता है। ये चरण (या हिस्सा) इस प्रकार विभाजित किए जाते हैं कि एक हिस्सा पढ़ लेने के बाद अगला हिस्सा समझने में आसानी हो जाती है। यदि आपको पहले का कोई हिस्सा अच्छी तरह समझ में न आ रहा हो, तो उसे दुबारा पढ़िए। पाठ के भीतर ही कुछ क्रियाएं शामिल रहती हैं, ताकि आप निष्क्रिय पाठक न रहें। बहुत से स्व-मूल्यांकन के प्रश्न (पाठगत प्रश्न) होते हैं, जिससे हिस्से में या समूचे पाठ के अंत में आपको अपनी प्रगति का पता चल सकता है।

आपकी ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं?

मुक्त शिक्षण संस्था होने के नाते इस संस्थान में अपनी पढ़ाई की योजना खुद बनाने की आपको काफी आज़ादी है। इसका मतलब है कि कई तरह से आप खुद अपने काम के जिम्मेदार हैं। हालाँकि आपको अपनी पढ़ाई बेहतर ढंग से चलाने में हम मदद देते हैं, किन्तु इस प्रणाली में जो आज़ादी व छूट मिली हुई है उसका लाभ उठाने की जिम्मेदारी आपकी है। आपको अपने विषयों का चयन सावधानी से करना है, पढ़ाई अपनी रफ्तार से करनी है जिसके लिए आपको अपना कार्यक्रम तय करना होगा, अनुशिक्षक अंकित मूल्यांकन कार्य पूरा करने के लिए समयबद्ध योजना बनानी होगी तथा यह भी तय करना होगा कि किस विषय की आपको पहले तैयारी करनी है। आप चूँकि अपनी गति से अपनी पढ़ाई कर रहे हैं, अत: दूसरों से कोई होड़ नहीं है। परन्तु अपनी पढ़ाई के लिए आप खुद ज़िम्मेदार हैं।

स्वत:- शिक्षण सामग्री के प्रमुख लाभ क्या हैं

- इसका पहला लाभ तो यह है कि आप शिक्षण सामग्री का अध्ययन अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी समय और स्थान पर तथा अपनी ही गति

से कर सकते हैं। आपको पूरी आजादी दी गई है कि आप जहाँ और जैसे चाहें पढ़ सकते हैं जबकि सामान्य विद्यालयों में आपकी पढ़ाई के बारे में अध्यापक फैसला करते हैं। स्वत: शिक्षण सामग्री के कारण आप खुद यह फैसला करते हैं कि आपको कब, कहाँ और कितनी गति से पढ़ाई करनी है। क्या आपने महसूस किया है कि ऐसा करने का अवसर मिलने से आप स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकने वाले व्यक्ति बन रहे हैं। आप सचमुच ऐसे ही बनते हैं? और जीवन में यह बहुत बड़ी बात है।

- स्वत: शिक्षण सामग्री इस ढंग से लिखी जाती है कि उसे समझने के लिए दूसरों की मदद की जरूरत न पड़े। फिर भी ऐसे अवसर आएँगे, जब आपको कुछ नियत कार्य पूरे करने होंगे। इनमें प्रयोगशाला में कोई परीक्षण, लोगों के साक्षात्कार लेना आदि शामिल हो सकते हैं। इन कामों से आपकी समझ और गहरी बनेगी। शिक्षण सामग्री में आपको अतिरिक्त पाठ्य सामग्री के बारे में भी सुझाव दिए जाएँगे, जिससे आपको अपना ज्ञान बढ़ाने में सहायता मिलेगी।
- अब तक आप जान चुके होंगे कि स्वत: शिक्षण सामग्री की एक निश्चित संरचना होती है। परन्तु इस संरचना से आपको यह अवसर मिलता है कि आप शिक्षण सामग्री को स्पष्ट एवं निश्चित ढंग से एक-एक चरण में समझते जाएँ। यही नहीं आप अपनी जाँच-परख भी कर सकते हैं, जिससे यह सुनिश्चित हो जाए कि जो कुछ आपने पढ़ा है, उसे समझ भी रहे हैं। इससे आपको आत्म-मूल्यांकन का अवसर मिलता है, जो जीवन का एक और महत्वपूर्ण पहलू है।

स्वत: शिक्षण सामग्री का उपयोग कैसे किया जाए

हम थोड़ी देर के लिए यह कल्पना करें कि तब क्या होगा, जब...

(क) आप शिक्षण सामग्री के किसी अंश अथवा हिस्से को बिना पढ़े छोड़ दें।

(ख) आप पाठ में दिए गए किसी भी अभ्यास को न करें और केवल सामग्री को पढ़ लें।

(ग) आप सामग्री को सरसरी तौर पर पढ़ते हैं और फिर से प्रारंभ से पढ़ने लगते हैं।

(घ) आप केवल सारांश पढ़कर यह पता लेते हैं कि पाठ में क्या बताया गया है।

इन वजहों से आप कई बातें नहीं सीख पायेंगे। नीचे दिए गए कार्य बिंदु का पालन कर आप अच्छी तरह सीख सकते हैं–

मद	आपके कार्य-बिन्दु
उद्देश्य	• प्रत्येक उद्देश्य को ध्यान से पढ़िए और यह तय कीजिए कि आपसे क्या कुछ करने की अपेक्षा है। इस अपेक्षा को अपने भीतर उतार लीजिए। • आवश्यक लगे तो इन उद्देश्यों को अपनी भाषा तथा शैली में फिर से लिखिए या बोलिए।
भूमिका	• इसे एक बार ध्यान से पढ़िए। आपको झलक मिल जाएगी कि आप क्या सीखने वाले हैं। • भूमिका पढ़कर आप आगे अध्ययन करने के लिए तैयार हो जाते हैं। • जरूरी लगे तो उसे दुबारा पढ़िए।
शिक्षण अनुभव	• एक बार पाठ को सरसरी तौर पर पढ़ डालिए। इससे आपको पाठ का परिचय मिल जाएगा। • एक शीर्षक अथवा उप-शीर्षक के अंतर्गत दिए गए अनुभाग को एक बार ध्यान से पढ़िए। थोड़ी देर सोचकर देखिए। यदि आपको लगता है कि आपकी समझ में आ रहा है, तो पाठगत प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कीजिए। यदि आपको ऐसा कर पाने में संदेह लगे, तो अंश को एक बार पुन: पढ़िए।

अत: सीखने का सारा दारोमदार आपके अपने ऊपर है। स्वत: शिक्षण सामग्री की संरचना ऐसी है, जो आपको इस योग्य बनाती है कि आप यह निश्चित व्यवस्था कर सकें कि आप वास्तव में सीख रहे हैं।

अत: किसी भी स्वत: शिक्षण सामग्री का लाभ उठाने

के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि आप नियोजित ढंग से पढ़ें, अभ्यास करें तथा नियत कार्यों को पूरा करें।

परन्तु स्वत: शिक्षण सामग्री कितने ही श्रेष्ठ ढंग से तैयार क्यों न की गई हो, उसका सर्वाधिक सदुपयोग आपकी **पढ़ने-समझने की क्षमताओं** पर निर्भर है।

व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम

व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें शिक्षण के बारे में अपने अनुभव बाँटने, समस्याओं को हल करने तथा शिक्षण के काम में आ रही रुकावटों को दूर करने के लिए आप एक जगह इकट्ठे होते हैं। कक्षा में तथा उसके बाहर आमने-सामने विचार-विनियम होता है। यह जानना जरूरी है कि इस अवसर का लाभ कैसे उठाया जा सकता है। परन्तु उससे पहले हम आपको यह बताना चाहेंगे कि ये कार्यक्रम शनिवार, रविवार/अन्य छुट्टियों तथा दूसरे सुविधाजनक दिनों में आयोजित किए जाते हैं, ताकि आप उनमें आसानी से भाग ले सकें। इनके समय तथा गतिविधियों का निर्णय अध्ययन केंद्रों द्वारा किया जाता हैं। हालांकि आपके लिए इन कार्यक्रमों में उपस्थित रहना अनिवार्य नहीं है, परन्तु इनमें भाग लेने से आपको बहुत फायदा हो सकता है। ऐसा क्यों है?

व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों का आयोजन अध्ययन केंद्रों द्वारा किया जाता है। व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम के मुख्य कार्यकलाप इस प्रकार हैं :

(क) आपकी समस्याओं का समाधान

(ख) अन्य विद्यार्थियों से मिलना

(ग) अध्यापक से मार्गदर्शन लेना

(घ) नियत कार्य पर फीड बैक लेना

(च) आडियो एवं वीडियो कार्यक्रमों के माध्यम से सीखना

(छ) प्रयोग-कार्य करना

(ज) परीक्षा की तैयारी करना

(झ) परामर्श के द्वारा निर्णय लेना

व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम आपका अपना कार्यक्रम है। इसकी सफलता काफी हद तक आप पर निर्भर है। जितना अधिक आप इसमें भाग लेंगे, उतना अधिक यह सफल होगा। आपके विचार-विनियम करने से आपके अध्यापक भी और प्रोत्साहित व प्रेरित होंगे। अध्ययन केंद्र में उपलब्ध सुविधाओं का पूरा इस्तेमाल कीजिए। अपनी अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम की कक्षाओं को मत छोड़िए। सामग्री प्राप्त करने का काम खाली समय में कीजिए।

आप आडियो कैसेट कैसे इस्तेमाल करेंगे

हिंदी पाठ्यक्रम में अध्ययन सामग्री के भाग के रूप में आपको कुछ आडियो कैसेट दिये जाएंगे। श्रव्य कार्यक्रम में

- कहानी
- कविता, और
- परिचर्चा होती है।

आडियो कैसेटों का इस्तेमाल करने के चरण

(क) कैसेट को प्रारम्भ से ही चलाइए। आप उसमें नाटक रूप में प्रस्तुत की गई कहानी सुनेंगे। उसे ध्यान से सुनिए। कहानी के अंत में अध्यापक आप से कुछ अभ्यास करने को कहेगा। इन अभ्यासों को लिख लीजिए और कैसेट रोक दीजिए। अब उन अभ्यासों को पूरा कीजिए। यदि आपको उत्तर लिखने में कठिनाई हो तो कैसेट को पीछे चलाकर कहानी दुबारा सुनिए तथा अभ्यास पूरे कीजिए।

अभ्यास पूरे हो जाने पर कार्यक्रम को दुबारा सुनिए तथा अपने उत्तरों की जाँच लीजिए। यदि आप संतुष्ट हो जाएँ तो कैसेट को आगे चलाइए।

(ख) इसके बाद आप कठिता पाठ या गायन सुनेंगे। पाठ समाप्त होने पर आपको कुछ अभ्यास पूरे करने होंगे। इसमें भी वही पद्धति अपनाइए, जो आपने कहानी के मामले में अपनाई थी। जब आपके सभी दत्त कार्य तथा अभ्यास पूरे ही जाएँ और आप अपने काम से संतुष्ट हो जाएँ, तो कैसेट और आगे चलाइए।

(ग) अब आप एक परिचर्चा सुनेंगे। इसमें भी वही कीजिए जो अपने कहानी और कविता के मामले में किया था।

परन्तु क्या आपके पास कैसेट प्लेयर है? यदि आपके पास कैसेट प्लेयर है तब तो कोई समस्या ही नहीं है। यदि आपके पास अपना कैसेट प्लेयर नहीं है, तो आप किसी दोस्त का कैसेट प्लेयर इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि यह भी संभव नहीं है तो आप अपने अध्ययन केंद्र में पता कीजिए। वहाँ कैसेट प्लेयर हो सकता है। यदि वहाँ हो, तो उसी से काम चलाइए।

वीडियो कैसेट का अच्छी तरह इस्तेमाल कैसे किया जाए

अब हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि शिक्षण की अपनी क्षमता बढ़ाने के लिए वीडियो कैसेट का कैसे इस्तेमाल किया जाना चाहिए। वीडियो कार्यक्रम को सामूहिक अथवा व्यक्तिगत रूप से घर पर या अध्ययन केंद्र में देखा जा सकता है। सामूहिक रूप से देखने के कुछ फायदे हैं। वीडियो देखने के बाद उसमें बताए गए सिद्धांतों तथा उदाहरणों पर आप अपने मित्रों व सहपाठियों के साथ विचार-विमर्श कर सकते हैं। इससे मित्रों के साथ आप अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। इससे आपको अध्ययन केंद्र के अध्यापकों व मित्रों से अपनी शंकाओं का समाधान करने में भी मदद मिलेगी। इस तरह की बातचीत से आप अपने सहपाठियों के विचार एवं दृष्टिकोण भी जान सकेंगे। इससे आपको अपने दृष्टिकोण तथा विचार को ओर स्पष्ट एवं पक्का बनाने में सहायता मिलेगी। इसके साथ-साथ आप दूसरों की शंकाएँ दूर करने में भी सहायक हो सकेंगे। इसका एक लाभ यह होगा कि अध्ययन केंद्र तथा उसके बाहर अपने सहपाठियों के साथ आपके स्वस्थ संबंध विकसित होंगे।

इस संस्थान ने 'मुक्त विद्या वाणी' के माध्यम से पढ़ने की सुविधा शुरू की है। इसके अंतर्गत आप इंटरनेट के माध्यम से अपने कंप्यूटर पर विभिन्न विषयों के कार्यक्रम सुन सकते हैं। इस संबंध में अधिक जानकारी हमारी वेबसाइट पर देख सकते हैं।

परीक्षा की तैयारी कैसे करें

प्रश्न-पत्र को अपना मित्र बनाएं

आखिर यह प्रश्न-पत्र है क्या?

यह कोई राक्षस नहीं है जो हमें खा जाएगा। हाँ, आप चाहें तो खुद एक प्रश्न-पत्र बना सकते हैं। किसी भी अध्याय में आपको कुछ बातें सीखनी होती हैं। जब आपका अध्यापक यह जानना चाहता है कि आपने कहां तक सीखा है, तो वह प्रश्न-पत्र बन जाता है। बस यही बात है।

अपनी शिक्षण सामग्री के किसी भी अध्याय का पहला पन्ना खोलिए। 'भूमिका' के तुरन्त बाद वहाँ लिखा होगा।

उद्देश्य

हमारा शिक्षण मोटे तौर पर निम्नलिखित तीन उद्देश्यों में बाँटा जा सकता है :

1. विषयों के बारे में हमारा ज्ञान
2. संकल्पनाओं का हमारा बोध
3. ज्ञान का अनुप्रयोग।

प्रश्नों के प्रकार

आम तौर पर हमारी परीक्षाओं में पूछे जाने वाले प्रश्नों को चार प्रकारों में वर्गीकरण किया जा सकता है :

1. वस्तुनिष्ठ (आब्जेकटिक)
2. अति लघु उत्तर
3. लघु उत्तर
4. निबन्धात्मक

वस्तुनिष्ठ प्रकार में आपको उत्तर लिखना या वर्णित नहीं करना होता। दिए गये अनेक उत्तरों में से आपको केवल सही उत्तर का चयन करना होता है। आपकी अध्ययन सामग्री के अधिकतर पाठगत प्रश्न इसी वर्ग के हैं। अत लघु उत्तर प्रकार के उत्तर एक वाक्य में देने होंगौ लघुत्तरीय प्रश्नों के उत्तर 50-70 शब्दों में लिखने पड़ते है। निबंधात्मक प्रश्नों में आपको अनेक उदाहरण देते हुए विस्तुत तथा व्यवस्थित उत्तर लिखना होता है। इसमें 6-7 या उससे भी अधिक पैरे लिखे जा सकते हैं।

समय को व्यवस्थित कीजिए

परीक्षा में दिया गया समय प्रश्न-पत्र पूरा करने के लिये लगभग पर्याप्त ही होता है। इसलिए समय बिल्कुल बर्बाद मत कीजिए, नहीं तो कुछ प्रश्नों के उत्तर आप नहीं लिख पाएँगे और अंकों से हाथ धो बैठेंगे।

केवल वही लिखिए जो पूछा गया है। अनावश्यक विस्तार में मत जाइए। यह धारणा एकदम गलत है कि प्रश्न-पत्र जाँचने वाला उत्तर की लम्बाई देखकर अंक देता है।

अपने उत्तर तेज गति से लिखिए किन्तु आपकी लिखावट पढ़ने लायक होनी चाहिये। तेज़ी से साफ-सुथरा लिखने का पहले से अभ्यास करते रहिए। यदि आपका लिखा पढ़ा नहीं जा सकता, तो आपके अंकों में कमी हो सकती है।

प्रश्न का उत्तर अपनी भाषा में लिखिए, किसी गाइड या पाठ से याद किए गए पैरे के पैरे मत लिखते जाइए। सरल वाक्यों का प्रयोग कीजिए। नई सूचना या नया विषय शुरू करते समय नया पैरा शुरू कीजिए। कुछ विद्यार्थी मुख्य शीर्षकों को रेखांकित करते हैं तथा उत्तर के दोनों और हाशिया छोड़ते हैं। यह उत्तर-पुस्तिका जांचने वालों पर अच्छा प्रभाव डालने का बढ़िया तरीका है।

सभी सामान्य निर्देशों को बड़े ध्यान से पढ़िए। उन्हें दो बार पढ़िए, ताकि वे अच्छी तरह आपकी समझ में आ जाएँ। इन निर्देशों के अनुसार ही प्रश्न-पत्र हल कीजिए, अन्यथा उत्तर लिखने में आप गलतियां कर सकते हैं।

प्रश्नों का चयन ध्यान से कीजिए

यदि कुछ प्रश्नों के लिए चयन करने की छूट दी गई हो, तो जितने प्रश्नों के उत्तर देने को कहा गया हो, उतने के ही उत्तर लिखिए। उसी प्रश्न को चुनिए, जिसका उत्तर आप अच्छी तरह दे सकते हैं। सभी विकल्पों के उत्तर मत लिख डालिए। जाँचकर्ता बहुत होशियार होता है और उसे आप धोखा नहीं दे सकते। परन्तु हो सकता है कि इस चक्कर में आप अपने कुछ अंक गंवा बैठे क्योंकि जांचकर्ता उतने ही प्रश्नों पर अंक देगा, जितने आपको हल करने हों और संभव है कि जिस उत्तर पर उसने अंक नहीं दिए, वह आपका बेहतर उत्तर हो।

आपको किसी भी प्रश्न का उत्तर आगे-पीछे लिखने की छूट है, परन्तु जिस प्रश्न का उत्तर आप लिख रहे हैं, पर्चे के बाएँ हाशिये पर उसकी ओर के उसके भाग (यदि हो तो) की संख्या साफ-साफ लिखें। इससे जांचकर्ता को उसकी पहचान करने में सुविधा होगी। जिन प्रश्नों के बारे में आपकी बेहतर तैयार है, उनके उत्तर पहले लिखने चाहिए। परन्तु याद रखिए आपको वही लिखना है, जो पूछा गया। किसी प्रश्न का उत्तर लिखते हुए सिर्फ इसलिए अनावश्यक बातें मत लिखते जाइए कि आपको उसकी जानकारी है। इससे जांचकर्ता पर कोई अच्छा असर नहीं पड़ेगा, बल्कि आपका समय व्यर्थ जाएगा और इस प्रक्रम में आपके कुछ प्रश्न छूट सकते हैं।

शिक्षार्थी मार्गदर्शिका के लाभ

अभी आपको विस्तार से मुक्त शिक्षा प्रणाली की विशेषताएँ बताई गईं और आप अधिक-से-अधिक कैसे सीखें, इस पर भी व्यापक सुझाव दिए गए। यदि आप दिए गए सुझावों का पालन करते हैं तो निश्चय ही सफलता मिलेगी। स्व-अध्ययन सामग्री पढ़ने के बाद पुनरावृत्ति की अत्यधिक आवश्यकता होती है। साथ ही विषय को संक्षेप में समझकर याद रखना आसान होता है। अत: निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षार्थी मार्गदर्शिका तैयार की गई है :-

- शिक्षार्थी को पाठ्य सामग्री पढ़ने तथा दोहराने में सहायक होना;
- पाठ्य सामग्री में दिए गए विषयों को परिपुष्ट करना;
- शिक्षार्थी को परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन के लिए उत्साहित करना तथा उसमें सहायक होना;
- शिक्षार्थी को पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़कर देखने की क्षमता प्रदान करना;
- दूसरे स्रोतों से और अधिक सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना;
- महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं तथा सूचना बिन्दुओं को सुस्पष्ट करना।

शिक्षार्थी मार्गदर्शिका को पढ़कर विषय को बेहतर ढंग से याद करने की चेष्टा करें।

1

बहादुर

(कहानी)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• किस्सा/कहानी	गद्य (वाचक के द्वारा कही गई कहानी) • व्यक्तिचित्र	• तत्सम, तद्भव, देशज और आगत शब्द-प्रयोग • मुहावरों का प्रयोग	• विपरीत परिस्थितियों में निर्णय/तर्कक्षमता • समानुभूति क्षमता • शब्दों के माध्यम से किसी परिचित का चित्रण

सारांश

बहादुर एक बारह-तेरह वर्ष के लड़के की कहानी है। बहादुर नेपाल और बिहार की सीमा में पड़ने वाले किसी गाँव का रहने वाला है। कहानी के आरंभ में वाचक उसका चित्रात्मक वर्णन करता है। बहादुर के पिता सेना में थे, उनकी मृत्यु हो चुकी है। बहादुर अपनी माँ का इकलौता सहारा है, पर उसका मन काम में नहीं लगता। वह बच्चा है, इसलिए बच्चों जैसी शरारतें करता है, इस पर उसकी माँ उसे पीटती है और वह घर से भाग जाता है। बहादुर को नौकर के रूप में वाचक का साला वाचक के घर लेकर आता है। वाचक का परिवार मध्यवर्गीय है। इस परिवार में वाचक की पत्नी निर्मला के अतिरिक्त इनका एक पुत्र किशोर और एक लड़की है। किशोर, बहादुर की उम्र के आसपास का ही है। मध्यवर्गीय परिवारों में बहुत-सी चीज़ें दिखावे के लिए लाई जाती हैं, इस परिवार में भी बहादुर दिखावे की चीज़ है। शुरू-शुरू में निर्मला उसे बड़े स्नेह से रखती है। बहादुर भी ख़ूब मेहनत से घर के काम हँसते-हँसते करता है। किशोर घर का बिगड़ैल लड़का है और वह बहादुर को मारता-पीटता है, साथ ही गालियाँ भी देता है। उसे वाचक और निर्मला में से कोई नहीं रोकता। आगे चलकर निर्मला भी पड़ोसिन के बहकावे में आकर बहादुर की रोटियाँ बनाना छोड़ देती है। एक दिन वाचक के एक रिश्तेदार का परिवार वाचक के घर आया और उसने बहादुर पर चोरी का झूठा आरोप लगा दिया, जबकि बहादुर बहुत ईमानदारी से काम कर रहा था। इस दिन वाचक और उसकी पत्नी—दोनों बहादुर को पीटते हैं। शाम को वाचक जब लौटकर घर आता है, तो देखता है कि अँगीठी अभी जली नहीं, आँगन गंदा पड़ा था। बर्तन बिना मले रखे हुए थे। वाचक की पत्नी उसे ख़बर देती है कि बहादुर भाग गया। इसके बाद पूरा परिवार बहादुर के प्रति अपने व्यवहार और उसे पीटने पर पछताता है।

मुख्य बिंदु

- जो कहानी सुनाता है और खुद कहानी का एक पात्र भी होता है, वह 'वाचक' कहलाता है।
- किसी भी व्यक्ति के व्यवहार के पीछे परिस्थितियों से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं। 'बहादुर' कहानी के प्रत्येक पात्र के व्यवहार के पीछे भी ऐसे ही कारण हैं।

- मध्यवर्गीय परिवारों में चीज़ों का महत्त्व ज़रूरत के कारण नहीं, प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए होता है। वाचक का परिवार भी ऐसा ही परिवार है। वह दूसरे परिवारों की नकल करते हुए नौकर रखता है।
- बहादुर संवेदनशील, ईमानदार, मेहनती, हँसमुख और स्वाभिमानी है। वाचक में मध्यवर्गीय व्यक्ति के गुण-दोष मिलते हैं।
- कहानी में संवादों का काम घटनाक्रम को आगे बढ़ाना, नाटकीयता का गुण उत्पन्न करना और चरित्रों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताना है। 'बहादुर' कहानी के संवादों में ये विशेषताएँ मिलती हैं।
- 'बहादुर' कहानी के पात्रों की भाषा-शैली से उनके भाव, परिस्थिति और व्यक्तित्व का पता लगता है।

आइए समझें

साहित्य की सबसे अधिक लोकप्रिय विधाओं में से एक कहानी है। कहानी में उद्देश्य के अतिरिक्त मुख्यतः पाँच तत्त्व होते हैं–कथावस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल या वातावरण और भाषा-शैली। 'बहादुर' कहानी की कथावस्तु एक मध्यवर्गीय परिवार और उसमें रहने वाले नौकर–बहादुर– पर आधारित है। इस कहानी में मुख्य पात्र बहादुर, वाचक, निर्मला और किशोर हैं। साथ ही वाचक के रिश्तेदार के परिवार का भी वर्णन है। कहानी के संवाद पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताते हैं। इनमें व्यंग्य और नाटकीयता है। कहानी की भाषा पात्रों के अनुकूल; तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्दों और मुहावरों से युक्त है।

कहानी का उद्देश्य बहादुर जैसे लोगों के प्रति समानुभूति उत्पन्न करना है।

यह जानना ज़रूरी है

- समानुभूति का अर्थ है–दूसरों को भी अपने जैसा ही मानना, दूसरों का सुख-दुख अपने सुख-दुख जैसा लगना। समानुभूति के न होने पर व्यक्ति बहुत क्रूर हो सकता है। वाचक के परिवार और रिश्तेदारों द्वारा बहादुर के प्रति किए गए व्यवहार से इस क्रूरता का पता लगता है। समानुभूति के होने पर हम सामाजिक प्राणी बनते हैं।
- पछतावे का कारण यह होता है कि व्यक्ति सही समय पर उचित व्यवहार नहीं करता; जब समय हाथ से निकल जाता है, तो वह पछताता है।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

शब्द-भंडार

- **तत्सम :** जो शब्द संस्कृत के हैं और हिंदी में ज्यों-के-त्यों ले लिए गए हैं।

  उदाहरण–गंभीर, दायित्व, स्वच्छ, संतुष्टि, अनुमान आदि।
- **तद्भव :** जो शब्द संस्कृत के तो हैं, पर हिंदी में आकर जिनका रूप बदल गया है।

  उदाहरण–आँख, भाई, खेत, घर, आँसू आदि।
- **देशज :** जो शब्द लोक में उत्पन्न और प्रयुक्त होते हैं।

  उदाहरण–मलकाना, जून, चकइठ, तीता आदि।
- **आगत :** जो शब्द अन्य भाषाओं से आए हैं।

  उदाहरण–हिदायतें, फ़िक्र, तकलीफ़, बस, स्टेशन आदि।
- **मुहावरे :** चारपाई तोड़ना, हाथ बँटाना, माथा ठनकना, गुस्से से पागल हो जाना, नौ दो ग्यारह हो जाना, सीधे मुँह बात न करना आदि।

योग्यता बढ़ाएँ :

- कहानी का आरंभ जिस ढंग से किया गया है, वह पाठक में जिज्ञासा उत्पन्न करता है। यह कहानी विधा की मुख्य विशेषता है। आप भी यदि किसी कहानी को कहें, तो इस विशेषता का ध्यान रखें।

- शुरू में ही बहादुर का जिस प्रकार के शब्दों में चित्र खींचा गया है, वह पाठक को भी शब्दों के माध्यम से चित्रात्मक वर्णन के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार के चित्रण की विशेषता से युक्त साहित्य की एक विधा है, जिसे रेखाचित्र कहते हैं। कहना न होगा कि 'बहादुर' कहानी में रेखाचित्र विधा का उपयोग मिलता है।

- इस कहानी को पढ़ते समय बाल-श्रम जैसी कुरीति की तरफ़ भी हमारा ध्यान जाता है। बाल-श्रम के कारण असंख्य शिक्षार्थियों को शिक्षा नहीं मिल पाती। यह आज हमारे लिए चिंता का विषय है। इसीलिए बहादुर जैसे किशोरों को ध्यान में रखकर हमारे देश में बाल-श्रम विरोधी कानून बनाए गए हैं। मानवाधिकार आयोग भी बच्चों की तरफ़ ध्यान दे रहा है और उनके पढ़ने-लिखने के अधि कार के समर्थन में माँग उठाता है। बाल-मज़दूरों से ख़तरनाक काम करवाने वालों और उनके प्रति हिंसा करने वालों को दंडित किए जाने की भी व्यवस्था है। आज बाल-श्रम एक अपराध है।

कहानी का संप्रेष्य

'बहादुर' कहानी का संबंध वाचक के जीवन से है। इस कहानी की घटनाएँ वाचक के जीवन में घटी हैं। इसे कहने के ढंग से कहीं-न-कहीं वाचक के पछतावे का पता लगता है। यह पछतावा ऐसा पछतावा है, जो निरंतर बना रहता है। बहादुर आज वाचक के सामने कहीं नहीं है, वह अपने पछतावे को दूर नहीं कर सकता। वाचक का यह पछतावा हमें अनुभव कराता है कि मध्यवर्गीय परिवारों में मासूम नौकरों के प्रति किया जाने वाला व्यवहार बहुत क्रूर होता है। पाठक को भी यह क्रूरता बहुत बुरी लगती है। बहादुर पर हुए अत्याचार का बुरा लगना–यही तो इस कहानी का संप्रेष्य है। यह कहानी हमें भी इस बात के लिए तैयार करती है कि हम समाज में रहने वाले नौकरों या उन जैसे अनेक लोगों के प्रति समानुभूति रखें, उन्हें अपने जैसा ही मनुष्य समझें, उन पर अत्याचार न होने दें। ऐसा करने से उनके जीवन की दिशा बदल सकती है और समाज भी अनेक समस्याओं से बच सकता है।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- कहानी को ध्यान से पढ़िएं और पाठ में दिए गए क्रियाकलापों का अभ्यास कीजिए।
- कहानी के पात्रों के व्यवहार एवं उसके कारणों पर विशेष ध्यान दीजिए।
- कहानी के तत्त्वों के आधार पर कहानी को समझने और उसका विवेचन करने का प्रयास कीजिए।
- कहानी की भाषा-शैली पर भी ध्यान दीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. आप समानुभूति को समाज-निर्माण के लिए क्यों आवश्यक मानते हैं– उदाहरण देते हुए 20-25 शब्दों में उत्तर दीजिए।
2. 'बहादुर' के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएँ पाठ में बताई गई हैं। आपकी दृष्टि में उसके व्यक्तित्व में कौन-सी कमी है, जिससे उसका जीवन मुश्किलों से भरा है? तर्कसहित 20-25 शब्दों में लिखिए।
3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

'हाथ बढ़ाना' मुहावरे का अर्थ है–

(क) बहुत श्रम करना

(ख) सहायता करना

(ग) काम को बढ़ा देना

(घ) उत्साहित होना

4. आँख, गंभीर, तकलीफ़, मलकाना में से तत्सम शब्द चुनिए।

2

दोहे

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• दोहे, छंदयुक्त कविता	• काव्य • व्याख्या • सराहना	• दृष्टांत, अनुप्रास और अन्योक्ति अलंकार • भाषा अथवा बोली के मानक एवं स्थानीय रूप • हिंदी की उपभाषाओं के वर्ग	• व्यक्तित्व का परिष्कार • आत्मबोध • विश्लेषणात्मक चिंतन • समयानुकूल व्यवहार

मूलभाव

'दोहे' शीर्षक पाठ में कबीर, रहीम तथा वृंद के नीति या उपदेशपरक दोहे हैं। इनमें जीवन का गहरा अनुभव झलकता है। इनमें से चार दोहे कबीर के, दो रहीम के तथा दो दोहे वृंद के हैं। ये संत कवि कुछ उदाहरणों के माध्यम से हमें कुछ संदेश देना चाहते हैं।

शिष्य के निर्माण में गुरु की भूमिका। सदाचार पर बल

प्रथम दोहे में कवि ने बताया है कि आदमी की पहचान उसके घर-खानदान या धन से नहीं, आचरण से होती है। दूसरे दोहे में स्वभाव को निर्मल रखने के लिए निंदक को पास रखने की बात की गई है। तीसरे दोहे में गुरु को कुम्हार तथा शिष्य को घड़ा बताया गया है। शिष्य को निखारने के लिए गुरु उसके दोषों को दूर करता है। चौथे दोहे में कबीर कहते हैं कि यदि नाव में पानी भरने लगे और घर में पैसे की अधिकता होने लगे, तो दोनों हाथों से इन्हें बाहर निकाल देना चाहिए।

कभी-कभी ऐसी परिस्थितियाँ भी होती हैं, जब अज्ञानी लोगों का वर्चस्व होता है– ऐसी स्थिति में ज्ञानी लोग समझदारी का परिचय देते हैं और मौन रहते हैं। जीवन के अनुभव के आधार पर सही आचरण का उपदेश।

उदाहरण के साथ निरंतर प्रयासरत रहने का महत्त्व। आँखों द्वारा सब कुछ बता देने की बात।

रहीम कहते हैं कि पावस के आने पर कोयल मौन हो जाती है कि अब मेंढक वक्ता होंगे, हमें कौन पूछेगा? अगले दोहे में रहीम ने सात बातों का उल्लेख किया है। खैर यानी कत्था, ख़ून, खाँसी, ख़ुशी, वैर यानी दुश्मनी, प्रीति तथा नशीली वस्तुओं का सेवन– ये दबाने से नहीं दबतीं और सामने आ ही जाती हैं।

कवि वृंद कहते हैं कि निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानवान बन जाता है; ठीक वैसे ही, जैसे रस्सी के निरंतर आने-जाने से पत्थर पर उसका निशान बन जाता है। दूसरे दोहे में वे बताते हैं कि आँखें मनुष्य के हृदय के भावों को प्रकट कर देती हैं। उन्हें देखकर अपने प्रति दूसरे व्यक्ति के भावों को समझा जा सकता है।

मुख्य बिंदु

- श्रेष्ठ होने का आधार ऊँचे कुल में जन्म लेना नहीं, बल्कि ऊँचे कर्म या श्रेष्ठ आचरण का होना है। जो ऊँचे कुल में जन्म लेते हैं और जिनका आचरण अच्छा नहीं होता, उनकी संत जन निंदा करते हैं यानी वे निंदायोग्य ही हैं।
- ऐसे लोग दुर्लभ हैं, जो हमारे मुँह पर ही हमें हमारी कमियाँ बताएँ। ऐसे लोगों से दूर न भागकर उनका सामना करना चाहिए, क्योंकि ये लोग हमारी कमियों की ओर इशारा करके हमें यह अवसर देते हैं कि हम अपनी कमियों को दूर कर स्वयं को बुराइयों से मुक्त करें।
- प्रत्येक गुरु की रचना उसका शिष्य ही है, इसलिए गुरु अपने शिष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करते समय दो काम एक साथ करता है– एक, बाहर से उस पर चोट करता है, उसकी कमियाँ दूर करता है; दो, भीतर से उसे सहारा दिए रहता है।
- धन की आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता, पर आवश्यकता से अधिक धन अनेक प्रकार की बुराइयों की जड़ है। धन से उत्पन्न बुराइयाँ व्यक्ति को नष्ट कर देती हैं, इसलिए अनावश्यक धन से छुटकारा पाना चाहिए।
- कभी-कभी जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ भी आती हैं, जब अज्ञानियों और मूर्खों का समाज में महत्त्व बढ़ जाता है। वे बढ़-चढ़कर बोलने लगते हैं। यह स्थिति ज्ञानियों तथा समझदार लोगों के प्रतिकूल होती है। इस स्थिति में वे मौन साध लेते हैं और उस समय की प्रतीक्षा करते हैं, जब उन्हें बोलना चाहिए।
- जीवन में बहुत-सी बातों को मनुष्य छिपा लेता है, अर्थात् प्रकट नहीं होने देता। परंतु, सभी बातों को नहीं छिपाया जा सकता। कुछ बातें ऐसी हैं, जिन्हें लाख छिपाने का प्रयत्न करें, प्रकट हो ही जाती हैं। उदाहरणस्वरूप सात का उल्लेख कवि करता है, जो छिपती नहीं–कत्था, ख़ून, खाँसी, ख़ुशी, दुश्मनी, प्रेम और नशा।
- मूर्ख व्यक्ति भी चतुर और ज्ञानवान बन जाता है, यदि वह निरंतर प्रयास करता रहे। किसी भी काम में सफलता पाने के लिए अभ्यास करना ज़रूरी है।
- व्यक्ति की आँखें हृदय में विद्यमान हित या अहित के भाव को पूरी तरह से व्यक्त कर देती हैं। यानी आदमी की आँखों से उसके मन के भावों का पता लग जाता है, क्योंकि भाव के अनुसार आँखों की दशा भी अपने आप ही बदल जाती है।

आइए समझें

- जिस प्रकार शराब से भरे कलश को सज्जन निंदनीय समझते हैं, चाहे वह कलश सोने का ही क्यों न हों; उसी प्रकार ऊँचे कुल में जन्म लेने वाला दुराचारी व्यक्ति भी निदंनीय है। बात को कहने के लिए 'शराब से भरे सोने के कलश' का उदाहरण है, अतः दृष्टांत अलंकार है।
- पानी और साबुन मिलकर अनेक वस्तुओं का मैल दूर करके उन्हें निर्मल बना देते हैं। लेकिन पानी और साबुन किसी के स्वभाव या व्यक्तित्व को निर्मल नहीं कर सकते। इसके लिए तो कोई ऐसा व्यक्ति चाहिए, जो कमियाँ बता सके। ऐसे व्यक्ति की निंदा-आलोचना का सम्मान करना चाहिए।
- गुरु-शिष्य का संबंध कुम्हार और घड़े के संबंध के समान है। कुम्हार जब चाक पर गीली मिट्टी से घड़ा बनाता है, तो वह पहले तो मिट्टी के लोंदे को घड़े की आकृति देता है, फिर घड़े की आकृति को बाहर से धीरे-धीरे थपथपाते हुए सही आकार देता है, उसकी कमियों को दूर करता है। ऐसा करते हुए वह घड़े को भीतर से सँभाले भी रहता है, ताकि घड़ा ढह या टूट न जाए। इस प्रक्रिया से ही दोषरहित घड़ा तैयार होता है। इसी प्रकार गुरु भी शिष्य को सँभालते हुए उसे दोषरहित बनाता है, उसका व्यक्तित्व-निर्माण करता है। यहाँ कुम्हार और घड़े का उदाहरण होने से दृष्टांत अलंकार है।
- यदि नाव में पानी भरने लगे, तो समझदारी इसी में है कि उसे डूबने से बचाया जाए। डूबने से

बचाने का तरीका है–दोनों हाथों से उस पानी को नाव के बाहर उलीचना या फेंकना। अनावश्यक धन के साथ भी यही व्यवहार करना चाहिए, उसे भी अंजुरी भर-भर कर बाहर कर देना चाहिए अर्थात् दान कर देना चाहिए।

- वर्षा ऋतु आने पर मेंढकों की संख्या बढ़ जाती है, उनका शोर भी बढ़ जाता है। ऐसे में कोयल यह विचार करके मौन धारण कर लेती है कि यह मेंढकों के ही बढ़-चढ़कर बोलने का समय है। समझदार एवं विचारवान लोग समयानुसार ही व्यवहार करते हैं।
- कभी-कभी लोग यह समझकर अनुचित आचरण करते हैं कि प्रत्येक बात को छिपाया जा सकता है। यदि उन्हें यह समझा दिया जाए कि यह संभव नहीं, कुछ चीज़ें ऐसी भी होती हैं, जो प्रकट हो ही जाती हैं; तो उनका आचरण बदल सकता है।
- पत्थर बहुत कठोर होता है। लगता है कि उसकी कठोरता पर किसी चीज़ का असर ही नहीं होगा, पर रस्सी जैसी चीज़ भी यदि पत्थर पर रगड़ खाती रहे, तो निशान बना ही देती है। यह उदाहरण हमें शिक्षा देता है कि मूर्ख व्यक्ति भी सदैव मूर्ख ही नहीं रहता, यदि वह निरंतर अभ्यास में लगा रहे।
- जिस प्रकार स्वच्छ दर्पण सामने आने वाली प्रत्येक वस्तु को हू-ब-हू दिखा देता है, वैसे ही हमारी आँखें भी मन के अच्छे-बुरे भावों को साफ़-साफ़ बता देती हैं।

यह जानना ज़रूरी है

- मनुष्य के बारे में अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए कबीर ने प्रथम दोहे में सोने के कलश का उदाहरण दिया है।
- जिस प्रकार शरीर को स्वच्छ रखने के लिए साबुन-पानी का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार व्यवहार में बदलाव के लिए निदंक व्यक्ति की आवश्यकता होती है।
- गुरु का व्यवहार ऊपर से कठोर तथा अंदर से स्नेहपूर्ण होता है। वह शिष्य को ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि समाज और दुनिया के लिए बेहतर बनाता है।
- मेंढक सिर्फ़ वर्षा ऋतु में टर्राता है, वर्षा के बाद उसका बोलना बंद हो जाता है। अत: विद्वान व्यक्ति को शोर में चुप रहकर समय का इंतज़ार करना चाहिए।
- जिस प्रकार कत्थे और ख़ून का दाग नहीं छिपता; खाँसी को नहीं दबाया जा सकता; ख़ुशी और प्रेम प्रकट हो जाते हैं; उसी प्रकार दुश्मनी और नशा भी प्रकट हो जाते हैं, उन्हें छिपाया नहीं जा सकता। जीवन-व्यवहार में इस बात को सदैव ध्यान में रखना चाहिए।
- जीवन के सभी क्षेत्रों में अभ्यास का अपना महत्त्व है। अत: बार-बार अभ्यास कर कठिन कार्यों को आसान बनाया जा सकता है। शरीर के बहुत से अंगों पर हमारा वश नहीं चलता। आँखें भी इन्हीं में से एक हैं। आंतरिक भावों का पता आँखों से लग जाता है।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण.बिंदु

- जब किसी बात को समझाने के लिए जीवन-जगत के किसी दूसरे व्यवहार को उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे दृष्टांत कहते हैं। दोहा–1 में दृष्टांत अलंकार है।
- 'निंदक-नियरे' में 'न' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।
- जहाँ साधारण तौर पर एक बात कही जाए, पर उसका अर्थ बिल्कुल भिन्न या अप्रत्यक्ष निकलता हो, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। दोहा–5 में अन्योक्ति अलंकार है।
- 'खैर, ख़ून.....' में अनुप्रास अलंकार है।
- 'अब दादुर बक्ता भये' में व्यंजना का सौंदर्य।
- मानक भाषा : जो पूरे भाषा क्षेत्र में एक जैसी हो।

- बोली जाने वाली भाषा के दो रूप–मानक और स्थानीय।
- हिंदी की उपभाषाएँ : (क) पश्चिमी हिंदी–खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रज, बुंदेली और कन्नौजी (ख) पूर्वी हिंदी–अवधी, छत्तीसगढ़ी और बघेली (ग) बिहारी–भोजपुरी, मगही और मैथिली (घ) राजस्थानी–मेवाती, जयपुरी, मालवी और मारवाड़ी (ङ) पहाड़ी–कुमाउँनी, गढ़वाली आदि।

  ('मैथिली' को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वतंत्र भाषा का दर्जा मिल गया है)

सराहना पक्ष

कबीर, रहीम तथा वृंद ने जीवनानुभव के आधार पर 'नीति' और 'उपदेश' का काव्य रचा है। सामान्य रूप में उपदेश रूखे एवं नीरस माने जाते हैं, लेकिन इन कवियों ने उपदेशों को भी सरस एवं रोचक बना दिया है। इसका कारण सामान्य जन की भाषा का उपयोग, जीवन के जाने-पहचाने दृष्टांत, अपने अनुभव और कथनी-करनी में अंतर का न होना है। इस विशेषता के कारण भारतीय जनता पर इन कवियों का बड़ा गहरा असर है।

दोहा छंद

- दो-दो चरणों चरणों वाली दो पंक्तियाँ
- 13, 11; 13, 11 मात्राओं वाले चार चरण
- दूसरे और चौथे चरण के अंत में गुरु के पश्चात् लघु मात्रा (S1)
- दूसरे और चौथे चरण में तुक।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- दोहों को सही तरीके से पढ़कर उनका भावार्थ लिखने का अभ्यास कीजिए।
- भावार्थ के साथ अन्य अर्थ तथा सराहना-संबंधी अर्थों को समझिए।
- दोहों में आए दृष्टांतों की आवश्यकता को समझिए।
- दोहों से संबंधित प्रश्नों पर विचार करके उन प्रश्नों को हल करने का अभ्यास कीजिए।
- दोहों की भाषा की विशेषताओं पर ध्यान दीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. कबीर के दोहे में प्रयुक्त 'स्वर्ण-कलश' के दृष्टांत के औचित्य पर 20-25 शब्दों में टिप्पणी लिखिए।
2. रहीम के दोहों में उचित आचरण की आवश्यकता को किस प्रकार महत्त्व दिया गया है– 20-25 शब्दों में लिखिए।
3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   वृंद के दोहे में भला-बुरा बता देने का काम करते हैं–

   (क) सुजान और नैन

   (ख) नैन और निरमल आरसी

   (ग) निरमल आरसी और सुजान

   (घ) हृदय और नैन

3

गिल्लू

(रेखाचित्र)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• किसी व्यक्ति या मनुष्येतर प्राणी का वर्णन	• गद्य • रेखाचित्र	• तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्द-प्रयोग • उपसर्ग, प्रत्यय • स्त्रीलिंग, पुल्लिंग	• संवेदनशीलता • समानुभूति • पर्यावरण-संरक्षण • स्मृति के आधार पर वर्णन

सारांश

इस रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने एक छोटे-से जीव गिलहरी के साथ जुड़ी अपनी यादों का उल्लेख किया है। कौवों की चोंच के प्रहार से घायल गिल्लू उन्हें अपने घर के आँगन में मिला। काफ़ी उपचार व देखभाल करके उन्होंने गिल्लू को पूरी तरह स्वस्थ कर लिया। धीरे-धीरे दोनों में आत्मीय संबंध बनते चले गए। गिल्लू हमेशा लेखिका के आसपास ही रहा करता था। वह अक्सर अपनी शरारतों द्वारा लेखिका का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करता रहता था। लेखिका को जब गिल्लू की हरकतों से यह अनुभव हुआ कि उसे अपने साथियों के साथ उछल-कूद करने जाने के लिए आज़ाद किया जाना चाहिए, तो उन्होंने खिड़की की जाली का कोना खोल दिया। गिल्लू दिन-भर बाहर घूमता और लेखिका के घर आते ही घर में वापस आ जाता। लेखिका जब अस्वस्थ होने के कारण अस्पताल में रही, गिल्लू घर पर बहुत उदास रहता। अपना मनपसंद भोजन काजू भी नहीं खाता। लेखिका जब घर वापस आई, तो उसके सिरहाने बैठकर उसके बालों को ऐसे सहलाता, मानो कोई सेविका देखभाल कर रही हो। गिलहरी की आयु दो वर्ष की होती है। गिल्लू अपने अंतिम समय में अपनी डलिया से उतरकर महादेवी के पास आ गया। महादेवी ने उसे अपनी हथेली में रखकर बचाने का प्रयास भी किया, पर वह नहीं बचा। उसकी मृत्यु के पश्चात् भी महादेवी को ऐसा लगता रहा कि फिर वह कहीं से अचानक आकर उन्हें चौंका देगा। गिल्लू की हर छोटी-बड़ी बात उन्हें याद आती रहती।

मुख्य बिंदु

- कभी-कभी एक चीज़ को देखकर किसी दूसरी चीज़ की याद आती है। इसे संबंध-भावना कहते हैं। लेखिका सोनजुही को देखती है, तो उसे गिल्लू की याद आती है। गिल्लू सोनजुही की छाया में बैठता था। लेखिका जब नज़दीक आती थी, तो अचानक कूदकर उसे चौंका देता था। गिल्लू को समाधि भी सोनजुही के नीचे दी गई, इसीलिए सोनजुही में आए फूल को देखकर लेखिका को गिल्लू की याद आती है।
- लेखिका ने पहली बार गिल्लू को तब देखा, जब वह अपने घोंसले से गिरकर घायल हो गया था और कौवे उस पर अपनी चोंचों से प्रहार कर रहे थे। लेखिका ने इस स्थिति का वर्णन करते हुए कौवों के स्वभाव का व्यंग्यात्मक वर्णन किया है। वह कौवों की अंतर्विरोधी स्थिति का भी उल्लेख करती है।

- लेखिका अपने करुणा-भाव और समानुभूति के कारण गिल्लू का उपचार करके उसे नया जीवन देती है। गिल्लू के प्रति करुणा और समानुभूति ही लेखिका और गिल्लू के आत्मीय संबंध का आधार है।
- लेखिका के वर्णन से पता लगता है कि जिस प्रकार मनुष्य में उम्र के अनुसार शारीरिक एवं व्यवहारगत परिवर्तन होते हैं, वैसे ही अधिकांश मानवेतर प्राणियों में भी ये परिवर्तन होते हैं।
- युवावस्था में मुक्ति की इच्छा एक महत्त्वपूर्ण स्थिति है। यह समस्त प्राणी-जगत का मूल भाव है। इस भाव को पहचानकर उचित व्यवहार आवश्यक है।
- लेखिका द्वारा जीव-मनोविज्ञान की परख के उल्लेख से पता लगता है कि संवेदनशीलता, समानुभूति, स्नेह, आत्मीयता, लगाव, परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार आदि मनुष्येतर प्राणियों में भी पाए जाते हैं। यह उल्लेख हमें संदेश देता है कि हमें पशु-पक्षियों, प्रकृति आदि के संरक्षण के लिए कार्य करना चाहिए।
- इस रेखाचित्र का अंत बहुत मार्मिक है।
- रेखाचित्र की भाषा-शैली आत्मकथात्मक, सहज, सरल और चित्रात्मक है। भाषा प्रवाहपूर्ण है। इसमें 'पूर्वदीप्ति तकनीक' का उपयोग है। तत्सम, तद्भव, देशज तथा अन्य भाषाओं से आए (आगत) शब्दों का प्रयोग किया गया है।

आइए समझें

'गिल्लू' पाठ एक संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। रेखाचित्र में शब्दों के माध्यम से किसी के चरित्र की आंतरिक और बाह्य विशेषताओं का चित्रात्मक वर्णन किया जाता है। यही रेखाचित्र जब आत्मीयता को प्रदर्शित करने लगे, तो संस्मरण के करीब पहुँचने लगता है। इस पाठ को पढ़ते समय हमारे सामने गिल्लू का एक चित्र उभरने लगता है। महादेवी वर्मा ने अपने पास रहने वाले पशु-पक्षियों के बारे में कई रेखाचित्र लिखे हैं।

इस मार्मिक रेखाचित्र का उद्देश्य मानवेतर प्राणियों के प्रति लगाव एवं स्नेह की अभिव्यक्ति है।

यह जानना ज़रूरी है

- अपने परिवेश के प्रति सजगता एवं संवेदनशीलता ज़रूरी है।
- गिल्लू जैसे नन्हें व मासूम जीवों की गतिविधियों में भी सौंदर्य निहित है।
- घायल पशु-पक्षियों व जीव-जंतुओं की सहायता करनी चाहिए।
- पशु-पक्षियों में अपने संरक्षक के प्रति वफ़ादारी की भावना होती है।
- पशु-पक्षी हमारी प्रकृति का अभिन्न व महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

शब्द-भंडार

- तत्सम : संधि, जीव, दृष्टि, संभवतः, सुलभ, आहार, लघु प्राण, निश्चेष्ट, रक्त आदि।
- तद्भव : मिट्टी, बत्ती, मुँह, घर, पत्तियाँ, उँगली, हाथ आदि।
- देशज : झब्बेदार, चौंकाना, काँव-काँव, चिक्-चिक्, झुंड आदि।
- आगत : पेन्सिलीन, गमला, दीवार, हौले, तेज़ी, लिफ़ाफ़ा आदि।

पुल्लिंग-स्त्रीलिंग

- कुछ शब्दों का लिंग बताने के लिए 'नर' अथवा 'मादा' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'गिलहरी' ऐसा ही शब्द है।
- प्रायः ईकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, किंतु कुछ पुल्लिंग भी होते हैं, जैसे–हाथी, माली इत्यादि।

उपसर्ग-प्रत्यय

- मूल शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाये जाते हैं।

योग्यता बढ़ाएँ

- ऐसी संस्थाओं के बारे में जानकारी एकत्रित करें, जो घायल पशु-पक्षियों की देखभाल करती हैं।
- अपने या अपने आस-पास के किसी पालतू पशु-पक्षी की गतिविधियों का रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

रेखाचित्र का संप्रेष्य

'गिल्लू' रेखाचित्र में लेखिका ने गिल्लू नामक नर गिलहरी की जीवन-यात्रा का वर्णन किया है। गिल्लू के इस जीवन का संबंध लेखिका के जीवन से जुड़ जाता है। लेखिका ने गिल्लू के स्वभाव, रूप-रंग, आचरण और समयानुसार ज़रूरतों का जैसा वर्णन किया है, वह बहुत मार्मिक है। यह मार्मिकता हमें अपने आस-पास के जीवन के प्रति संवेदनशील बनाती है। यही इस पाठ का उद्देश्य भी है।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- रेखाचित्र को ध्यान से पढ़िए और पाठ में दिए गए क्रियाकलापों एवं प्रश्नों का अभ्यास कीजिए।
- गिल्लू जैसे प्राणियों की गतिविधियों पर ध्यान देने का प्रयास कीजिए।
- रेखाचित्र के अंशों को क्रमशः समझिए।
- रेखाचित्र की भाषा-शैली पर ध्यान दीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. अपने या अपने किसी मित्र के पालतू पशु-पक्षी के घायल होने पर आप उसके उपचार के लिए क्या करेंगे– 20-25 शब्दों में उल्लेख कीजिए।
2. पशु-पक्षियों को पालतू बनाना आपकी दृष्टि में उपयुक्त है या नहीं? तर्कसहित 20-25 शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. आवारा पशुओं की समस्या आवासीय बस्तियों में गंभीर रूप क्यों ले लेती है– 20-25 शब्दों में लिखिए।
4. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   कौन-सा शब्द-वर्ग असंगत है–

   (क) संधि, बत्ती, स्निग्ध, उपचार

   (ख) मिट्टी, हाथ, पत्तियाँ, घर

   (ग) झुंड, चौंकना, झब्बेदार, चिक्-चिक्

   (घ) मोटर, गमला, हौले, मेज़

4

आह्वान

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• सस्वर काव्य-पाठ • उत्साहवर्धन	• कविता • आह्वान • उद्बोधन	• रूपक एवं दृष्टांत अलंकार • विस्मयादिबोधक शब्द	• निराशा से उबरना और उबारना • धर्म, मत एवं क्षेत्रीय भिन्नता को सकारात्मक बनाना

मूलभाव

यह कविता 1912 ई. के आसपास तब लिखी गयी, जब हमारा देश गुलाम था। देश के लोगों में हताशा, निराशा और निष्क्रियता थी। ऐसे में भाग्यवादी हो जाने का खतरा भी होता है। इस कविता में कवि ने भाग्य के भरोसे आलसी बनकर व्यर्थ बैठे रहने की जगह कर्मशील होकर आगे बढ़ने का आह्वान किया है। जीवन में सफलता पाने के लिए निरंतर कर्म और परिश्रम करना आवश्यक होता है। कवि ने देश के उत्थान के लिए लोगों में एकजुटता के आधार पर संघर्ष करने की भावना जगाने का प्रयास किया है। धर्म, संप्रदाय और क्षेत्रीय आधार पर भिन्नता किसी देश के विकास की राह में बाधा नहीं बन सकते, यदि उस देश के लोग एक होकर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

मुख्य बिंदु

- भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ रखकर बैठना आलस्य की पहचान है। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है, जो परिश्रमी एवं कर्मशील होते हैं।
- विकास करने के लिए कर्मशील होना आवश्यक है। संसार में अनेक देश ऐसे हैं, जो पहले पिछड़े थे, लेकिन अब अपनी कर्मशीलता के कारण विकसित हो गए हैं।
- आलस्य के साथ विकास संभव नहीं है।
- पतन के लिए भाग्य को दोष देना उचित नहीं है।
- विविधता में एकता है। एकजुट होकर ही देश का उत्थान संभव है।

आइए समझें

- कवि देश की गुलाम (परतंत्र) जनता को भाग्यवाद से मोड़कर उसमें कर्म, संघर्ष और परिश्रम की प्रेरणा जगाता है। वह इस बात पर बल देता है कि प्रगति के लिए उद्यम आवश्यक है। ऐसे लोगों का साथ भाग्य भी देता है। उदाहरण के लिए सामने रखा निवाला भी बिना उद्यम के मुँह में नहीं जा सकता।
- संसार में अनेक देशों के लोग अपने श्रम के कारण पिछड़ेपन से निकलकर विकास कर चुके हैं, जबकि जो देश आगे बढ़े हुए थे, वे पीछे पड़ चुके है और अपने पतन के लिए भाग्य और ईश्वर को दोष दे रहे हैं। पुरुषार्थी व्यक्ति कर्म में विश्वास करता है। कर्म किए बिना कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार दीपक को

जलाने के लिए तेल की आवश्यकता होती हैं, उसी प्रकार कार्य में सफलता के लिए कर्म और परिश्रम की।

- भारत विविध धर्मों, मतों, संप्रदायों वाला देश है, लेकिन इस विविधता में भिन्नता ही नहीं, एकता भी है। एकता में शक्ति होती है। इसी शक्ति से देश का विकास होता है। कवि ने माला का दृष्टांत देकर यह स्पष्ट किया है कि विविधता में सुंदर एकता संभव है।

यह जानना ज़रूरी है

- जिस प्रकार साँचे के बिना मूर्ति नहीं बन सकती, उसी प्रकार कर्म और परिश्रम के बिना जीवन में लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- भारत का यह वैशिष्ट्य है कि इसमें अनेक धर्मों, मतों, संप्रदायों और जातियों के लोग रहते हैं। देश के उत्थान और विकास के लिए सभी को एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए।
- हताशा, निराशा और निष्क्रियता से ऊपर उठकर कर्मशील होने की प्रेरणा विकास या प्रगति के लिए आवश्यक है।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- 'कर्म-तैल' और 'विधि-दीप' में रूपक अलंकार।
- दृष्टांत अलंकार का प्रयोग : भोजन का निवाला स्वयं मुँह में नहीं जाता।
- विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग : हा!

सराहना-पक्ष

- देश की जनता को उद्‌बोधन एवं उसका आह्‌वान।
- निराशा, आलस एवं अकर्मण्यता से ग्रस्त देश की जनता को जगाने का प्रयास।
- कविता के प्रारंभिक दो छंद उपदेशात्मक हैं, लेकिन अंतिम छंद में देश की जनता के साथ कवि भी शामिल है; इसलिए यह आह्‌वान की कविता है।
- आह्‌वानसूचक पदों का प्रयोग हुआ है! आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो!
- यह कविता उपर्युक्त बातों की अभिव्यक्ति बहुत ही प्रभावशाली ढंग से करती है। इन सब बातों के साथ अपने प्रभाव के कारण यह कविता जिस समय लिखी गयी थी, उस समय से आगे बढ़कर आज भी हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम है।

योग्यता बढ़ाएँ

- बहुत से लोग ऐसे भी रहे हैं, जो अंग्रेज़ों की गुलामी से देश को आज़ाद करने के लिए परिश्रम और संघर्ष कर रहे थे, आपसी भेद-भाव भुलाकर एकजुट हो रहे थे।
- रामधारी सिंह 'दिनकर' ने इस प्रकार की प्रेरणा देने वाली अनेक कविताएँ लिखी हैं।
- इतिहास में पहाड़ काटकर रास्ता बनाने के कई उदाहरण हैं, जो श्रम के महत्त्व को रेखांकित करते हैं।
- स्वाधीनता-आंदोलन में देशभक्त ऐसी ओजपूर्ण कविताओं की पक्तियों को उत्साह और उमंग से गाते थे।
- एक समय भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था, लेकिन आगे चलकर दूसरे देश भारत से आगे निकल गये। निरंतर परिश्रम करके हम फिर से आगे बढ़ सकते हैं।
- एकता में शक्ति होती है। आपने एक कहानी पढ़ी होगी, जिसमें एकता के महत्त्व को बताने के लिए एक पिता अपने बेटों को एक साथ तीन लकड़ियों को मिलाकर तोड़ने के लिए देता है और वे उसे नहीं तोड़ पाते, जबकि अलग-अलग एक-एक लकड़ी को तोड़ देते हैं।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- कविता का बार-बार सस्वर पाठ कीजिए तथा उसके मूल भाव को समझिए।
- प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, बोधगम्य एवं शुद्‌ध भाषा में दीजिए।

- कविता में आये कठिन शब्दों के अर्थ याद रखिए।
- महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदुओं को याद रखिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. कविता में किन-किन दृष्टांतों का प्रयोग किया गया है? किन्हीं दो नए दृष्टांतों का प्रयोग कीजिए।
2. सांप्रदायिक भेद भाव किस प्रकार देश की प्रगति में बाधक है– उदाहरण देते हुए 20-25 शब्दों में लिखिए।
3. अकर्मण्य अथवा आलसी लोगों के प्रति आपके क्या विचार हैं– तर्क देते हुए लिखिए।
4. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द कष्ट की स्थिति में प्रयुक्त नहीं होता–

   (क) हाय (ख) आह

   (ग) ओह (घ) अहा

5

रॉबर्ट नर्सिंग होम में

(रिपोर्ताज)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• आँखों देखा वर्णन • भावपरक अभिव्यक्तियाँ • स्थिति, पात्र का चित्रण	• किसी स्थिति या घटना का वर्णन	• समानुभूति और करुणा • क्षेत्र, भाषा, धर्म, जाति और रंग-भेद की स्थितियों में समाधान • नकारात्मक-सकारात्मक उदाहरणों का चुनाव • रिपोर्ताज लेखन

सारांश

रॉबर्ट नर्सिंग होम में लेखक की मुलाकात मानव-सेवा में लीन तीन विदेशी महिलाओं से हुई। उसने मदर टेरेसा, सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड और मदर मार्गरेट को समर्पित भाव से पीड़ितों की सेवा करते हुए देखा। यह देखकर लेखक को एहसास हुआ कि नारी में कितनी करुणा हो सकती है! देश की सीमाएँ, धार्मिक भेदभाव, जातीय बंधन मानव-सेवा के मार्ग में बाधक नहीं बन सकते। बस आवश्यकता है–दृढ़ संकल्प की। अपनी जन्मभूमि से इतनी दूर अनजान देश व अपरिचित लोगों की सेवा में रत इन महिलाओं को देखकर लेखक अचंभित एवं प्रभावित हुआ। मानव-सेवा को अपना धर्म मानकर इन्होंने संपूर्ण जीवन इसके लिए समर्पित कर दिया। असीम पीड़ा से चिल्लाते हुए रोगी को मदर टेरेसा का स्पर्शमात्र राहत व सुख की अनुभूति करा देता था। इसी नर्सिंग होम में लेखक ने जर्मनी की एक युवा व आकर्षक सेविका क्रिस्ट हैल्ड को देखा। उसकी तपस्या व निष्ठा से वह बहुत प्रभावित हुआ। भील सेवा केंद्र में तबादले से क्रिस्ट बिल्कुल विचलित नहीं हुई, जबकि लेखक चिंतित हुआ कि वह उस जंगली इलाके में कैसे रह पाएगी? उसे तो बस मानवता की सेवा की धुन सवार थी। मदर टेरेसा फ्रांस की और क्रिस्ट हैल्ड जर्मनी की–ये दोनों देश एक दूसरे के घोर विरोधी रहे हैं। यहाँ दोनों को एक साथ एक ध्येय के लिए मिलकर काम करते देखकर लेखक अभिप्रेरित हुआ। इसी पाठ में मदर मार्गरेट की मशीन-सी फुर्ती देखकर लेखक उन्हें जादू की पुड़िया कहता है। वे जितनी अधिक वृद्ध थीं, उतनी ही अधिक ऊर्जावान व ख़ुशमिजाज़ थीं। इन महिलाओं ने ही सही अर्थों में गीता के उपदेशों को अपने जीवन में उतारा और अपने कर्म को सबसे सुंदर रूप प्रदान किया।

मुख्य बिंदु

- मदर टेरेसा, मदर मार्गरेट व सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड समर्पित भाव से मानव-सेवा करने वाले लोगों–विशेष रूप से महिलाओं का–प्रतिनिधित्व करती हैं।
- सेवा, सहानुभूति, समर्पण एवं करुणा के व्यवहार व आचरण से किसी को भी अपना बनाया जा सकता है।
- मानव-मानव में भेद करना उचित नहीं है।
- सारा विश्व एक परिवार की तरह है।
- मानवीय संस्कृति के निर्माण व संचालन में महिलाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।
- ऐसे महान व्यक्तित्व निस्वार्थ सेवा-भाव की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

आइए समझें

आपने पाठ में संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि विधाओं का मिला-जुला रूप देखा। इन विधाओं में प्रयुक्त विशिष्ट भाषा ही इन्हें एक-दूसरे से अलग करती है। आँखों देखा हाल लिखने की शैली अलग है। शब्दों के माध्यम से चित्र उकेरने की भाषा व विधि अलग है और भावावेश में कही गई बातें कुछ और तरीके से प्रस्तुत की गई हैं। पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर यह स्पष्ट हो जाता है, जैसे :

- **आँखों देखा हाल :** तीसरे पहर का समय, थर्मामीटर हाथ में लिए वे आईं।
- **शब्दों द्वारा चित्र उकेरना :** देह उनकी कोई पैंतालिस वसंत देखी, वर्ण हिम-श्वेत, पर अरुणोदय की रेखाओं से अनुरंजित, कद लंबा और सुता-सधा।
- **भावावेश में कही गई बातें :** 'ओह, उस जंगली जीवन में यह कर्पूरिका।' तथा 'हज़ार वाट का बल्ब मेरी आँखों में कौंध गया।'
- यह पाठ हमें अनेक बातें सिखाता है, उदाहरण के लिए– बीमार को देखकर उदास नहीं होना चाहिए, इससे बीमार की निराशा बढ़ सकती है, जो उसके स्वास्थ्य-लाभ में बाधक हो सकती है।
- मानव-सेवा किसी के सौंदर्य को और अधिक निखार देती है। मानव-सेवा में लगी महिलाओं को देखकर लेखक जो वर्णन करता है, उससे यह बात स्पष्ट होती है।
- माँ के पद को सेवा के आधार पर भी प्राप्त किया जा सकता है।
- इतिहास में घटी किसी एक घटना से सदैव के लिए निर्णय नहीं हो सकता। जर्मनी में यदि हिटलर पैदा हुआ, तो क्रिस्ट हैल्ड भी पैदा हुई। हिटलर मानव-विरोधी था, जबकि क्रिस्ट हैल्ड मानव-सेविका है। हिटलर जैसे लोग मनुष्य-मनुष्य के बीच दीवार खड़ी करते हैं, तो क्रिस्ट हैल्ड जैसी महिलाएँ इन दीवारों को तोड़ देती हैं।
- जो लोग मानव-सेवा में अपने को लगा देते हैं, वे घर-परिवार के मोह को तोड़ देते हैं। वे भावुकता में पड़कर राह से नहीं भटकते।
- आदर्श मानवीय गुण किसी एक देश की थाती नहीं हैं, उन्हें संपूर्ण विश्व में कहीं भी देखा जा सकता है; 'गीता' की रचना भारत में हुई, पर उसे जीवन में उतारा इन तीन विदेशी महिलाओं ने।

यह जानना ज़रूरी है

- हमारे समाज में कुछ लोग जाति, धर्म व भाषा के नाम पर एक-दूसरे में भेद करते हैं; यह उचित नहीं है।
- महिलाओं को कम आँकने की भूल भी अक्सर की जाती हैं, जो अनुचित है। सही अवसर मिलने पर वे किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दे सकती हैं।
- मानवता से बढ़कर कोई अन्य धर्म व मानव-सेवा से बढ़कर कोई और कर्म हो ही नहीं सकता।

योग्यता बढ़ाएँ

- किसी ऐसे व्यक्ति का रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए, जिसके सेवा-भाव ने आपको प्रभावित किया हो।
- हमारे देश में बहुत सी सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ निस्वार्थ भाव से सेवा कर रही हैं, उनमें से कुछ संस्थाओं के कार्यक्षेत्र की जानकारी एकत्रित कीजिए।
- अपने आसपास के किसी अस्पताल में काम करने वाले लोगों की दिनचर्या को देखिए और उसे अपने शब्दों में लिखने का अभ्यास कीजिए।

पाठ का संप्रेष्य

- निस्स्वार्थ भाव से सेवा में सुख का अनुभव करना।
- जाति, क्षेत्र, भाषा, धर्म, लिंग व रंग के आधार पर भेदभाव करना उचित नहीं।
- अपने जीवन को मानवमात्र की सेवा के लिए तैयार करना चाहिए।
- बड़े और महान उद्देश्य के लिए महत्त्वहीन बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।
- महिलाओं ने समाज के लिए अविस्मरणीय योगदान किया है।
- मानवता का धर्म ही सर्वोपरि है।

अपना मूल्यांकन करें

1. 'नारी ने सामाजिक उत्थान में अहम भूमिका अदा की है' –इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? 20-25 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
2. 'स्वार्थ से अधिक आनंद की अनुभूति परमार्थ में है' –इस कथन के पक्ष में 25-30 शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. आप अपने आसपास के परिवेश में जिस भेदभाव को महसूस करते हैं, उसका उल्लेख करते हुए उसे दूर करने के सुझाव प्रस्तुत कीजिए।

6

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

(फ़ीचर)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• भावपरक अभिव्यक्ति	• महत्त्वपूर्ण या पसंदीदा व्यक्तित्वों पर लेखन	• स्त्री-विरोधी स्थिति की पहचान और उसका प्रतिकार • स्त्री-वैशिष्ट्य की पहचान • समाज के लिए नारी-शक्ति की उपयोगिता का उल्लेख

सारांश

'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' पाठ में कल्पना चावला तथा बचेंद्रीपाल के बारे में बताया गया है। विभिन्न क्षेत्रों में आदर्श स्थापित करने वाली महिलाओं– लता मंगेशकर, पी.टी. उषा, सरोजिनी नायडू तथा अरुणा आसफ़ अली की चर्चा भी है। कल्पना चावला का जन्म हरियाणा के करनाल में एक व्यापारी परिवार में हुआ था। ग्यारहवीं कक्षा में अंतरिक्ष यान के बारे में जानकारी होने पर वे अंतरिक्षविज्ञानी बनने के सपने देखती रहीं। लगातार परिश्रम तथा लगन से विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बन गईं और उन्हें कोलंबिया मिशन के लिए चुनकर विशेषज्ञ बना दिया गया। दूसरी बार अमेरिकी अंतरिक्ष यान के अभियान दल में शामिल हो अंतरिक्ष से वापस आते समय 1 फ़रवरी, 2003 को यान में विस्फोट हो जाने के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

बचेंद्रीपाल साहस की पर्याय हैं। इनका जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। बचपन से ही पहाड़ों पर चढ़ना अच्छा लगता था, लेकिन लड़की होने के कारण इन्हें रोका जाता था। अवरोध से उनकी इच्छा और दृढ़ होती गई। पढ़ाई-लिखाई के दौरान् 'कालानाग', 'गंगोत्री ग्लेशियर' तथा 'रूड गैरा' की चढ़ाई करती रहीं, जिससे उनका विश्वास बढ़ता रहा। दिल्ली में तेनजिंग नोर्गे तथा जुके तांबी से मिलकर उनका संकल्प और दृढ़ हुआ और अंततः एवरेस्ट के शिखर पर झंडा फहरा दिया। साहस और आत्मविश्वास से हर कठिन काम संभव है।

मुख्य बिंदु

- भारतीय स्त्रियों की शक्ति, लगन तथा उत्साह का परिचय मिलता है।
- जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उम्दा प्रदर्शन करने वाली महिलाओं की जानकारी मिलती है।
- वर्तमान समाज में स्त्रियों की सजगता को समझा जा सकता है।
- स्त्रियों के संघर्ष तथा उनकी पहचान को दर्शाया गया है।
- स्त्रियों की शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक सबलता को बताया गया है।
- उनकी उपलब्धियों से प्रेरणा मिलती है।

आइए समझें

- प्राचीन काल में गार्गी, मैत्रेयी, गौतमी आदि नारियाँ पुरुषों के बराबर बैठ समाज के निर्माण में सहयोग करती थीं।
- स्वाधीनता-संघर्ष में भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ़ अली आदि नारियों ने पुरुषों के साथ मिलकर आज़ादी की लड़ाई लड़ी।
- राजनीति, प्रशासन, व्यापार तथा तकनीकी क्षेत्रों में

सफलतापूर्वक कार्य करते हुए महिलाओं ने अपनी कुशलता का परिचय दिया है।

- विकट कठिनाइयों में भी साहस और आत्मविश्वास के साथ कार्य करके महिलाओं ने अपने को स्थापित किया है।
- पुरुषों द्वारा मज़ाक उड़ाने पर भी कल्पना चावला तथा बचेंद्री पाल ने अपने कदमों को नहीं रुकने दिया।
- 16 दिनों के कोलंबिया अभियान में मानव-शरीर, कैंसर कोशिकाओं की परीक्षा-संबंधी 80 प्रयोग किए गए।

यह जानना ज़रूरी है

- फ़ीचर में घटनाओं को सहज व सरल भाषा में मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उनमें ऐसी ख़ूबी आ जाती है कि हम उन्हें अपने सामने देख रहे हों! फ़ीचर के माध्यम से पाठक को शिक्षित किया जाता है तथा उसका मनोरंजन किया जाता है।
- फ़ीचर कई प्रकार के होते हैं: जन-रुचि वाले, विचारपरक, मनोरंजक तथा व्यक्तित्व-संबंधी।
- फ़ीचर की शैली कई प्रकार की होती है :
  - मनोरंजक शैली
  - सचित्र फ़ीचर
  - फ़ोटो फ़ीचर

पाठ का संप्रेष्य

महिलाएँ पुरुष से किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। भारत की बेटियों ने अपने आत्मविश्वास, संकल्प और परिश्रम से ऐसी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जिनसे भारत को पूरे संसार में सिर उठाने का मौका मिला है। भारत की नारियाँ किसी से पीछे नहीं है। कल्पना चावला तथा बचेंद्रीपाल के माध्यम से इस तथ्य को बताया गया है।

योग्यता बढ़ाएँ

- महिलाओं की रक्षा तथा सशक्तीकरण हेतु प्रयास कीजिए।
- घरेलू हिंसा, भेदभाव, अन्याय आदि को समझने तथा मिटाने का प्रयास कीजिए।
- इंदिरा गांधी तथा सरोजिनी नायडू की जीवनी पढ़िए।
- पसंदीदा खिलाड़ी पर फ़ीचर लिखिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- पाठ को दो-तीन बार पढ़िए।
- मुख्य बिंदुओं को ध्यान से पढ़िए तथा याद रखिए।
- कल्पना चावला तथा बचेंद्रीपाल के जीवन से जुड़ी घटनाओं तथा संघर्ष को याद कीजिए।
- अपने उत्तर को बेहतर बनाने के लिए उन महिलाओं के विषय में जानकारी दीजिए, जिन्होंने देश का नाम रौशन किया हो।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   कल्पना चावला के सहपाठियों ने उसके एअरोनॉटिकल इंजीनियरिंग (वैमानिकी) विषय चुनने पर मज़ाक क्यों उड़ाया?

   (क) इतना आसान विषय चुनने के कारण

   (ख) लड़की होने के बावजूद ऐसा विषय चुनने के कारण

   (ग) लड़कियों के लिए इस विषय की उपयोगिता को समझकर

   (घ) उन्हें लगा कि इस विषय को समझना कल्पना के बस में नहीं।

2. अगर व्यक्ति में आत्मविश्वास, लगन, साहस और दृढ़ इच्छा शक्ति हो, तो कोई भी कठिनाई उसका रास्ता नहीं रोक सकती; 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' पाठ के आधार पर 30-40 शब्दों में अपने विचार स्पष्ट कीजिए।
3. अपने मित्र पर 40-50 शब्दों में एक फ़ीचर लिखिए।

7

आज़ादी

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• मुक्त छंद कविता	• कविता • व्याख्या • सराहना	• शब्द-निर्माण के आधार– संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय	• अधिकार एवं कर्त्तव्य के संबंध की पहचान • जिज्ञासाओं के सही समाधान की क्षमता • चिंतन-क्षमता का विकास

मूलभाव

कविता का आरंभ काम से थके शागिर्द की जिज्ञासा से होता है। दर्जी से उसके शागिर्द ने पूछा कि आज़ादी का क्या अर्थ है? अपनी ओर से कई संदर्भों को जोड़कर शागिर्द ने आज़ादी का अर्थ जानना चाहा। कवि शागिर्द के माध्यम से प्रश्न करता है कि क्या सैर-सपाटा, घूमना-फिरना आज़ादी है? शागिर्द अपनी मुक्ति या आज़ादी के बारे में पूछता है कि क्या अनंत कपड़े के ढेर, सिलाई मशीनों के निरंतर गतिशील हो रहे पहियों, कपड़ों पर अनवरत चलने वाली सुइयों से मुक्ति पाने का नाम आज़ादी है? शागिर्द के सवाल को अनुभवी दर्जी ने ध्यानपूर्वक सुना। उसने बताया कि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ही आज़ादी है। कवि के लिए आज़ादी एक अभिव्यक्ति है, जिसका माध्यम शब्द है। शिकारी के लिए तीर आज़ादी का एक साधन है। इस प्रकार कवि जीवन के लिए अनिवार्य साधन को भी आज़ादी मानता है। ज्ञान, कर्म और बलिदान के समन्वय से जीवन को स्वस्थ व सुंदर बनाया जा सकता है। दर्जी ने आज़ादी को कर्म से जोड़ते हुए कहा–कर्मठ व्यक्ति ही सपने देख सकता है। कर्म करते रहने में ही आज़ादी है। जो कर्म नहीं करता, उसे आज़ादी को भी भोगने का अधिकार नहीं है। कर्म ही आज़ादी है और परिश्रम का उचित फल प्राप्त करना भी आज़ादी है। उस्ताद का उत्तर सुनकर और उसे कर्मरत देखकर शागिर्द की परेशानियाँ दूर हो गईं।

मुख्य बिंदु

- कविता शागिर्द की जिज्ञासा से शुरू होती है।
- कविता के माध्यम से आज़ादी की वास्तविकता को समझाया गया है।
- आज़ादी का संबंध उच्छृंखलता, दुस्साहस, अवसरवाद या संकीर्ण सुख से नहीं, बल्कि श्रम, त्याग और बलिदान से है।
- कविता में 'श्रम और स्वप्न' तथा 'कर्त्तव्य और अधिकार' के संबंधों की चर्चा की गई है।
- यह कविता उन लोगों को अधिकार दिलाने की बात करती है, जो श्रम करने के बावजूद अपने अधिकारों से वंचित हैं।
- श्रम के महत्त्व को जानकर शागिर्द के सारे भ्रम दूर हो जाते हैं और वह काम में लग जाता है।

आइए समझें

- हमारे समाज में आज़ादी को अनेक संदर्भों में देखा जा सकता है।

- प्राय: उन्मुक्तता, मनमर्ज़ी, सैर-सपाटे, गैर-ज़िम्मेदारी, तात्कालिक तथा सीमित लाभ और कर्महीनता को ही आज़ादी मान लिया जाता है।
- आज़ादी का अर्थ ज़िम्मेदारी का भाव है, जिसे समझकर शागिर्द अपने काम में जुट जाता है।
- आज़ादी का अर्थ केवल अधिकारों को भोगना नहीं, बल्कि समाज तथा देश के प्रति कर्त्तव्य निभाना भी है।

यह जानना ज़रूरी है

- यह कविता मलयालम में लिखी गई है, जो केरल की भाषा है। कवि भारत के दक्षिणी हिस्से का है, इसलिए वह रेलगाड़ी के उत्तर दिशा में भागने की बात का उल्लेख करता है।
- बारह-तेरह वर्ष की उम्र के किशोर सैर-सपाटे को ही आज़ादी मानते हैं, इसलिए शागिर्द द्वारा किया गया यह प्रश्न उचित है कि सैर-सपाटा, घूमना-फिरना आज़ादी है?
- पथिक को अँधेरे में लैंपपोस्ट मिल जाए, तो उसकी परेशानियाँ समाप्त हो जाती हैं? क्या लैंपपोस्ट के नीचे रुकना आज़ादी है? क्या निश्चिंतता आज़ादी है? – शागिर्द के मन में उठने वाले प्रश्न उसकी चिंतन-क्षमता को बताते हैं।
- दर्जी ने अपने अनुभव के आधार पर बताया कि मूलभूत अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति ही आज़ादी है। भूखे को खाना, प्यासे को पानी, ठंड से पीड़ित के लिए राहत वाले ऊनी वस्त्र, थके-माँदे के लिए बिस्तर ही आज़ादी है।
- समाज और देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी आज़ादी है। समाज-देश के हित में जो हमें ठीक लगे, उसे अवश्य कहें। साहस के साथ अपनी बातें रखना भी एक प्रकार की आज़ादी है।
- ज्ञान हमें मुक्त करता है। यहाँ मुक्त करने का आशय है–सोचने-विचारने की क्षमता को विस्तार देना। ज्ञान को कर्म में बदलना भी ज़रूरी है। देश की आज़ादी का हमें ज्ञान हुआ, फिर उसे प्राप्त करने के लिए सक्रिय हुए, त्याग-बलिदान किया और आज़ाद हुए।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- कविता में कई ऐसे शब्द आए हैं, जिनमें उपसर्गों और प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है। अज्ञानी='अ' उपसर्ग, 'ज्ञान' मूल शब्द एवं 'ई' प्रत्यय। इसी प्रकार अनंत, गतिमान, शिकारी, चमकीली, बोनेवाला, तनहाई आदि में भी उपसर्गों व प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है।
- शब्द-निर्माण के लिए उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास की सहायता ली जाती है।

  संधि–दो वर्णों के मेल को संधि कहा जाता है।

  जैसे–विद्या+आलय=विद्यालय, रवि+इंद्र=रवींद्र।

  समास–दो या अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।

  जैसे–रेल पर चलने वाली गाड़ी = रेलगाड़ी

  रसोई के लिए घर=रसोईघर

सराहना-पक्ष

- कविता शागिर्द की जिज्ञासा से शुरू होती है। जिज्ञासा के कारण कविता पाठकों को आकर्षित करती है। प्रश्नों और उत्तरों की लयात्मकता से आज़ादी की वास्तविकता स्थापित होती है। कविता में आज़ादी का अर्थ कर्म से मुक्त होना नहीं, बल्कि कर्म में रत होना बताया गया है।
- कविता की भाषा सरल और सहज है। शब्द भी आसान और बोलचाल की भाषा के हैं। कविता में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

  फ़ारसी शब्द–उस्ताद, दर्जी, शागिर्द, तनहाई, पनाह

  अरबी शब्द–मुसाफ़िर, महफ़िल

  अंग्रेज़ी शब्द–लैंपपोस्ट
- चमकीली नोंक, अनंत कपड़े, गतिमान पहिए जैसे उदाहरणों में 'चमकीली', 'अनंत', 'गतिमान' विशेषणों का सुंदर प्रयोग किया गया है।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- उपयुक्त ठहरावों के साथ कविता का लयात्मक पाठ उसके अर्थ को खोलता है।

- शागिर्द के प्रश्नों को स्मरण रखना तथा दर्जी के उत्तर को याद रखना तथा उन पर विचार करना आवश्यक है।
- प्रश्नों और उत्तरों के संकेतों (उनकी व्याख्या) को याद रखना आवश्यक है।
- आज़ादी के विभिन्न संदर्भों के तर्कपूर्ण उल्लेख का अभ्यास कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   'आज़ादी' का वास्तविक अर्थ है–

   (क) कुछ भी करने की छूट ☐
   (ख) कर्त्तव्य-पालन ☐
   (ग) स्वच्छंदता ☐
   (घ) कर्म से मुक्ति ☐

2. दर्जी ने शागिर्द की जिज्ञासा को शांत करने के लिए जो समाधान दिए हैं, क्या आप उनसे सहमत हैं? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

3. 'सुई की नोंक पर टिकी है आज़ादी' इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं– अपने विचार लिखिए।

8

चंद्रगहना से लौटती बेर

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• मुक्त छंद, चित्रात्मक कविता	• कविता • व्याख्या • सराहना	• मानवीकरण • प्रतीकात्मकता • रूपक • बोलचाल के शब्द • अनुस्वार और अनुनासिक	• पर्यवेक्षण क्षमता का विकास • चित्रात्मक वर्णन करना • कल्पना-क्षमता का विकास

मूल भाव

इस कविता में ग्रामीण अंचल की प्रकृति का बहुत ही सुंदर और मोहक चित्र खींचा गया है। कवि चंद्रगहना नाम स्थान से लौटते हुए खेत में उगी फ़सलों को देखकर उनके रंग, रूप और गुण का ऐसा मनोहर चित्रण करता है कि वे जीवंत हो उठती हैं। कवि ने प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए विवाह-समारोह की कल्पना की है। यहाँ प्रेम, उमंग और उत्साह का वातावरण है। इसी प्रकार कवि ने गाँव के तालाब का चित्र खींचा है। यहाँ तालाब के पानी में चंद्रमा का प्रतिबिंब है, पत्थर हैं, घास है, बगुला है, चिड़िया है और मछली है। कवि बगुले और मछली को क्रमशः शोषक और शोषित के रूप में देखता है। यह कविता ग्रामीण प्रकृति को संपूर्णता में चित्रित करती है।

मुख्य बिंदु

- ग्रामीण अंचल के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण किया गया है।
- प्रकृति के सौंदर्य और उसकी गतिशीलता में विवाह के वातावरण की कल्पना की गई है।
- कवि ग्रामीण वातावरण से प्रभावित होकर उसे नगरों की तुलना में अधिक प्रेम और सौहार्द से युक्त कहता है।
- कविता में पोखर का भी संपूर्ण चित्र है।
- प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करने के लिए मानवीकरण का उपयोग है।
- कविता में कुछ दृश्यों में प्रतीकात्मकता भी है।

आइए समझें

- कविता की प्रारंभिक 25 पंक्तियों में विवाह के उत्सव का वर्णन है। यह विवाहोत्सव अनूठा है। इसमें चने का पौधा दूल्हा है। चना ठिगने कद का है। उसमें गुलाबी रंग का फूल है। कवि को लगता है कि यह गुलाबी पगड़ी बाँधे सजा-धजा दूल्हा है। चने के पास ही अलसी का पौधा उगा है। अलसी का पौधा दुबला-पतला, लचीला होता है। इसलिए कवि ने अलसी में गाँव की अल्हड़ लड़की की कल्पना करते हुए उसे देह की पतली, कमर की लचीली और हठीली कहा है। सरसों के निरालेपन का उल्लेख करते हुए कवि उसके सयाने अर्थात युवती होने का संकेत करता है। उसके पीले फूलों को देखकर कल्पना की गई है कि उसने हाथ पीले कर लिए हैं और वह ब्याह

मंडप में पधार चुकी है। इस विवाह में फागुन मास 'फाग' गाता है। प्रकृति सबको स्नेह दे रही है। चने, अलसी, सरसों और पूरी प्रकृति से प्रभावित होकर कवि यह कल्पना करते हुए स्थापना करता है कि इस ग्रामीण अंलप में जो सुख है, वह नगर में नहीं।

- दूसरा दृश्य गाँव के पोखर का है। पोखर के पानी में लहरें उठ रही हैं, इन लहरों से प्रभावित होकर पोखर के तल में उगी भूरी घास भी लहरियां ले रही है। पोखर में चाँद का प्रतिबिंब पड़ रहा है। यह प्रतिबिंब पोखर में लंबा दिखाई देता है। कवि ने कल्पना की कि यह चांदी का बड़ा-सा गोल खंभा है। जो आँखों का चौंधियाता है। पोखर के किनारे पड़े पत्थर ऐसे लगते हैं मानो झुककर पानी पीते हुए प्राणी हों, अरसे से ये पत्थर पानी पी रहे हैं और इनकी प्यास नहीं बुझ रही। एक बुगला पोखर के जल में टाँगे डुबोए ध्यानमग्न सा लगा है, दरअसल वह मछली की ताक में है। जैसे ही कोई मछली दिखाई देती है, वह उसे तत्काल गटक लेता है। इस दृश्य के भीतर काले माथ वाली चालाक चिड़िया भी है जो तालाब की सतह पर झपट कर पानी के भीतर से एक उजली सफ़ेद मछली को अपनी पीली चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है।
- इस प्रकार कविता में प्रकृति मोहक और कठोर–दोनों रूपों का चित्रण है।
- बगुला समाज के ढोंगी लोगों का प्रतीक है, चिड़िया चालाक लोगों और मछली शोषितों का प्रतिनिधित्व करती है।

महत्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- कविता में पहले दृश्य में चने, अलसी, प्रकृति और फागुन मास का मानवीकरण किया गया है।
- तालाब में पत्थरों को देख कर कवि को लगता है कि ये पत्थर पानी पी रहे हैं। यहाँ पत्थरों का सुंदर मानवीकरण हुआ है।
- मुरैठी बीते के बराबर, ठिगना, हठीली, लचीली, फाग, चंचल आदि बोलचाल के शब्दों से कविता और सहज बन गयी है।
- सरसों के पीले फूलों को देखकर 'हाथ पीले करना' मुहावरे का सटीक प्रयोग है।

सराहना-बिंदु

- कवि द्वारा देखे हुए ग्रामीण प्राकृतिक सौंदर्य को पाठक तक पहुँचाने के लिए सुंदर कल्पना।
- विवाह के उत्सव का प्राकृतिक गतिशील पर आरोप।
- सूक्ष्म पर्यवेक्षण और कल्पना से प्रकृति के अंग, वस्तुएँ और गतिविधियाँ सजीव बन पड़ी हैं।
- मानवीकरण और रूपक अलंकार का प्रभावशाली उपयोग।
- भावानुकूल और सहज भाषा।

योग्यता बढ़ाएँ

- केदारनाथ अग्रवाल ने विविधरूपा प्रकृति पर आधारित बहुत-सी कविताएँ लिखीं हैं, इन्हें ढूँढ़कर पढ़िए।
- केदारनाथ अग्रवाल द्वारा लिखे गए गद्यात्मक तथा पद्यात्मक साहित्य की जानकारी प्राप्त कीजिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- कविता के मूल भाव को अच्छी तरह समझिए।
- कविता की प्रभाव वृद्धि में मानवीकरण के योगदान पर ध्यान दीजिए।
- कविता में आए प्रतीकों का अर्थ समझकर उन्हें याद रखिए।
- कविता में प्रयोग किए गए रूपक के सौंदर्य को समझिए।
- प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट, बोधगम्य एवं शुद्ध भाषा में दीजिए।
- कविता के महत्त्वपूर्ण अंशों को याद करके उपयोग उत्तर में कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

(i) 'स्वयंवर' का संबंध है–

(क) लड़ाई से ☐ (ख) विवाह से ☐

(ग) खेल से ☐ (घ) त्योहार से ☐

2. कवि ग्रामीण अंचल की भूमि को जिस रूप में देखा है, आप उससे सहमत हैं अथवा असहमत अपने मत का तर्क सहित उल्लेख कीजिए।

3. कविता के किसी एक अंश का चुनाव करके उसका काव्य-सौंदर्य 25–30 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

9

अख़बार की दुनिया

(पठन-कौशल, लेखन-कौशल)

पढ़ना/लिखना	क्रियाकलाप
• अख़बार के समाचार को उसकी उपयोगिता के	• अख़बारों से परिचय • समाचारों के प्रकारों से परिचय अनुसार पढ़ना • समाचार-लेखन की समझ

सारांश

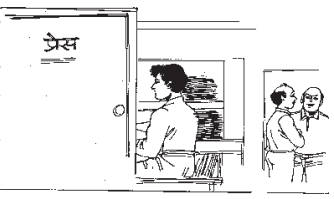

अख़बार आज आम आदमी की ज़रूरत बन चुका है। जिस अख़बार को हम पढ़ते हैं, उसकी भी अपनी एक दुनिया है। अख़बारों में समाचार, संपादकीय, फ़ीचर, फ़ोटो, कार्टून, ग्राफ़िक्स, विज्ञापन आदि अनेक चीज़ें छपती हैं। समाचार अख़बार का प्रमुख अंग है। छपने से पहले समाचारों का चयन उनके महत्त्व तथा समाचारपत्र की नीति के आधार पर होता है। समाचारों के भी कई अंग होते हैं–मेन हेडिंग, सब हेडिंग, बाई लाइन, समाचार-स्रोत, इंट्रो तथा ब्यौरा आदि। समाचारों पर आधारित टिप्पणी संपादकीय कहलाती है। घटनाओं से संबंधित फ़ोटो उनमें विश्वसनीयता तथा प्रभाव उत्पन्न करते हैं। फ़ीचर का काम सूचना देना, शिक्षा देना तथा मनोरंजन करना है। अनेक विषयों पर लेख भी समाचारपत्रों में प्रकाशित होते हैं। अख़बार का एक उपयोगी अंग साक्षात्कार भी है। व्यंग्य-चित्र (कार्टून) केवल मनोरंजन ही नहीं करते, बल्कि समाज को आईना भी दिखाते हैं। विज्ञापन अख़बार की आय के प्रमुख साधन ही नहीं, अपितु पाठकों के लिए भी अत्यंत उपयोगी हैं। विज्ञापन की चुटीली व रोचक भाषा उसे अत्यंत लोकप्रिय बनाती है। पत्र, बाज़ार-भाव, मौसम, खेल संबंधी सूचनाएँ भी नियमित रूप से अख़बार में छपती हैं। अब तो इलेक्ट्रॉनिक अख़बार भी आ गया है।

मुख्य बिंदु

- **समाचारपत्र के अंग**

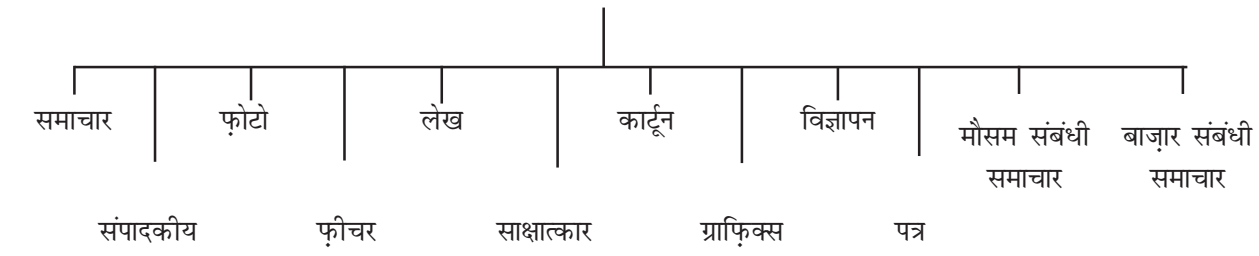

- समाचार बहुविषयक होते हैं।

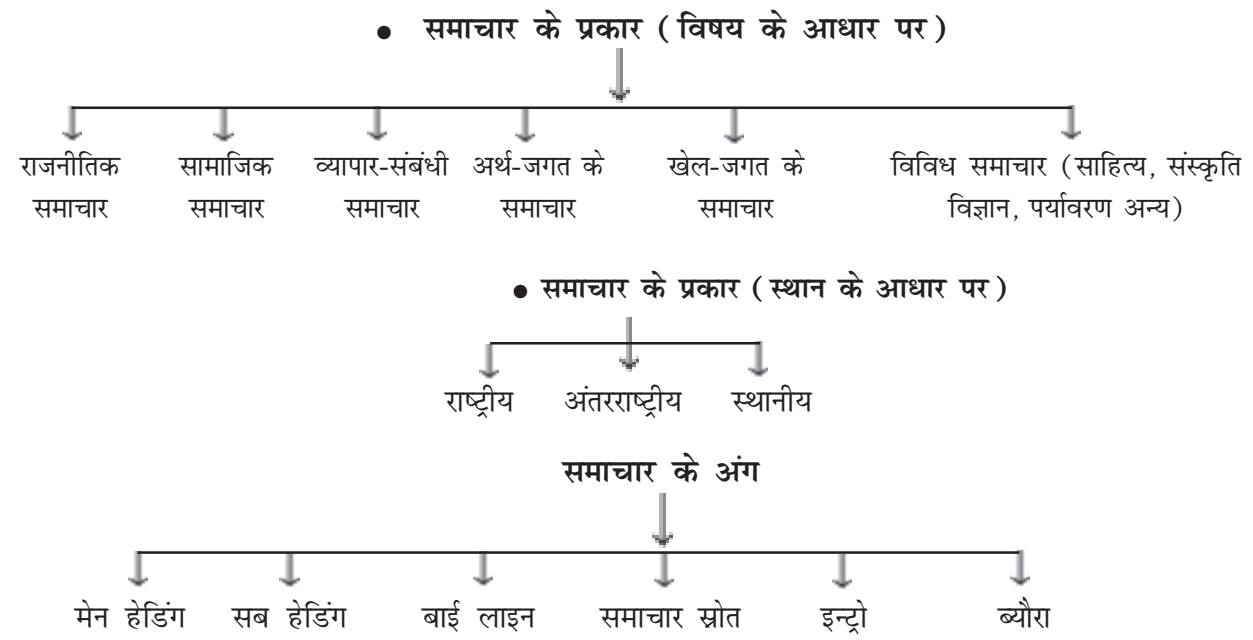

- समाचारों का चयन उनकी उपयोगिता एवं महत्त्व के आधार पर किया जाता है।
- विज्ञापन न केवल समाचारपत्र की बिक्री बढ़ाते हैं, बल्कि पाठकों के लिए भी अत्यंत उपयोगी हैं।
- इलेक्ट्रॉनिक अख़बार कंप्यूटर से जुड़ा हुआ है।

आइए समझें

- समाचार क्या, कैसे, कब, कहाँ, क्यों, कौन, किस आदि सवालों के जवाबों का संपूर्ण विवरण होता है।
- समाचार स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय– सभी स्तरों के होते हैं। समाचारों का चयन उनकी उपयोगिता और महत्त्व के आधार पर होता है।
- फ़ोटो, फ़ीचर, साक्षात्कार, कार्टून का उपयोग अख़बार में नियमित रूप से आवश्यकतानुसार किया जाता है।
- विज्ञापन आज के अख़बार के अभिन्न अंग हैं। इनसे अख़बार की ही आय नहीं होती, व्यापारी-वर्ग तथा विज्ञापनदाता को भी लाभ होता है। पाठक को भी आवश्यकतानुसार चयन करने में सहायता मिलती है।
- मौसम, बाज़ार-भाव इत्यादि की जानकारी पाठक, व्यापारी–सभी के लिए सुविधाजनक है।
- खेल, अर्थ-जगत, मनोरंजन-जगत; महिलाओं, बच्चों, चुटकुलों संबंधी सामग्री से अख़बारों की लोकप्रियता तथा प्रभाव बढ़ता है।

यह जानना ज़रूरी है

- संवाददाता, संपादक, समाचार-स्रोत, पत्रकार इत्यादि सब मिलकर एक एकक के रूप में काम करते हैं।
- एक समाचारपत्र के छपने में अनेक वस्तुओं, व्यक्तियों, स्थानों; सरकारी, गैर-सरकारी, प्राइवेट संस्थाओं का योगदान होता है।
- अख़बार सामाजिक क्रांति में विविध प्रकार से सहायक होते हैं।

योग्यता बढ़ाएँ

- अखबारों के विभिन्न कॉलमों की वर्गीकृत फ़ाइलें बनाइए।
- किसी अख़बार के दफ़्तर में जाकर उनके काम करने के ढंग को जानिए।
- किन्हीं तीन अख़बारों की तुलना करते हुए अपने विचार लिखिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- नियमित रूप से अख़बार के सभी अंगों की पहचान कीजिए।

- उत्तर प्रश्न के अनुरूप, सटीक और संक्षिप्त होने चाहिए।
- उत्तर लिखने से पहले उसकी रूपरेखा अपने मन में बना लीजिए, तत्पश्चात् क्रमबद्ध रूप में उत्तर लिखिए।
- सरल-सहज भाषा में लिखिए।
- रटे हुए उत्तर की अपेक्षा मौलिक रूप में लिखिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) समाचार लिखने वाले अथवा प्रस्तुत करने वाले संवाददाता के नाम वाली पंक्ति को क्या कहते हैं?

(क) को-हेडिंग

(ख) मेन हेडिंग

(ग) सब हेडिंग

(घ) बाई लाइन

(ii) अख़बार आपको क्यों अच्छा लगता है?

(क) सस्ता होने के कारण

(ख) ताज़े समाचारों के कारण

(ग) मोटी छपाई के कारण

(घ) आसानी से उपलब्ध होने के कारण

2. अगर आपको किसी अख़बार में काम करने का अवसर मिले, तो आप क्या बनना चाहेंगे और क्यों?

3. अख़बार में मौसम-संबंधी सूचनाएँ तथा बाज़ार-भाव छपने से आम आदमी को क्या-क्या लाभ हो सकते हैं?

10

पढ़ें कैसे

(पठन-कौशल)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• अक्षर एवं शब्द के स्तर पर सही उच्चारण	• सही उच्चारण के अनुसार सही वर्तनी	• क्रमानुसार पढ़ने-लिखने का कौशल • पढ़ने एवं समझने के बीच संबंध स्थापना

सारांश

पढ़ने के कौशल को सुसंबद्ध रूप में विकसित करने के लिए आवश्यक है कि पढ़ने का अभ्यास चरणों में किया जाए। पढ़ने की पहली अवस्था है—अक्षरों की पहचान तथा उनसे बने शब्दों को पढ़ने का अभ्यास। इसका दूसरा चरण है—उन शब्दों के अर्थ समझना। इतना ही आवश्यक नहीं है, अपितु गतिपूर्वक मौनवाचन करते हुए जब हम उसको पढ़ते हैं, तो उसका आनंद ही अलग है। केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु जो कुछ हम पढ़ रहे हैं उसे समझना भी आवश्यक है। प्रसंगानुसार शब्दों के अर्थ ग्रहण करना ज़रूरी है। कविता, कहानी, लेख, विचार, निबंध आदि को पढ़कर उनका अर्थ समझना पढ़ने का अंतिम चरण है।

मुख्य बिंदु

- पढ़कर समझने का क्रम

अक्षरज्ञान
↓
शब्दज्ञान
↓
अर्थग्रहण
↓
वाक्य-रचना एवं वाक्य का उचित पठन
↓
वाक्य का अर्थ समझना
↓
वाक्यांशों को समझना, पढ़ना एवं लेखन
↓
अनुच्छेद-पठन, अर्थग्रहण एवं लेखन

पठन-कौशल
अक्षर-ज्ञान
शब्दों के अर्थ जानना
गतिपूर्वक पढ़ना
अर्थ समझना/समझकर पढ़ना

- पठित सामग्री की विधाओं को पहचानना
- पठित सामग्री में दी गई घटनाओं, तथ्यों, विचारों आदि का पारस्परिक संबंध स्थापित करना।

आइए समझें

- पठन-कौशल को विकसित करने के लिए आवश्यक है कि हम पढ़ने में रुचि जागृत करें।
- गतिपूर्वक पढ़ने के लिए अधिक से अधिक पठन-सामग्री को पढ़ें।
- गद्य में क्रम की प्राथमिकता है, तो पद्य में लयबद्ध वाचन ज़रूरी है।
- शब्दकोश देखकर कठिन शब्दों के अर्थ जानने चाहिए।

यह जानना ज़रूरी है

- पठन-कौशल को विकसित करने के लिए मनोयोगपूर्वक पढ़ना अत्यंत आवश्यक है।
- अभ्यास द्वारा ही पठन-कौशल में निपुण हुआ जा सकता है।
- पठन-सामग्री में विविधता भी आवश्यक है, इससे प्रत्येक विधा में अलग-अलग तरीके से अर्थ-ग्रहण करने की समझ विकसित होती है।

योग्यता बढ़ाएँ

- क्या पढ़ें और क्या न पढ़ें– इसका निर्णय लेने की क्षमता का विकास कीजिए।
- पढ़ने से पूर्व यह निश्चित होना चाहिए कि आप क्यों पढ़ रहे हैं?
- पढ़ने को अपना शौक बनाइए, आनंदित होंगे।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- पाठ्य-सामग्री को पढ़ने की कला का विकास करने के लिए पढ़ने में रुचि जागृत करना आवश्यक है।
- नियमित रूप से पढ़ने का अभ्यास कीजिए।
- गद्य पढ़ते समय विचारों के क्रम पर ध्यान दीजिए।
- कविता पढ़ते समय भाव-ग्रहण करने के लिए उसे लय के साथ पढ़िए।
- कठिन शब्दों के अर्थ जानने का प्रयास कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) पठित सामग्री के अर्थ-ग्रहण के लिए कौन-सी बात परमावश्यक है?

(क) गतिपूर्वक पढ़ना

(ख) बोल-बोलकर पढ़ना

(ग) मौन वाचन

(घ) समझकर पढ़ना

(ii) अपठित कविता का अर्थ समझने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

(क) (लयपूर्वक) वाचन

(ख) शब्दकोश की सहायता लेना

(ग) बार-बार पढ़ना

(घ) तथ्यों का चयन

2. जो पाठ्य-सामग्री आपको आनंद देती है, अगर वह आपको पूरी तरह समझ नहीं आती, तो उसे समझने के लिए क्या-क्या प्रयास करेंगे?
3. आपका पठन-कौशल आपकी परीक्षा को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है–विचारपूर्वक चार बिंदुओं का उल्लेख कीजिए।

11

सार कैसे लिखें

(लेखन-कौशल)

बोलना/सुनना	पढ़ना	लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• किसी बात को कम शब्दों में बोलना	• गद्यांश पढ़कर मूल भावों की समझ	• समाचारपत्र, टिप्पणी, गद्यांश का सार	• वाक्यांशों के लिए एक शब्द	• मूल भाव की समझ और उसकी अभिव्यक्ति • अनावश्यक सामग्री, दोहराव, कारक को छाँटना • कम शब्दों में भाव का संप्रेषण-कौशल

सारांश

कभी-कभी किसी बात का विस्तार से वर्णन करने की आवश्यकता होती है। कभी-कभी विस्तार से कही गई बात को अथवा अपनी बात को कम-से-कम शब्दों में व्यक्त करना अनिवार्य होता है। अभिव्यक्ति के ये दोनों ही तरीके बात को कहने के कौशल हैं। छोटी-सी बात को विस्तार से कहना भाव-पल्लवन का क्षेत्र है और विस्तृत बात को कम में कहना सार है। जब समय का अभाव हो, तो सार रूप में अभिव्यक्ति का महत्त्व बढ़ जाता है। व्यावसायिक तथा कार्यालयी क्षेत्र में भी सार-लेखन का कौशल अनिवार्य है।

मुख्य बिंदु

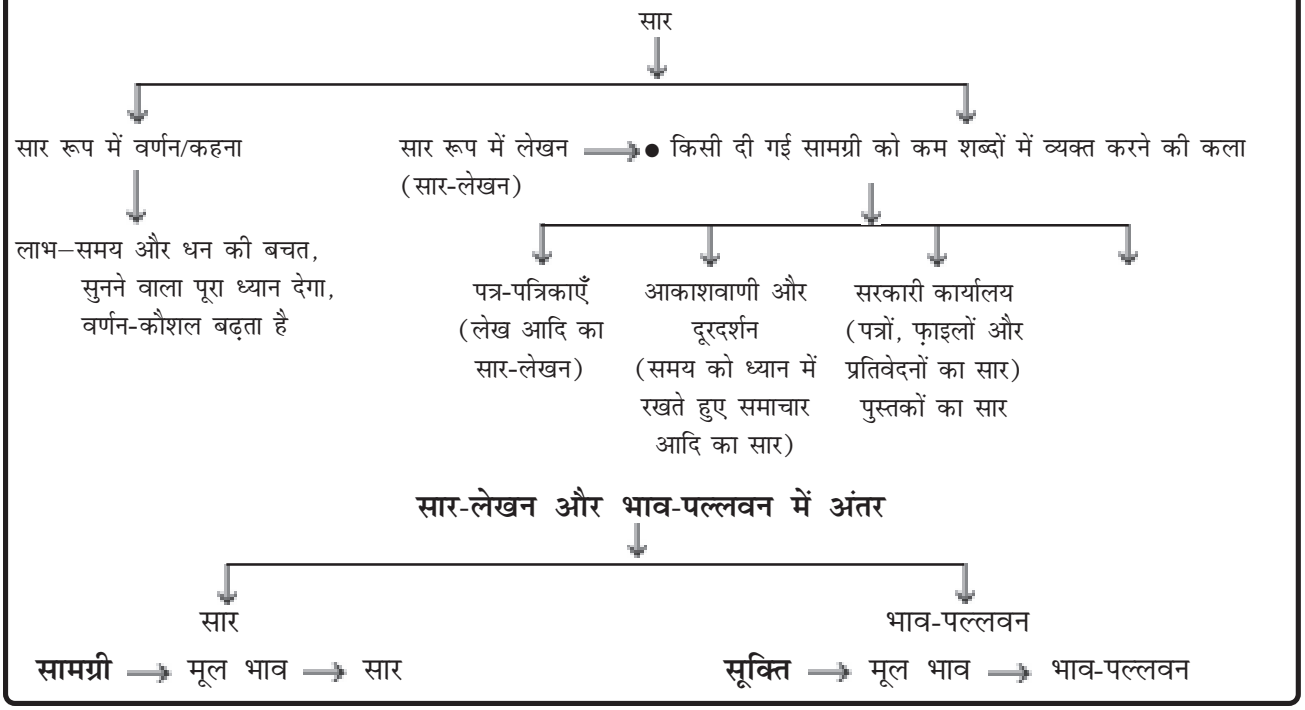

सार-लेखन की प्रक्रिया

मूल सामग्री → मूल बिंदु का चयन → संबंधित बिंदुओं का चयन → मूल और संबंधित बिंदुओं का क्रम

- **मूल बिंदु का चयन**: वह मुख्य बात जिस पर पाठक का ध्यान केंद्रित किया जाता है।
- **संबंधित बिंदुओं का चयन**: वे संबंधित बिंदु, जिनसे मूलभाव को बल मिला है।

→ अनावश्यक सामग्री को छोड़ना → उपयुक्त आकार में सार = **सामग्री → सार**

- **अनावश्यक सामग्री को छोड़ना**: व्याख्याओं, उदाहरणों, दोहरावों, मुहावरों, लोकोक्तियों, अलंकारों, कथाओं आदि को छोड़ना
- **उपयुक्त आकार में सार**: लगभग एक तिहाई शब्दों में सार

यह जानना ज़रूरी है

- सरकारी पत्रों का सार-लेखन करते समय सबसे पहले क्रम सं., अधिकारी का पद नाम, संबंधित विभाग/मंत्रालय, पत्र सं. तथा दिनांक का उल्लेख किया जाता है।
- सार लिखने के बाद यह भी अवश्य देख लेना चाहिए कि कोई महत्त्वपूर्ण बिंदु छूट तो नहीं गया है अथवा कोई अनावश्यक बात तो नहीं लिख दी गई।
- सरकारी कार्यालयों में सार-लेखन का विशेष महत्त्व है। वहाँ अनेक सहायक, अधिकारी, विभाग आदि होते हैं, अत: समय बचाने के लिए सहायक पत्रों का सार तैयार करता है।
- फ़ाइल पुरानी हो जाने पर प्राय: पूरी फ़ाइल के महत्त्वपूर्ण बिंदु भी सबसे ऊपर लिख दिए जाते हैं।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- बात को कम शब्दों में कहने-लिखने तथा भाषा में कसावट लाने के लिए भाषा में वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द होते हैं। सार-लेखन के समय वाक्यांशों के स्थान पर एक शब्द का ही प्रयोग करें, जैसे:
  - जिसे क्षमा न किया जा सके=अक्षम्य
  - जिसे कोई जीत न सके=अजेय
  - जो काम से जी चुराता है=कामचोर आदि।

योग्यता बढ़ाएँ

- पाठ में दिए गए अभ्यास अवश्य कीजिए।
- देखी गई फ़िल्म, सुने गए किस्से-कहानियों को संक्षेप में कहने का प्रयास कीजिए।
- समाचारपत्र के समाचारों, लेखों आदि के सार-लेखन का प्रयास कीजिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- सार-लेखन के उद्देश्य पर ध्यान दीजिए।
- सार-लेखन के विभिन्न क्षेत्रों के विषय में जानिए।
- सार-लेखन की प्रक्रिया को बार-बार पढ़िए और समझिए।
- वाक्यांशों के लिए एक शब्द के प्रयोग का निरंतर अभ्यास कीजिए।
- पाठ में दिए गए अनुच्छेदों का सार कई-कई बार लिखिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   सार-लेखन के लिए क्या आवश्यक नहीं है–

   (क) अनावश्यक सामग्री का त्याग ( )

(ख) मूल बिंदु का चयन ( )

(ग) मुख्य बिंदुओं को क्रम देना ( )

(घ) सूक्तियों का सुंदर उपयोग ( )

2. 'सार-लेखन' और 'भाव-पल्लवन' में मुख्य अंतर लिखिए।

3. बात को कम शब्दों में कहने और भाषा में कसावट लाने के लिए क्या आवश्यक है– लिखिए।

4. सरकारी कार्यालयों में सार-लेखन का विशेष महत्त्व क्यों है– उल्लेख कीजिए।

12

इसे जगाओ

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना-लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• आत्मीयतापूर्ण संबोधन • बातचीत की शैली, • उपदेशपरक भाषा	• कविता	• 'सोना' और 'जागना' का प्रतीकार्थ	• जीवन में सजगता और समय-नियोजन के संदर्भों को जानना

मूल भाव

'इसे जगाओ' कविता समय पर सजग-सचेत रहने और कार्य करने का संदेश देती है। इस संदेश की अभिव्यक्ति के लिए कवि ने प्रकृति का सहारा लिया है। 'जागने' और 'सोने' का प्रतीक रूप में उपयोग किया है। इन सबसे यह कविता सुंदर एवं भावपूर्ण बन पड़ी है। जो लोग सोए हैं अर्थात् सजग एवं सचेत नहीं हैं, उन्हें जगाने के लिए यानी सजग बनाने के लिए कवि सूरज, पवन, पक्षी से बहुत ही आत्मीयतापूर्ण आग्रह करता है। इन तीनों से आग्रह करने का कारण यह है कि ये तीनों ही गतिशीलता और सकर्मकता के प्रतीक हैं। कवि चाहता है कि सभी इनकी तरह बनें। कवि ने यह संदेश भी दिया है कि सजग रहने की सार्थकता तभी है, जब समयानुसार सजग हों। समय निकल जाए, तो भागकर उसे पकड़ा नहीं जा सकता। समय निकल जाने पर भागने की अपेक्षा समयानुसार चलना ही बेहतर है।

मुख्य बिंदु

- कवि ने सूरज, हवा और पंछी को मनुष्य की तरह मानकर आत्मीय भाव से संबोधित किया है।
- आत्मीय भाव से संबोधन के पीछे यह आग्रह है कि समय के साथ न चलने वाले आदमी का सच्चाई से परिचय कराया जाए और उसमें जागृति उत्पन्न हो।
- 'जगाना', 'हिलाना' और 'चिल्लाना' सोए हुए व्यक्ति को जगाने के तरीके हैं। सोए हुए व्यक्ति को जगाने के लिए सूरज से जगाने, हवा से हिलाने और पंछी से चिल्लाने के लिए कहना कविता के सौंदर्य को बढ़ाता है।
- सजग होना तभी सही कहा जाएगा, जब ठीक समय पर सजग हों। समय निकल जाने पर सजग होने से पछतावे के अतिरिक्त कुछ और हासिल नहीं होता।
- कभी-कभी देर से सजग होने वाला व्यक्ति हड़बड़ी में भागता है, जिससे अनेक तरह के संकट उत्पन्न हो सकते हैं।
- घबराकर भागने और तेज़ गति से चलने में अंतर है। तेज़ गति का अर्थ है—सही अवसर पर सचेत होना।

आइए समझें

- सूर्य, पवन और पक्षी प्रकृति के अंग हैं और मनुष्य के साथी भी। प्रकृति अपने नियमित कार्यकलापों के माध्यम से मनुष्य को भी जागकर कार्य करने की प्रेरणा देती है; इसीलिए जीवन में सोए हुए

प्राणी को जागने की प्रेरणा देने के लिए कवि ने प्रकृति को आधार बनाया है।

- सपने देखना आवश्यक है, क्योंकि इससे बड़े उद्देश्य निर्धारित होते हैं और उन्हें प्राप्त भी किया जाता है। लेकिन, सपनों में खोए रहना निष्क्रियता की ओर संकेत करता है। शेखचिल्ली और मुंगेरीलाल सपनों में खोए रहते थे, इसलिए हँसी के पात्र बने।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- **प्रतीकार्थ :** जगाओ=सजग करो

  सोना=ज्ञान व चेतना का न होना

- **विशेष अर्थ :** सपनों में खोए रहना=व्यर्थ की कल्पनाओं में डूबे रहना।

  बेवक्त जागना=समय निकल जाने पर सजग होना।

  सच से बेख़बर=जगत की प्रत्येक बात से अनजान होना, इस जीवन-सत्य को न जानना कि समय पर सजग रहने से ही उद्देश्य की प्राप्ति होती है।

- आम बोलचाल की भाषा है।
- एक ही अर्थ का बोध कराने वाले शब्दों को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। जैसे–'फूल' को पुष्प, सुमन या कुसुम भी कहते हैं, इसलिए ये सभी समानार्थी या पर्यायवाची शब्द हैं।

सराहना-बिंदु

- बातचीत की शैली में तथा कम और आसान शब्दों में गंभीर बात कहने की कला बहुत समर्थ कवियों में ही पायी जाती है। इस कविता में भी यह कला देखी जा सकती है।
- कवि ने प्रगति या तरक्की का अर्थ बहुत सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया है। प्रगति हड़बड़ाहट में भागने से नहीं होती, बल्कि विचारपूर्वक स्थितियों को समझकर, उनका आकलन कर सही दिशा में प्रयास करने से होती है। इसके लिए आदमी को निरंतर सजग और सक्रिय रहने की आवश्यकता है।
- जगाने, हिलाने और चिल्लाने के रूप में जगाने के तरीकों के लिए क्रमशः सूर्य, पवन और पक्षी से अनुरोध करना कविता के सौंदर्य को बढ़ाता है।
- कवि ने 'घबरा के भागने' और 'क्षिप्र गति' में बड़े सुंदर ढंग से अंतर किया है।

योग्यता बढ़ाएँ

- हिंदी की अनेक कविताओं और कहावतों में चेतना, ज्ञान तथा सच को पहचानने का अर्थ देने के लिए 'जागना' शब्द का प्रयोग किया गया है, इनमें से कुछ को इकट्ठा कीजिए।
- प्रातःकाल को 'ब्राह्ममुहूर्त' भी कहा जाता है, इस समय होने वाली प्राकृतिक और मनुष्य समाज की गतिविधियों को ध्यान से देखिए।
- आपके घर में अनेक सदस्य होंगे। उनमें से कुछ तो खुद ही सोकर उठ जाते होंगे और कुछ को जगाया जाता होगा। विभिन्न सदस्यों को जगाने के तरीकों पर ध्यान दीजिए।

यह जानना ज़रूरी है

- सूरज सभी को जीवन देने वाला है। वह हमें प्रकाश तथा ऊष्मा भी देता है। सूरज के उदित होने पर मनुष्य और पशु-पक्षी, पेड़-पौधे सक्रिय हो जाते हैं।
- हमें जीवन देने वाला दूसरा तत्त्व है– हवा। हवा स्वयं तो गतिशील और सक्रिय है ही, दूसरों को भी सक्रिय करती है।
- पक्षियों का कलरव भी प्रकृति की जीवंतता का लक्षण है। पक्षियों का चहचहाना हम सभी को आकर्षित करता है।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- एक बार पूरी कविता को ध्यानपूर्वक पढ़कर मूल भाव ग्रहण कीजिए।
- काव्य-सौंदर्य पर विशेष ध्यान दीजिए।
- प्रतीकार्थ और विशेष अर्थ रखने वाले शब्दों को अर्थ सहित याद रखिए।
- पाठ में दिए गए प्रश्नों को हल कीजिए और क्रियाकलापों को भी अवश्य कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. कभी-न-कभी आपके साथ भी यह हुआ होगा कि सही समय पर सजग न रहने पर आप हड़बड़ाकर किसी कार्य में लगे होंगे, इसका क्या परिणाम हुआ?
2. क्या आपने अपने आस-पास पक्षियों का कलरव सुना है? दिन के किस समय पक्षी अधिक सक्रिय होते हैं– उल्लेख कीजिए।
3. 'घबरा के भागने' और 'क्षिप्र गति' में कवि ने किस प्रकार भेद किया है?
4. कवि पवन से कहता है कि सोए हुए व्यक्ति को हिलाओ। पवन से ही यह कहना क्यों उपयुक्त है–कारण बताते हुए उल्लेख कीजिए।
5. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प अलग ढंग का है–

   (क) सपनों में खोये रहना ( ) (ख) सच से बेख़बर रहना ( )

   (ग) बेवक्त जागना ( ) (घ) सपने देखना ( )

13

सुखी राजकुमार

(कहानी)

बोलना/सुनना	पढ़ना	लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• शिष्टाचार की भाषा • आत्मीयतापूर्ण संबोधन • आग्रहपूर्ण वाक्य	• गद्य • संवादात्मक और किस्सा गोई शैली की कहानी	• दूसरों को समझाने और उन्हें क्रियाशील करने वाला लेखन, कहानी	• अपने पक्ष में निर्णय लेने के लिए बाध्य करने वाली वाक्य-संरचना • चित्रात्मक भाषा • कम शब्दों में कहने की कला • सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य	• सीमित और व्यापक अनुभव के आधार पर व्यवहार में अंतर का स्पष्टीकरण • अपरिचय और परिचय की स्थितियों में व्यवहार का अंतर बताना • रूप और कर्म के सौंदर्य पर सोचना और लिखना

सारांश

'सुखी राजकुमार' दरअसल एक प्रतिमा है, जो शहर के बीचों-बीच स्थापित है। सोने से मढ़ी और नीलम तथा लाल जड़ी प्रतिमा के सौंदर्य से लोग अभिभूत हैं। एक दिन एक गौरैया शहर में आती है और उस प्रतिमा के नीचे ठहरने का निश्चय करती है। उसके ऊपर एक बूँद गिरती है, तो उसे पता चलता है कि सुखी राजकुमार रो रहा है। राजकुमार उसे बताता है कि जब वह जीवित था, तो उसका जीवन विलासपूर्ण था और वह दुख जैसी चीज़ से परिचित नहीं था, किंतु अब वह शहर के बीच ऊँचाई पर स्थापित होने के कारण अपने शहर में बसे लोगों के दुखों को देख सकता था और उनके दुख से दुखी था। इस क्रम में वह पहले एक मेहनती स्त्री और उसके बीमार बच्चे का ज़िक्र करता है तथा गौरैया से अपनी तलवार की मूठ में जड़ा लाल निकालकर उसे दे आने के लिए कहता है। गौरैया अपने नील देश जाने के कार्यक्रम में मस्त है और उसे बच्चों से स्नेह नहीं है, क्योंकि पिछले वसंत में दो बच्चों ने उसे ढेले मारे थे। मगर, राजकुमार को उदास देखकर वह उसकी बात मान लेती है। बच्चे के प्रति उत्पन्न सहानुभूति के वश वह उस पर अपने पंखों से हवा झलती है। रात को जब वह पुनः सपनों के देश जाने को प्रस्तुत होती है, तो राजकुमार उससे एक गरीब तरुण लेखक की मदद हेतु अपनी एक आँख का नीलम दे आने के लिए कहता है। राजकुमार के त्याग से गौरैया करुण हो उठती है। अगली बार जब वह नील देश की सुंदरता का बयान करते हुए राजकुमार से विदा माँगती है, तो राजकुमार उससे एक गरीब लड़की की मदद के लिए अपनी दूसरी आँख वाला नीलम दे आने का आग्रह करता है। राजकुमार के इस उत्सर्ग से प्रभावित गौरैया अपना कार्यक्रम रद्द कर देती है। राजकुमार अब अंधा है, अतः गौरैया शहर-भर की ख़बरें उसे सुनाती है, विशेषतः गरीब, दुखी और परेशान लोगों की ख़बरें। और, राजकुमार के कहने पर वह प्रतिमा के स्वर्णपत्र निर्धन लोगों में बाँटती रहती है। प्रतिमा अब बिल्कुल मनहूस दिखने लगती है, पर शहर के बच्चों के चेहरों पर गुलाबी आभा आने लगती है। बढ़ती ठंड में गौरैया वहीं– प्रतिमा के पैरों पर– प्राण त्याग देती है। अगले दिन मेयर अपने सभासदों के साथ घूमते हुए उस प्रतिमा को हटाने और अपनी प्रतिमा लगाने का प्रस्ताव करता है। प्रतिमा और गौरैया की लाश को कूड़ेखाने में फेंक दिया जाता है। ईश्वर के आदेश पर देवदूत उन्हें ले जाते हैं और उन्हें स्वर्ग में हमेशा के लिए स्थान दे दिया जाता है।

मुख्य बिंदु

- प्रतिमा के सौंदर्य की चर्चा का आधार सोना, नीलम और लाल होना।
- रूप, सुख, वैभव, ऐश्वर्य में ही सौंदर्य की तलाश।
- महल में अपनी मौजमस्ती में डूबे राजकुमार का दुख के बारे में न सोचना।
- अनुभवों का विस्तार होने पर करुणा की भावना उत्पन्न होना। समानुभूति।
- भावना को क्रियारूप में परिणत करना–दूसरों के हित में त्याग करना। लाल, नीलम और सोने के पत्रों यानी अपने अंगों और प्रशंसनीय चीज़ों का बलिदान।
- गौरैया का अपने सपनों और सुख-सुविधाओं की दुनिया से बाहर आना।
- राजकुमार के गुणों और कर्मों से प्रभावित होकर खुद भी उन कामों में लगना।
- राजकुमार के साथ-साथ गौरैया का भी आत्मोत्सर्ग।
- मेयर तथा सभासदों का शहर की सुंदरता के लिए बाहरी रूप-सौंदर्य को ही देखना।
- राजनीतिज्ञों की चापलूसी और स्वार्थपरता।
- ईश्वर की दृष्टि में राजकुमार और गौरैया के बलिदान का महत्त्व।

आइए समझें

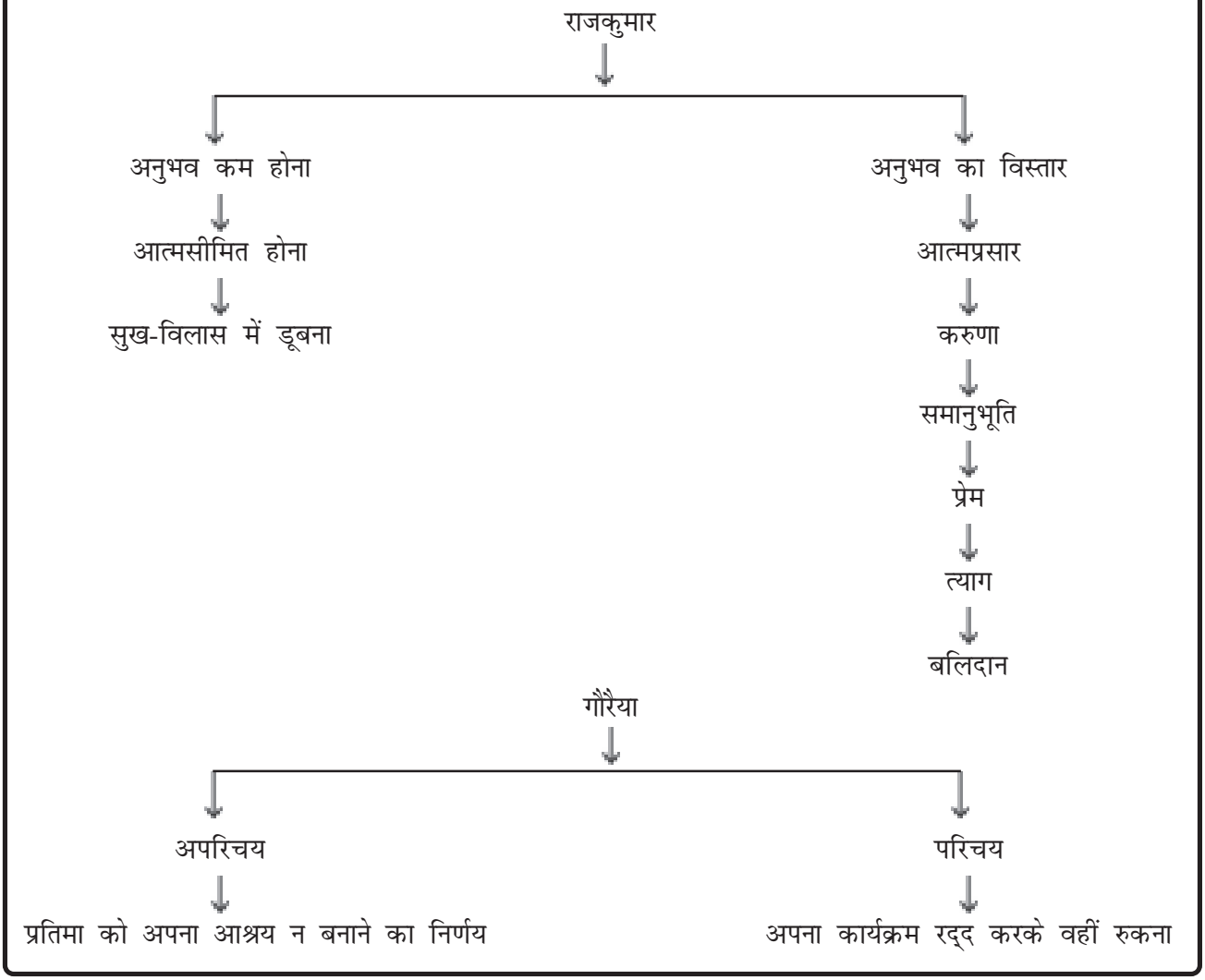

गौरैया–अपरिचय→सद्गुण के कारण लगाव→त्याग से प्रभावित होकर प्रेम→बलिदान से प्रभावित होकर प्रेम का प्रगाढ़ होना→आत्मोत्सर्ग से प्रभावित होकर राजकुमार के कार्यों के प्रति समर्पण→स्वयं समानुभूति का अनुभव→प्राणोत्सर्ग

सौंदर्य कहाँ है?

आम लोगों के लिए : प्रतिमा के रूप और कीमत में

जीवित राजकुमार के लिए : सुख-सुविधाओं एवं ऐश्वर्य-विलास में

प्रतिमा के लिए : मनुष्य-जीवन की विसंगतियों के बीच जीवन की इच्छा में

गौरैया के लिए : पहले रहस्य, रोमांच और अद्भुत होने में, बाद में त्याग और बलिदान में

ईश्वर की दृष्टि में : कर्म में

आपकी दृष्टि में : ? .....

- गौण पात्रों के ज़रिए वातावरण/परिवेश को उभारा गया है।
- धनी-वर्ग द्वारा गढ़ी गई सौंदर्य और सुख की परिभाषा के प्रश्न को कहानी में स्थितियों के वैषम्य (कन्ट्रास्ट) के ज़रिए उभारा गया है।
- कहानी को नेरेशन (वर्णन) की अपेक्षा संवादों के ज़रिए बढ़ाया गया है, जिससे कथानक में चुस्ती आ गई है।
- यह कहानी ऑस्कर वाइल्ड ने अंग्रेज़ी में लिखी थी, जिसका अनुवाद करते हुए धर्मवीर भारती ने अंग्रेज़ी के शब्द-प्रयोग, मुहावरों और विशिष्ट अभिव्यक्तियों को हिंदी भाषा और संस्कृति के अनुकूल ढाल दिया है।

कहानी का संप्रेष्य

- कहानी में समय और स्थान का उल्लेख न करके हर उस जगह की बात की गई है, जहाँ–
  - (क) नगर धनी और निर्धन वर्ग में बँटे हैं;
  - (ख) राजनीतिज्ञ स्वार्थी है;
  - (ग) कलाविज्ञ रूप-सौंदर्य देखते हैं;
  - (घ) आम लोग कीमत से चीज़ों का मूल्यांकन करते हैं;
  - (ङ) अभिजात और धनी लोग आत्मकेंद्रित हैं;
  - (च) कर्मचारी मालिकों के अनुसार व्यवहार करते हैं।
- ऐसी व्यवस्था में सबसे बदतर स्थिति बच्चों की होती है, जो भविष्य हैं।
- भविष्य की भयावहता की ओर ध्यानाकर्षण।
- बाह्य एवं आंतरिक सौंदर्य का प्रश्न–कहानीकार मानवीय गुणों और कर्मों के सौंदर्य की सराहना के लिए प्रेरित करता है :
  - (क) राजकुमार की प्रतिमा जब तक सोने से मढ़ी और रत्नजड़ित है, सभी उसकी प्रशंसा करते हैं;
  - (ख) इनका दान कर देने के बाद मेयर, सभासद और कलाविज्ञ उसे मटमैला और मनहूस बताकर हटाते हैं;
  - (ग) गौरैया राजकुमार के कुरूप होने की प्रक्रिया में उसके कर्म-सौंदर्य को देखते हुए उससे क्रमशः अधिक प्रेम करने लगती है; यहाँ तक कि ठंड में प्राण त्याग देती है।
  - (घ) ईश्वर द्वारा राजकुमार और गौरैया को स्वर्ग में स्थान देना।
- कहानी में एक विडंबना का उद्घाटन–मानव-समाज में मानवीय गुणों की उपेक्षा का भाव।

  स्पष्टीकरण :
  - (क) इसकी पुष्टि इस बात से कि राजकुमार की मानवीय संवेदनाएँ तब नहीं जागती हैं, जब वह जीवित होता है;
  - (ख) मूर्ति रूप में इन संवेदनाओं के प्रकट होने को मानवेतर प्राणी गौरैया ही समझती है;
  - (ग) मेयर आदि द्वारा कूड़े में फेंका जाना और मानवेतर देवदूतों द्वारा सबसे मूल्यवान समझा जाना;
  - (घ) ईश्वर द्वारा स्वर्ग में सदा के लिए स्थान देना।

यह भी जानिए

- 'सुखी राजकुमार' कहानी को पढ़ने में 20-25 मिनट का समय लगता है। यह कहानी के लिए आदर्श समय-सीमा है।
- 'शतरंज के खिलाड़ी' में भूमिका द्वारा बात स्पष्ट की गई है, जबकि इस कहानी में उपसंहार द्वारा।
- गौरैया के चरित्र में निरंतर परिवर्तन आता है। यह परिवर्तन राजकुमार और उसमें निहत संवेदनाओं-मूल्यों के कर्म में परिवर्तित होने के कारण है।
- व्यक्ति से परिचय उसके प्रति लगाव पैदा करता है। उसके गुण उसके प्रति प्रेम, कर्म उसके प्रति निष्ठा और उसका त्याग व बलिदान उन सद्गुणों एवं कर्मों के प्रति समर्पण का भाव उत्पन्न करते हैं। गौरैया का चरित्र इसी तरह विकसित होता है।
- कहानी में दो ही मुख्य पात्र हैं–राजकुमार और गौरैया।
- गौण पात्र हैं–राजकुमारी की अंगरक्षिका, बीमार बच्चा, तरुण कलाकार, रोती हुई लड़की, बच्चे, मेयर और उसके सभासद, कलाविज्ञ, देवदूत और ईश्वर।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- कहानी की भाषा में चित्रात्मकता है। यह दो प्रकार से है–
  - (i) स्थितियों अथवा व्यक्ति-विशेष की दशा बताने के लिए ब्यौरे देकर;
  - (ii) ध्वन्यात्मक-दृश्यात्मक शब्दों के प्रयोग से।
- वाक्य के भेद– सरल वाक्य; जटिल वाक्य–संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य
- सरल वाक्य–एक उद्देश्य और एक ही विधेय (एक ही समापिका क्रिया)
- संयुक्त वाक्य–दो समानांतर वाक्यों से बना वाक्य, जो समुच्चयबोधक अव्ययों–और, तथा, एवं, किंतु, परंतु आदि– से जुड़ा होता है।
- मिश्र वाक्य–दो या दो से अधिक वाक्यों से बना वाक्य, पर उसमें एक उपवाक्य प्रधान होता है और दूसरा आश्रित।

योग्यता बढ़ाएँ

- अपना काम करवाने के लिए राजकुमार के संवादों में आदेश का स्वर नहीं, बल्कि अनुरोध की विनम्रता और आग्रह की आत्मीयता है– इस पर ध्यान दीजिए।
- अनुनय, याचना, अनुरोध, आग्रह के भावों को व्यक्त करने वाले वाक्यों पर ध्यान दीजिए और ऐसे नए वाक्यों को लिखने का अभ्यास कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   'सुखी राजकुमार' कहानी में महत्त्व दिया गया है–

   (क) मानवीय गुणों को

   (ख) कलाप्रियता को

   (ग) प्राकृतिक सौंदर्य को

   (घ) धन व वैभव को

2. 'अच्छी संगत से सद्गुणों का विकास होता है'–इस विषय पर 20-25 शब्दों में अपने विचार लिखिए।
3. 'सुखी राजकुमार' कहानी का कौन-सा अंश आपके हृदय को प्रभावित करता है, 25-30 शब्दों में तर्कसहित अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. 'हमारे समाज में ऐसे बहुत से जीवित लोग हैं, जिनका हृदय सचमुच जस्ते का है'– उदाहरण देते हुए 25-30 शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

14

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना-लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• आत्मीयतापूर्ण उद्‌बोधन • प्रश्न-शैली में सुझाव • संवेदनशीलता का प्रचार	• प्रश्न-शैली की कविता • विनम्रता और आग्रह की भाषा • नामधातु क्रियाएँ	• मानवीकरण अलंकार	• पर्यावरण-संरक्षण में भूमिका का निर्धारण

मूल भाव

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' प्रश्न-शैली में लिखी गयी पाठक को संबोधित कविता है। कविता की अंतिम दो पंक्तियों को छोड़ दें, तो यह शैली पूरी कविता में मिलती है। कवयित्री वस्तुत: प्रश्न नहीं करती; प्रश्नों के बहाने पेड़ों, नदियों, पानी, पहाड़, हवा और इन सबको जगह देने वाली पृथ्वी के भय, दुख और यातना को सुनने, देखने, सोचने, महसूस करने और उनका दुख बाँटने का सुझाव रखती है। कवयित्री ने इन सबको संकट में उसी प्रकार व्यवहार करते दिखाया है, जैसे मनुष्य करता है; इसलिए इस कविता में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। मानवीकरण के कारण यह कविता पाठक को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाती है। कविता की अंतिम दो पंक्तियों में मनुष्य होने की वास्तविकता को भी व्यक्त किया गया है। कवयित्री के अनुसार हम सब मनुष्य तभी कहलाएँगे, जब पृथ्वी और उसे सौंदर्य प्रदान करने वाले, साथ ही हमें जीवन देने वाले–पेड़ों, नदियों, पहाड़ों, हवा के दुख को समझकर इनकी रक्षा करेंगे। इस प्रकार यह कविता पर्यावरण का संरक्षण करने के लिए प्रेरित करने वाली कविता है।

मुख्य बिंदु

- कविता में घटते वृक्ष, घटती हरियाली और मानव-जीवन पर इसके विनाशकारी प्रभाव के प्रति चिंता व्यक्त की गई है।
- उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण आजकल लोग ज़्यादा-से-ज़्यादा चीज़ों को भोग लेने के लिए तत्पर हैं, इस स्वार्थी मनोवृत्ति का प्रभाव पेड़ों पर पड़ रहा है।
- पेड़ों का संकट पूरी मनुष्य जाति का संकट है, इसलिए हमें इसे अनुभव करना चाहिए और इसे दूर करने के उपाय भी करने चाहिए।
- नदियाँ धरती की जीवन-रेखा हैं। तरह-तरह के प्रदूषण और कूड़े-गंदगी के कारण वे गंदे नाले में परिवर्तित हो रही हैं।
- किसी भी चीज़ का उपयोग करते समय यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि उस चीज़ पर दूसरों का भी हक है।
- यह हमारा कर्त्तव्य है कि नदियों को साफ़ रखें, सूखने से बचाएँ। जल के अन्य स्रोतों को बढ़ावा

दें। जब भी जल का उपयोग करें, ऐसे लोगों की चिंता भी करें, जिन्हें आज भी पानी सुलभ नहीं है।

- पहाड़ धरती की रक्षा के लिए अनिवार्य हैं, इसलिए इन्हें 'भूधर' कहा जाता है। आज ऊँची-ऊँची इमारतों के निर्माण के लिए पहाड़ों को नष्ट किया जा रहा है, इससे आने वाले दिनों में धरती पर संकट बढ़ सकता है। हमें इस संकट को समझकर इसे दूर करने के प्रयास करने चाहिए।
- कवयित्री ने हवा को घर के पिछवाड़े ख़ून की उल्टियाँ करते दिखाया है। इसका आशय यह है कि हवा के निरंतर प्रदूषित होते जाने के कारण भयंकर रोग बढ़ रहे हैं। कविता में हवा को प्रदूषण से बचाने का आग्रह किया गया है।
- पेड़ों, पहाड़ों, नदियों आदि के कारण पृथ्वी सुंदर और युवा बनी रहती है। यदि ये सब नष्ट होते हैं, तो पृथ्वी बूढ़ी ही लगेगी! इन सबकी रक्षा करके हम पृथ्वी को असमय के बुढ़ापे से बचा सकते हैं, यह हमारा कर्त्तव्य है। ऐसा न करके हम अपने मनुष्य होने की सार्थकता भी सिद्ध नहीं कर पाएँगे।

आइए समझें

- साहित्य में कल्पना का उपयोग किसी-न-किसी सत्य को कहने के लिए किया जाता है। इस कविता में पेड़ों, नदियों, पहाड़, पत्थरों, हवा और पृथ्वी के परेशान और दुखी होने की कल्पना की गई है। यह कल्पना नहीं, हमारे समय की सच्चाई है। हम इन प्राकृतिक संसाधनों को लगातार नष्ट कर रहे हैं और यह नहीं समझ पा रहे हैं कि ऐसा करके खुद को ही नष्ट कर रहे हैं। कवयित्री ने प्राकृतिक संसाधनों के दुख को महसूस किया और स्वयं भी दुखी हुई। साथ ही, वह सभी से इस दुख को महसूस करने के लिए आग्रह करती है।
- प्राय: प्रकृति के सौंदर्य को व्यक्त करने के लिए उसका मानवीकरण किया जाता है। इस कविता में प्रकृति पर आए संकट को व्यक्त करने और उसका अनुभव कराने के लिए मानवीकरण किया गया है।

यह जानना ज़रूरी है

- पेड़, नदी, पहाड़, हवा आदि को मिलाकर पर्यावरण बनता है। 'पर्यावरण' शब्द 'परि' और 'आवरण' से बना है, जिसका अर्थ है–हमारे आस-पास की प्राकृतिक स्थिति। पर्यावरण प्रकृति का अमूल्य उपहार है।
- अपनी संतुलित ज़िंदगी के लिए मनुष्य पेड़-पौधों, जल, वायु, जीव-जंतुओं, पर्वत आदि पर निर्भर है। अधिक से अधिक सुविधाओं के लोभ में वह इनका अंधाधुंध दोहन करता आ रहा है। ऐसा करके वह प्राकृतिक आपदाओं को न्योता देता है।
- ऐसा नहीं है कि सभी लोग प्रकृति का दोहन ही कर रहे हैं। हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो प्रकृति के कष्ट को महसूस करते हैं। वे सही अर्थों में मनुष्य हैं। 'चिपको आंदोलन' का नारा है–

  क्या हैं जंगल के उपकार–मिट्टी, पानी और बयार।

  मिट्टी, पानी और बयार-ज़िंदा रहने के अधि कार।।
- **पेड़ों के लाभ**–ऑक्सीजन के बड़े स्रोत; ज़मीन को उपजाऊ, जल-चक्र के नियमन और भू-जल का स्तर बनाए रखने में सहायक; फूल-फल देते हैं, जैव-विविधता बनाए रखते हैं; छाया, ठंडक देने वाले; धूल, प्रदूषण आदि से बचाने वाले।
- पौधारोपण करके बंजर हुई धरती को फिर से हरा-भरा बनाया जा सकता है। जल-संरक्षण से पानी की कमी भी दूर की जा सकती है। लेकिन, यदि पहाड़ एक बार नष्ट हो जाएँ, तो उन्हें फिर से उत्पन्न नहीं किया जा सकता।
- पहाड़ अनेक प्रकार की विनाशकारी हलचलों से धरती की रक्षा करते हैं, इसलिए उन्हें 'भूधर' कहा जाता है।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- **विनम्रता में आग्रह और प्रश्न में प्रस्ताव**

  जैसे–क्या तुम शाम को आ सकते हो? अर्थात् तुम शाम को आ जाओ तो अच्छा है। या मेरी

इच्छा है, मैं चाहता हूँ कि शाम को आ जाओ।

पाठ में–क्या तुमने कभी सुनी है...? सुना है कभी...? आदि।

- कभी-कभी हम किसी से ऐसी बात कहना चाहते हैं, जो सुनने वाले को अच्छी न लगे या हम कहना तो नहीं चाहते पर कहना ज़रूरी है या किसी की कमी बताने, उसकी आलोचना करने, नसीहत देने के लिए कहते हैं। **उपर्युक्त को कहने का ढंग–**''क्षमा कीजिएगा। आपकी यह बात ठीक नहीं।'' (बड़े से)

  ''क्षमा करना! तुम यह ठीक नहीं कर रहे।'' (बराबर वाले या छोटे से)

  पाठ में–अगर नहीं, तो क्षमा करना! मुझे तुम्हारी आदमी होने पर संदेह है!!

- पाठ में एक शब्द आया है–'बतियाना'। 'बात' संज्ञा शब्द है। 'बात' से 'बतियाना' बना। संज्ञा को नाम कहते हैं। यहाँ संज्ञा शब्द 'बात' का प्रयोग क्रिया की 'धातु' के रूप में हुआ है, अत: यह 'नामधातु' क्रिया है।

  ऐसे ही अन्य शब्द–धकियाना, लतियाना, हथियाना आदि।

सराहना-बिंदु

- प्रश्न-शैली के माध्यम से कुछ सुझाव व्यक्त करने के कारण कविता प्रभावशाली बनी है।
- **मानवीकरण**

  जैसे–पेड़ों को सपनों में भी आक्रमण करती कुल्हाड़ियाँ दिखती हैं और वे भय से चीत्कार कर उठते हैं; कुल्हाड़ियों के वार से पेड़ की हिलती टहनियों को बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ के रूप में देखना; नदियों का एकांत में मुँह ढाँपकर रोना; विस्फोट के कारण मौन समाधि लिए पहाड़ के सीने का दहलना; हथौड़ों की चोट से पत्थरों का चीख़ना; प्रदूषण के कारण हवा द्वारा ख़ून की उल्टियाँ करना–

  इस सबके कारण पृथ्वी का बूढ़ी होकर गुमसुम, दुखी होना।

- प्रश्न-शैली, मानवीकरण, दृश्यात्मक शब्दों और विनम्रता के लहज़े के कारण यह कविता प्रभाव छोड़ने और संवेदनशीलता बढ़ाने में सफल है।
- सभी प्राणियों में मनुष्य विशिष्ट है, उसके पास बुद्धि, विवेक-शक्ति है। संवेदनशील होना मनुष्य का कर्त्तव्य है। ये सब बातें कविता में याद दिलाई गई हैं।
- भावों को व्यक्त करने के लिए कम-से-कम शब्दों का उपयोग।
- भाव विशेष की अभिव्यक्ति करने वाले शब्द–चीत्कार, धमस, दहलना, चीख़, गुमसुम।

योग्यता बढ़ाएँ

- पर्यावरण-संरक्षण के लिए किए गए उपायों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
- दूसरे व्यक्ति को संवेदनशील बनाने के लिए 'मानवीकरण' का उपयोग कीजिए।
- सुनने वाले की विनम्रतापूर्वक आलोचना करने के ढंग का कौशल विकसित करने के लिए कविता में आए ऐसे अंशों पर ध्यान दीजिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- पहले एक बार पूरी कविता पढ़कर मूल भाव ग्रहण कीजिए।
- सुनने, देखने, धमस, सोचने, महसूस करने, बतियाने का संबंध किन-किन से या किन स्थितियों से है–इस पर ध्यान दीजिए।
- 'पृथ्वी के दुख' किन्हें कहा गया है–विचार कीजिए।
- 'आदमी' होने के लक्षणों का विवेचन कीजिए।
- अपने देश में पर्यावरण-संरक्षण के लिए किए गए उपायों की खोज कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. पाठ के आधार पर मानवीकरण और संवेदनशीलता की संबद्धता पर 20-25 शब्दों में टिप्पणी लिखिए।

2. अपने क्षेत्र में जल-संरक्षण के लिए किए गए किसी एक प्रयास का उल्लेख कीजिए।

3. हरी-भरी प्रकृति को देखकर आपको कैसा लगता है? 20-25 शब्दों में लिखिए।

4. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द शेष सभी से भिन्न प्रकार का है–

(क) धमस ( ) (ख) चीत्कार ( )

(ग) बतियाना ( ) (घ) दहलना ( )

(ii) कविता में आए निम्नलिखित शब्द-युग्मों में से कौन-सा असंगत है–

(क) पेड़–चीत्कार ( ) (ख) पहाड़–चीख़ ( )

(ग) बूढ़ी पृथ्वी–दुख ( ) (घ) नदियाँ–रोना ( )

15

अंधेर नगरी

(नाटक)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• संवाद • लोक-संस्कृति संबंधी शब्द-प्रयोग	• नाटक • संवाद	• स्थानीय भाषा • विभिन्न स्थितियों में संबोधनों की पहचान	• विपरीत परिस्थितियों का सामना • विवेक का उपयोग • व्यंग्य एवं आलोचना-क्षमता का विकास

सारांश

नाटक 'अंधेर नगरी' में एक ऐसे नगर का चित्रण है, जहाँ न्याय-अन्याय में फ़र्क नहीं किया जाता। महंत अपने दो चेलों के साथ जिस नगर में पहुँचता है, वहाँ हर वस्तु का भाव 'टके सेर' है। यह देखकर महंत को हैरानी होती है। वह अपने चेलों को तुरंत नगर छोड़ने की सलाह देता है। लेकिन एक चेला गुरु की बात न मानकर उसी नगर में रह जाता है। इस अंधेर नगरी के राजा के राज्य में एक बकरी दीवार से दबकर मर जाती है। फ़रियादी राजा के पास न्याय की आशा लेकर पहुँचता है। राजा के हुक्म के अनुसार बकरी के मरने के लिए ज़िम्मेदार के रूप में क्रमशः कल्लू बनिए, कारीगर, चूने वाले, भिश्ती, कसाई, गड़रिए तथा कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है, लेकिन हर व्यक्ति किसी दूसरे को ज़िम्मेदार बनाकर खुद छूटता जाता है। अंततः गोबरधनदास को पकड़ लिया जाता है। फाँसी के पहले चेला गुरु को याद करता है। महंत आकर गोबरधनदास से गुप्त बातचीत करता है। फिर गुरु चेले में वाद-विवाद होने लगता है। कारण पूछने पर महंत बताता है कि इस शुभ मुहूर्त में जिसे फाँसी होगी, उसे स्वर्ग मिलेगा। यह सुनकर राजा स्वयं फाँसी पर झूलने के लिए तैयार हो जाता है।

मुख्य बिंदु

- यह एक व्यंग्यात्मक नाटक है।
- नाटक के तत्त्व

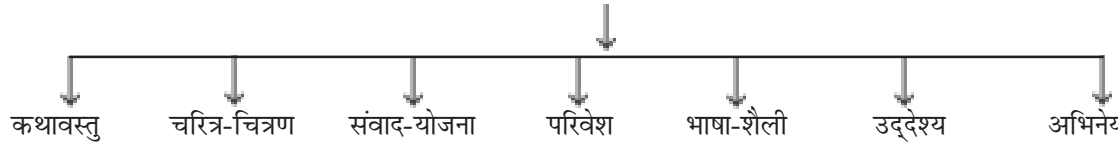

(मंच पर अभिनय किए जाने की क्षमता)

- इस नाटक का उद्देश्य अंग्रेज़ी शासन के अंतर्गत भारत की दुर्दशा को चित्रित करना है।

- अंग्रेज़ों ने अपनी नीतियों से भारत को अंधेर नगरी बना दिया। अंधेर नगरी में न किसी नियम का पालन किया जाता है, न ही कोई जनोन्मुख न्याय-व्यवस्था है।
- इस नाटक के व्यंग्य को स्वाधीन भारत के शासक-वर्ग पर भी लागू किया जा सकता है।
- नगर बाहर से सुंदर तथा अंदर से कुरूप है। ऐसी शासन-व्यवस्था, जहाँ व्यक्ति और वस्तु की कद्र गुणों वेन आधार पर नहीं होती।
- अपने छोटे-मोटे सुखों के कारण व्यवस्था की मनमानी से आँखें नहीं फेरनी चाहिए।
- जो राज धर्म और नीतियों पर आधारित नहीं होता, वह अपने आप नष्ट हो जाता है।

आइए समझें

- इस नाटक में व्यंग्य के माध्यम से शासन की विसंगतियों को बताया गया है।
- यहाँ राजा आत्मकेंद्रित और अन्यायी शासन-व्यवस्था का प्रतीक है, इसलिए उसकी नगरी को अंधेर नगरी कहा गया है।
- अन्यायी राजा के माध्यम से अंग्रेज़ी राज-व्यवस्था की कमियों पर चोट की किया गया।
- जब राजा भ्रष्ट हो जाता है, तो मंत्री, सेठ, अधिकारी, पुलिस आदि भ्रष्ट हो जाते हैं।
- नाटक में लोकभाषा तथा स्थानीय शब्दावली का प्रयोग है। इसकी भाषा खड़ी बोली है, लेकिन ब्रजभाषा का प्रभाव है।
- इस नाटक में छह दृश्य हैं। इनमें जंगल, बाज़ार और राज्यसभा के दृश्य प्रमुख हैं। बाज़ार के दृश्य से तत्कालीन लोक-संस्कृति का पता चलता है।

यह जानना ज़रूरी है

- नाटक में चित्रित शासन-व्यवस्था को वर्तमान संदर्भ में समझना आवश्यक है। राजा-प्रजा का पारस्परिक संबंध न्याय-व्यवस्था पर निर्भर करता है। अगर राजा अन्यायी है, तो प्रजा भी अराजक होती है तथा न्याय ठगा-सा रह जाता है।
- यह नाटक आत्मकेंद्रित, स्वार्थी और अविवेकी शासन-व्यवस्था में रहने वाली जनता की समस्याओं पर लिखा गया है। यह नाटक जनता को शासन की विसंगतियों के प्रति जागरूक बनाता है।
- जो राजा जनता के प्रति संवेदनशील नहीं, उसके राज में सच्चे लोग मारे जाते हैं तथा धूर्त लोग फलते-फूलते हैं।
- अंधेर नगरी का आशय है– ऐसी नगरी, जहाँ तानाशाह की सत्ता है, न्याय का आडंबर होता है और जनता का शोषण किया जाता है। ऐसी नगरी में गुणवान और गुणहीन लोगों में कोई भेद नहीं किया जाता।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

स्थानीय भाषा के शब्द– भिच्छा, टिकस, मुरई, अजीरन, छन, बाजे-बाजे, उपास, न्याव, सोपाड़ी, चाभना, तैंने, दोहाई साइत।

संबोधन

इन संबोधनों और स्थितियों पर ध्यान दीजिए :

(i) बच्चा	–	वत्सलता
(ii) गुरुजी महाराज	–	सम्मान
(iii) बाबा जी	–	आत्मीयता
(iv) महाराज	–	औपचारिकता
(v) क्यों बे	–	अधिकार

नाटक का संप्रेष्य

'अंधेर नगरी' भारतेंदु हरिश्चंद्र का एक व्यंग्यात्मक नाटक है। इसमें अन्यायी शासन-व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर किया गया है। भारतेंदु ने अन्यायी राजा की कल्पना के माध्यम से अंग्रेज़ी राज-व्यवस्था की कमियों पर चोट की है। रचनाकार ने विभिन्न प्रतीकात्मक प्रयोग करके तत्कालीन शासन-व्यवस्था की व्यंग्य रूप में आलोचना की है। न्याय-प्रक्रिया के आडंबर को मनोरंजक तरीके से चित्रित किया गया है।

यह जानना ज़रूरी है

- गोबरधनदास एक ऐसा चरित्र है, जो लालच का शिकार हो जाता है, जिसका दुखद फल उसे मिलता है। गोबरधनदास सुख के लिए गुरु के उपदेश की अवहेलना करता है। वह आम भारतीयों की मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है।
- राजा भोग-विलास में डूबा रहता है। वह आत्मकेंद्रित है। उसे जनता की चिंता नहीं है।
- राजा के सलाहकार वास्तविकता जानते हुए भी राजा की चापलूसी करते हैं।

योग्यता बढ़ाएँ

- नाटक की मूल संवेदना तथा कथ्य को समझकर अपने शब्दों में लिखने का अभ्यास कीजिए।
- कथावस्तु एवं पात्रों को वर्तमान संदर्भ में पुनर्व्याख्यायित करने का प्रयास कीजिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- पाठ को कई बार पढ़िए एवं समझिए।
- महत्त्वपूर्ण संवादों को याद कीजिए।
- व्यंग्य के मर्म को समझकर अपने शब्दों में लिखिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   महंत ने नगर छोड़कर जाने का निर्णय क्यों लिया?

   (क) भिक्षा कम मिलने के कारण

   (ख) पुलिस द्वारा रिश्वत लेने के कारण

   (ग) भावी संकट की आशंका के कारण

   (घ) गोबरधनदास द्वारा निंदा के कारण

2. झूठे इल्ज़ाम में अगर आपका कोई रिश्तेदार गिरफ़्तार हो जाए, तो आप क्या करेंगे– 25-30 शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. अगर आप राजा होते, तो बकरी के मरने का दोषी किसे मानते– 25-30 शब्दों में कारणसहित उत्तर लिखिए।
4. क्या गुणों के आधार पर फ़र्क करना उचित है– 20-25 शब्दों में तर्कसहित अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

16

अपना-पराया

(वैज्ञानिक लेख)

पढ़ना	लिखना	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• आयुर्विज्ञान-संबंधी पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना • कारण-कार्य-संबंध और तर्कप्रधान भाषा का ज्ञान	• तर्काधारित भाषा • पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग • रूपक में प्रस्तुति	• शरीर के अवयवों और उनकी कार्यप्रणाली को समझना और बताना • स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का महत्त्व समझना • टीकाकरण की समुचित जानकारी • स्वास्थ्य-संबंधी सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करना

सार

मानव-शरीर एक किले की तरह है। वह अपने और पराये की यानी अनुकूल और प्रतिकूल की पहचान करना जानता है और प्रतिकूल चीज़ों को यथासंभव बाहर निकाल देने का यत्न करता है। इस यत्न को शरीर की सामान्य सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाएँ कहा जा सकता है। आँसू, छींक, नाक बहना, उल्टी आना ऐसी ही प्रतिक्रियाएँ हैं, जो रोगाणुओं को ऊतकों तक पहुँचने से रोकती हैं। किंतु, कुछ अतिसूक्ष्म विषाणु (वायरस) पतली त्वचा तथा समूची भीतरी परतों को भेदकर भीतर घुस जाते हैं। इनका मुकाबला करने के लिए शरीर की सुरक्षात्मक व्यवस्थाएँ सक्रिय हो उठती हैं। संक्रमण (इन्फ़ेक्शन) की स्थिति में रक्त की श्वेत कणिकाएँ रोगाणुओं से युद्ध करती हैं, जिसमें दोनों पक्षों के सदस्य हताहत होते हैं; इसी को मवाद कहते हैं। यदि रोगाणु विजयी रहे, तो वे ऊतक तरल और फिर रक्त तक पहुँच जाते हैं। रक्त तक पहुँचने से पहले शरीर में गिल्टियाँ बनने लगती हैं, ये शरीर की सुरक्षा चौकियाँ होती हैं, जिनमें भक्षक कोशिकाएँ होती हैं। मगर विषाणुओं का तो ये भी कुछ नहीं बिगाड़ पातीं। ऐसी स्थिति में शरीर में प्रतिपिंडों का निर्माण होता है। इन प्रतिपिंडों के निर्माण के सिद्धांत पर ही चेचक, पोलियो, टिटेनेस, डिफ़्थीरिया, हैजा आदि के टीके बनाए गए हैं। अलग-अलग व्यक्तियों के शरीर के लिए कुछ चीज़ें माफ़िक नहीं होतीं। इसे उस चीज़ से एलर्जी कहा जाता है। ये चीज़ें प्रायः ऐसे प्रोटीन होते हैं, जो उस शरीर के लिए सदैव पराये रहते हैं। कभी-कभी शरीर के भीतर की बागी कोशिकाएँ हद से अधिक बढ़ जाती हैं और कैंसर का रूप ले लेती हैं।

मुख्य बिंदु

- विज्ञान की मूल भावना : कार्य-कारण-संबंध को समझना
- (i) जीव विज्ञान–प्राणियों की शारीरिक संरचना एवं व्यवहार का अध्ययन
  (ii) आयुर्विज्ञान–रोग, रोग के लक्षण, कारण एवं उपचार का अध्ययन
- (i) चेतन पिंड–(क) बाहरी वातावरण से ग्रहण और निस्सृत करना
  (ख) बाहरी वातावरण से अपनी सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील होना

(ii) जड़ पिंड–चेतन पिंड वाले दोनों गुणों का अभाव

ज्ञानेंद्रियाँ

नाम	अंग	कार्य
(i) स्पर्शेंद्रिय	त्वचा	स्पर्श
(ii) दृश्येंद्रिय	आँख	देखना
(iii) घ्राणेंद्रिय	नाक	सूँघना
(iv) श्रवणेंद्रिय	कान	सुनना
(v) स्वादेंद्रिय	जीभ	स्वाद बताना

- ज्ञानेंद्रिय (संपर्क में आई वस्तु का ज्ञान) ⟶ संवेदन तंत्रिकाएँ (ज्ञानेंद्रियों का संदेश मस्तिष्क तक ले जाना) ⟶ मस्तिष्क (सूचना दर्ज करना, पूर्व सूचनाओं के आधार पर विश्लेषण, आदेश देना) ⟶ कर्मेंद्रिय (मस्तिष्क के आदेश का अनुपालन)
- साँस लेना : वायु का नाक द्वारा भीतर फेफड़ों तक पहुँचना–फेफड़ों द्वारा ऑक्सीजन का अवशोषण–कार्बन डाई ऑक्साइड आदि हानिकर गैसों को वापस बाहर फेंकना
- खाद्य पदार्थों के तत्त्व : प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट, वसा, खनिज, लवण
- (i) जीवाणु (बैक्टीरिया)–अत्यंत छोटे सजीव पिंड, जो आँख से नहीं, बल्कि माइक्रोस्कोप से ही देखे जा सकते हैं।
  (ii) रोगाणु–वे जीवाणु, जो शरीर में रोग फैलाते हैं।
  (iii) विषाणु (वाइरस)–विषैले रोगाणु
- अधिकांश जीवाणु तेज़ ताप में जीवित नहीं रह पाते, अतः उबला पानी और पका भोजन प्रायः सुरक्षित होता है।

संक्रमण

(i) शरीर में अनंत कोशिकाएँ (सेल)
(ii) अनेक कोशिकाओं से ऊतकों (टिश्यूज) का निर्माण
(iii) ऊतकों की संख्या भी अनगिनत
(iv) शरीर में पहुँचे रोगाणुओं द्वारा कोशिकाओं एवं ऊतकों का भक्षण
(v) प्रजनन द्वारा रोगाणुओं की वृद्धि
(vi) शरीर का रोगग्रस्त हो जाना

प्रतिरक्षा की सामान्य प्रक्रिया

(i) नहाने से त्वचा पर मौजूद रोगाणुओं से छुटकारा
(ii) (क) नासिका छिद्र के बालों द्वारा अवरोध
(ख) श्लेष्मा में रोगाणुओं का चिपककर बाहर होना
(ग) छींक
(iii) खाँसी के साथ बलगम में समेटकर रोगाणुओं को बाहर करना

(iv) लार द्वारा रोगाणुओं को नष्ट किया जाना

(v) आमाशय में अम्ल द्वारा नष्ट किया जाना

(vi) पानी में घुलकर मूत्र के रूप में बाहर आना

ध्यान दीजिए

(क) सामान्यत: प्रतिरक्षा-व्यवस्था के कारण रोगाणु ऊतकों तक नहीं पहुँचते।

(ख) त्वचा अथवा भीतरी अंगों के कट-फट जाने पर ये ऊतकों के संपर्क में आते हैं।

(ग) विषाणु कटने-फटने की प्रतीक्षा नहीं करते, वे समस्त परतों को भेदकर भीतर घुस जाते हैं।

(घ) यहाँ से दूसरे स्तर की प्रतिरक्षा-व्यवस्थाएँ सक्रिय

दूसरे स्तर की प्रतिरक्षा-व्यवस्थाएँ

(i) शरीर के सभी हिस्सों में रक्त-संचरण

(ii) रक्त में रोगों से लड़ने वाली श्वेत कणिकाएँ

(iii) शरीर के किसी भाग में रोगाणुओं के पहुँचने परस तरफ़ रक्त–प्रवाह बढ़ जाता है।

(iv) श्वेत कणिकाओं का रोगाणुओं से युद्ध

(v) श्वेत कणिकाओं की जीत होने पर मवाद का बाहर निकलना और उस स्थान पर नई त्वचा का आ जाना

(vi) हार-जीत का फ़ैसला न होने पर मवाद का बढ़ते जाना

(vii) श्वेत कणिकाओं को बाहरी मदद (एन्टीसेप्टिक या एन्टीबायोटिक दवाओं) की ज़रूरत

(viii) समय से दवा न ले पाने पर रोगाणुओं का ऊतक तरल में और फिर रक्त में प्रवेश

(ix) रोगाणुओं के ऊतक तरल में पहुँचने से पूर्व एक और प्रतिरक्षात्मक व्यवस्था सक्रिय

तीसरे स्तर की प्रतिरक्षा-व्यवस्था

(i) हाथ, पैर या गले में संक्रमण होने पर क्रमश: बगल, जाँघ या गले में गिलटियाँ फूलना

(ii) इन गिलटियों में भक्षक कोशिकाओं की उपस्थिति, जो रोगाणुओं को खा जाती हैं और ऊतक तरल तक नहीं पहुँचने देतीं।

(iii) यदि रोगाणु इन्हें भी नष्ट कर सके, तो रोगी की दशा गंभीर।

प्रतिपिंड

(i) विषाणु भक्षक कोशिकाओं को नष्ट कर देते हैं।

(ii) ऐसे में इन विषाणुओं के विरुद्ध शरीर में प्रतिपिंडों का निर्माण।

(iii) ये प्रतिपिंड पहले से नहीं होते, उस रोग के संक्रमण पर ही बनते हैं।

(iv) अत: हर बीमारी के लिए अलग-अलग प्रतिपिंड।

(v) थोड़े बीमार होकर ठीक होने के बाद भी ये प्रतिपिंड अलग-अलग समय तक बने रहते हैं।

(vi) पुन: संक्रमण होने पर ये सक्रिय होते हैं और विषाणुओं को नष्ट कर देते हैं।

(v) प्रतिपिडों के इस सिद्धांत के आधार पर रोगों से बचाव के लिए टीकों (वैक्सीन) का निर्माण।

एलर्जी

- प्रोटीन भोजन का आवश्यक तत्त्व
- अलग-अलग पदार्थों में अलग-अलग प्रकार के प्रोटीन
- कुछ प्रोटीन ऐसे भी, जो हर शरीर के अनुकूल नहीं
- ऐसे प्रोटीन के शरीर में पहुँचने पर शरीर उन्हें बाहर फेंकता है और रोग के प्रतिपिंड से भिन्न किस्म के प्रतिपिंड बनाता है।
- पुन: उस प्रोटीन के शरीर में पहुँचने पर इन प्रतिपिंडों से युद्ध, जो कभी-कभी रोग में परिणत
- पित्ती उछलना, ददोरे पड़ना, सूजन, साँस फूलना, दमा आदि एलर्जी के लक्षण

कैंसर

- शरीर में कोशिकाओं का नियमित निर्माण

- कुछ कोशिकाएँ शरीर का अंग होते हुए भी शरीर-विरोधी
- इनके विरुद्ध शरीर में विशेष प्रकार के प्रतिपिंडों का निर्माण
- कभी-कभी इन विद्रोही कोशिकाओं का असामान्य विकास और शरीर इनसे लड़ने में असमर्थ
- विद्रोही कोशिकाएँ, गाँठ या रसौली का रूप धारण कर कैंसर को जन्म देती हैं।

यह भी जानिए

प्रतिपिंडों की समयावधि

(क) फ़्लू या वायरल – कुछ सप्ताह

(ख) चेचक या माता – दस से पंद्रह वर्ष

(ग) टी.बी. या क्षय – उम्र भर

राष्ट्रीय टीकाकरण योजना

टीके	आयु				
	जन्म	6 सप्ताह	10 सप्ताह	14 सप्ताह	9.12 महीने
प्रारंभिक टीके					
बीसीजी	√				
पोलियो दवा	√	√	√	√	
डीपीटी		√	√	√	
हेपेटाइसिस बी		√	√	√	
हैजा					√
बूस्टर दवा					
डीपीटी, पोलियो दवा	16 से 24 माह				
डीटी	5 वर्ष				
टेटिनस टॉक्साइड द्धटीटीऋ	10 वर्ष एवं पुन: 16 वर्ष				
विटामिन ए	9, 18, 24, 30 और 36 महीने				
गर्भवती महिला					
टेटिनस टॉक्साइड : पहला	गर्भधारण के बाद यथाशीघ्र				
टेटिनस टॉक्साइड : दूसरा	पहली बार के 1 महीने बाद				
बूस्टर	3 महीने का अंतर				

महत्त्वपूर्ण व्याकरण.बिंदु

1. भाषा के अनेक प्रकार के प्रयोग–साहित्यिक, राजकाज की भाषा, विज्ञान की भाषा आदि।
2. विज्ञान की भाषा तर्क और प्रयोग पर आधारित।
3. विज्ञान कार्य-कारण-संबंधों को तलाशता है, अत: उसके लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा में वाक्य-संरचनाओं में भी कार्य-कारण-संबंध।
4. प्रत्येक विषय से संबंधित वस्तुओं, संकल्पनाओं, परिभाषाओं और अवधारणाओं के लिए जिन विशेष प्रकार के शब्दों का प्रयोग होता है, वे पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं।
5. एक विषय के पारिभाषिक शब्द प्राय: उसी विषय अथवा मिलते-जुलते विषय में प्रयुक्त।
6. एक विषय के पारिभाषिक शब्द का अर्थ उस विषय के लिए रूढ़ होता है, पर अन्य विषय में भिन्न हो सकता है–

टीका	विज्ञान	प्रसाधन	संस्कृति	साहित्य
	वैक्सीन	तिलक	सगाई	आलोचना

7. हिंदी में प्राय: अंग्रेज़ी शब्दों के लिए प्रतिशब्द के रूप में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण।

8. संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं से शब्द-ग्रहण या फिर उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर नए पारिभाषिक शब्दों का निर्माण।
9. अंग्रेज़ी के अधिक प्रचलित शब्दों का ज्यों का त्यों ग्रहण।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   इंद्रियाँ किसकी सहायता से अपना संदेश मस्तिष्क तक पहुँचाती हैं?

   (क) रक्त की ☐

   (ख) कोशिकाओं की ☐

   (ग) संवेदन-तंत्रिकाओं की ☐

   (घ) लसिका ग्रंथियों की ☐

2. विज्ञान की भाषा में 'एलर्जी' क्या है? उदाहरण सहित 25–30 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
3. 'पहला सुख नीरोगी काया' इस विषय पर 25-30 शब्दों में तर्क सहित अपने विचार लिखिए।

17

बीती विभावरी जाग री

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• गीतात्मक कविता • काव्य में चित्रात्मकता	• कविता • कारक • सराहना • समासयुक्त पदावली	• मानवीकरण, रूपक अनुप्रास और यमक अलंकार • तत्सम शब्दावली	• प्राकृतिक सौंदर्य से लगाव • उद्‌बोधन का नया आयाम

मूल भाव

जयशंकर प्रसाद के इस गीत में प्रकृति के प्रात:कालीन सौंदर्य को अत्यंत मोहक रूपक में प्रस्तुत किया गया है। रात बीतने पर तारे डूब जाते हैं, आसमान में लालिमा छा जाती है, पक्षियों की चहचहाहट और फूलों की न सुनाई पड़ने वाली सरसराहट होती है, शीतल मंद समीर बहने लगता है– कवि ने इनका अत्यंत सुंदर तथा मानवीकृत वर्णन किया है। बात यहीं पर समाप्त नहीं हो जाती। कविता में प्रकृति की इस प्रात:कालीन गतिशीलता का वर्णन एक सखी दूसरी सखी के सामने कर रही है। इस वर्णन के पीछे सखी को भी जागने, सक्रिय होने का संदेश दिया गया है। कवि ने देशवासियों का भी चेतनायुक्त होने का आह्‌वान किया है।

मुख्य बिंदु

- एक स्त्री द्‌वारा अपनी सखी को संबोधन।
- प्रात:काल का मनोहारी चित्रण।
- प्रात:वेला की हलचल का विवरण, जैसे– पक्षियों के समूह का बोलना, पेड़-पौधों का डोलना, लताओं में लगे फूलों का खिलने लगना।
- प्रकृति में गतिशीलता है, पर सखी सो रही है। उसके सोने पर आश्चर्य प्रकट करना और जागने का आह्‌वान।
- स्वाधीनता के लिए सक्रिय होने का संकेत।
- मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास, यमक अलंकार और नाद-सौंदर्य।
- दुरुहतारहित शुद्‌ध साहित्यिक तत्समप्रधान और समासयुक्त भाषा।

आइए समझें

प्रकृति		सखी (मनुष्य)
• बीती विभावरी	अंधकार → प्रकाश	जागरी
• अंबर पनघट....ऊषा-नगरी	निष्क्रियता → सक्रियता	तू अब तक सोई है आली
• खग-कुल...बोल रहा	सन्नाटा → स्वर	अधरों में राग अमंद पिए
• किसलय.....डोल रहा	स्थिरता → गति	अलकों में मलयज बंद किए
• लो यह....रस-गागरी	रिक्तता → रसमयता	आँखों में भरे विहाग री

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- **अलंकार**

  मानवीकरण – 'अंबर पनघट में डुबो रही, ताराघट ऊषा नागरी' और 'लो यह लतिका भी भर लाई मधु-मुकुल नवल रस-गागरी

  – 'अंबर-पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा नागरी' और

  रूपक – 'मधु-मुकल नवल रस गागरी'

  अनुप्रास – 'खग-कुल कुल-कुल-सा' में 'क' और 'ल' वर्णों की आवृत्ति

  यमक – 'खग-कुल कुल-कुल-सा' में कुल के भिन्न अर्थ

- शुद्ध साहित्यिक तत्समप्रधान पदावलीयुक्त भाषा

क्या जानना ज़रूरी है

- जब कोई कवि प्रकृति-चित्रण करता है, तो, इसके पीछे उसका प्रकृति से लगाव निहित होता है। वह हमसे भी यह अपेक्षा करता है कि हम प्रकृति को उसी लगाव से देखें और उसकी रक्षा करें।
- हिंदी साहित्य में 'छायावाद' एक काव्य-प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति के अंतर्गत ऐसी अनेक कविताएँ लिखी गईं, जिनमें स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए प्रयास करने हेतु भारतीय जनता का आह्वान है।

सराहना

- गीत के पहले बंद में प्रात:वेला के सौंदर्य तथा उसकी हलचल का चित्रण है। मानवीकरण और रूपक अलंकार का उपयोग इस चित्रण को प्रभावशाली बनाता है। प्रकृति के क्रियाकलाप अंध कार से प्रकाश, निष्क्रियता से सक्रियता, सन्नाटे से स्वर, स्थिरता से गति और रिक्तता से रसमयता की ओर जाने का संदेश देते हैं; इसलिए सखी से कहा गया है कि उठो और प्रकृति की तरह तुम भी सक्रिय बनो। उद्‌बोधन के साथ-साथ प्रकृति और स्त्री के सौंदर्य की अभिव्यक्ति की गई है।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- गीत को सस्वर पढ़कर समझने का प्रयास कीजिए।
- गीत में आए बिंबों (चित्रों) और अलंकारों को अच्छी तरह समझिए।
- प्रकृति और सखी के बीच तुलना के बिंदुओं को समझिए।
- गीत के भाषा-वैशिष्ट्य के प्रमुख बिंदुओं को याद कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   इस कविता में कवि किसे जगाना चाहता है?

   (क) ऊषा को (ख) लतिका को
   (ग) धरती को (घ) आली को

2. प्रात:कालीन प्रकृति के विषय में आप क्या अनुभव करते हैं? 20-25 शब्दों में लिखिए।
3. 'प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण हमें प्रकृति-रक्षा के लिए प्रेरित करता है'– इस कथन के पक्ष में अपने विचार 25-30 शब्दों में लिखिए।

योग्यता बढ़ाएँ

- कुछ प्रकृतिपरक कविताएँ पढ़िए।
- कविता के भाव-सौंदर्य को बढ़ाने में अलंकारों के योगदान के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।
- जयशंकर प्रसाद के जीवन और उनके साहित्य के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

18

नाख़ून क्यों बढ़ते हैं?

(ललित निबंध)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• इतिहास-कथाएँ	• गद्य (निबंध) • अंत:संबद्ध विषय	• क्रिया विशेषण • अनेक शब्दों के लिए एक शब्द • तत्सम, तद्भव, देशज शब्द	• सर्जनात्मक चिंतन • हिंसा का प्रतिकार • मानवीयता, प्रेम, अहिंसा के महत्त्व को समझना • परंपरा की पहचान

सारांश

नाख़ून का बढ़ना एक सहज स्वाभाविक शारीरिक प्रक्रिया है। आदिम मनुष्य पशुओं की तरह आत्मरक्षा के लिए नाख़ूनों का प्रयोग करता था। धीरे-धीरे आत्मरक्षा में प्रयुक्त इस हथियार का स्थान कई प्रकार के अन्य हथियारों ने ले लिया, जैसे–पत्थर, हड्डी से बने हथियार, लोहे के हथियार, बंदूकें, बम एवं अनेक प्रकार के आधुनिकतम आणविक तथा नाभिकीय हथियार। इन हथियारों ने आत्मरक्षा से आक्रमण तक की यात्रा की। फलस्वरूप चारों ओर युद्ध तथा आतंक का वातावरण बन गया। मनुष्य की पशुता अधिक हावी हो गई। यद्यपि मनुष्य ने नाख़ूनों की कलात्मक सजावट कर अपने सौंदर्य-बोध का परिचय दिया, परंतु उसकी पशुता कम नहीं हुई अर्थात् नाख़ूनों का बढ़ना रुका नहीं। हो सकता है, प्राणी विज्ञानियों के अनुसार मनुष्य की पूँछ के झड़ने की तरह उसके नाख़ूनों का बढ़ना भी बंद हो जाए, परंतु अभी स्थिति यथावत् है। भारतीय विचारधारा के अनुसार मनुष्य की बढ़ती पाशविकता पर विजय पाने के लिए संयम और अनुशासन ही कारगर उपाय हैं। हमारे यहाँ स्वनिर्मित बंधनों को ही श्रेष्ठ माना गया है, इसीलिए अंग्रेज़ी का 'इनडिपेन्डेंस' शब्द 'अनधीनता' न बनकर हमारे यहाँ 'स्वाधीनता' या 'स्वतंत्रता' ही रहा। हमारी संस्कृति और इतिहास अत्यंत समृद्ध है। अत: किसी भी विचारधारा का अनुकरण करते समय हमें नए व पुराने में से उपयुक्त व उपयोगी का चयन करना होगा। मनुष्य की पशुता को नियंत्रित करने के लिए महात्मा बुद्ध ने दया व करुणा का मार्ग दिखाया, तो गांधी जी ने सत्य और अहिंसा का। गांधी जी ने सफलता (बाहर) की अपेक्षा सार्थकता (भीतरी) पर बल दिया। मानव-जाति के कल्याण के लिए व्यक्तिगत सफलता का मोह छोड़कर सबके हितचिंतन की चरितार्थता में ही सार्थकता है। इसी से हम नाख़ूनों के बढ़ने पर अर्थात् मनुष्य की पाशविकता पर रोक लगा सकते हैं।

मुख्य बिंदु

- नाख़ून का बढ़ना पशुता की निशानी है और काटना मनुष्यता की।
- अस्त्र-शस्त्र के निर्माण की होड़ मनुष्य का ऐसा आचरण है, जिसके मूल में पाशविक वृत्ति है।
- अनुशासन और संयम से पशुता को दबाया जा सकता है।
- संयम रखना एवं दूसरों के दुख-सुख के प्रति संवेदनशील होना ही मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ बनाता है।
- बुद्ध और गांधी जी ने विश्व को करुणा, प्रेम और शांति का संदेश दिया; इन्हीं के आधार पर मनुष्यता सार्थक हो सकती है।

- नए और पुराने में से मानवता के पक्ष में उपयोगी एवं लाभदायक का चयन किया जाना चाहिए।
- सफलता एवं सार्थकता में से सार्थकता अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए है कि उससे दूसरों का भी हित होता है।
- विश्व-शांति और मानवमात्र का कल्याण मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए।

आइए समझें

- निबंध में विषय का क्रमबद्ध विवरण होता है। ललित निबंध अन्य प्रकार के निबंधों से भिन्न होता है, इसकी शैली अनौपचारिक, आत्मीय एवं सृजनात्मक होती है।
- नाख़ून के रूप में हथियार जीवन-रक्षा के उपाय थे। धीरे-धीरे हथियारों का विकास मानवता-विरोधी हो गया।
- आज नाख़ूनों को काटना हथियारों की होड़ पर प्रतिबंध लगाने का प्रतीक है।
- नाख़ूनों का बढ़ना जन्मजात प्रवृत्ति है, पर जो कुछ अपने आप होता है, उस पर मनुष्य मानव-जाति के पक्ष में नियंत्रण करता है। नाख़ूनों को काटकर मनुष्य पशुता को दबाता है।
- भारतीय परंपरा में 'स्व' का बंधन महत्त्वपूर्ण है। यह बंधन समाज के हित में होता है। स्पष्ट है कि जो कुछ अच्छा है, वह पश्चिम की ही देन नहीं है, अपनी परंपरा की देन भी है।
- परंपरा के नाम पर पुराने से चिपटे रहना बुद्धिमानी नहीं है। न तो सारा पुराना व्यर्थ है, न ही सारा नया सार्थक है।
- समानुभूति मानव का धर्म है, इसलिए पाशविक प्रवृत्तियों को मिटाने के लिए मनुष्य निरंतर संघर्ष कर रहा है।
- सुख का अर्थ अधिक साधन, सुविधाएँ और भौतिक उपलब्धियाँ नहीं, बल्कि समाज के हित में सार्थक जीवन जीना है– बुद्ध और गांधी ने हमें यही सिखाया है।
- भविष्य में अवश्य ऐसा होगा कि पशुता पर मनुष्यता की जीत होगी और चारों ओर प्रेम, शांति, सद्भाव का साम्राज्य होगा।

योग्यता बढ़ाएँ

- विज्ञान और टेक्नोलॉजी के संबंध को समझिए।
- टेक्नोलॉजी के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को जानिए।
- विश्व-स्तर पर हिंसा को रोकने के लिए किए गए प्रयासों को जानिए।
- दूसरों के सुख-दुख के प्रति संवेदनशील होने के महत्त्व की पहचान कीजिए।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द–क्रियाविशेषण;
- भेद–कालवाचक, स्थानवाचक रीतिवाचक, परिमाणवाचक
- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द: दयनीय=दया करने योग्य, निर्लज्ज– जिसे लज्जा न आती हो।
- तत्सम शब्द : वृहत्तर, आत्मतोषण, सहजात वृत्ति, वर्तुलाकार आदि।
- मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ : लोहा लेना, कमर कसना, कीचड़ में घसीटना आदि।

पाठ का संप्रेष्य

'नाख़ून क्यों बढ़ते हैं?' प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने के क्रम में लेखक मनुष्य की विकास-यात्रा का उल्लेख करता है। लेखक कहना चाहता है कि इस विकास-यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव हैं। एक तरफ़ मनुष्य की पशुता तथा बर्बरता के लक्षण मिलते हैं, तो दूसरी ओर पशुता और बर्बरता से मुक्ति के प्रयास भी। द्विवेदी जी ऐसे मनुष्य का पक्ष लेते हैं, जो मानवीय मूल्यों से युक्त हो और सफलता के स्थान पर सार्थकता को महत्त्व दे। ऐसे मनुष्यों के उदाहरणस्वरूप वह बुद्ध एवं गांधी का उल्लेख करता है। ऐसे महापुरुषों से प्रेरणा लेकर हम विश्व के वातावरण बेहतर बना सकते हैं।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- पाठ को अच्छी तरह से समझने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी उन शब्दों के अर्थ अच्छी

तरह समझ लें, जिनका प्रयोग लेखक ने मूल पाठ में किया है। शिक्षार्थियों ने ऐसे शब्दों का प्रयोग पहले संभवत: नहीं किया होगा, जैसे–उद्‌भावित, मारणास्त्र, अनुसंधित्सा आदि।

- तद्‌भव और तत्सम शब्दों का अंतर जानिए।
- प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़िए और समझिए कि उत्तर में आपसे क्या अपेक्षा की गई है।
- मूल पाठ के मुख्य बिंदुओं को पहचानिए।
- प्रत्येक लेखक की अपनी विशिष्ट भाषा-शैली होती है। उसे समझने के लिए शब्दों के अर्थ के अतिरिक्त विशिष्ट प्रयोग जानना आवश्यक है।

अपना मूल्यांकन करें

1. भारतीय और पश्चिमी विचारधारा में मुख्य भेद क्या है? 20-25 शब्दों में लिखिए।
2. आप अपने जीवन में गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर क्या परिवर्तन करना चाहेंगे– 25-30 शब्दों में उल्लेख कीजिए।
3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   ललित निबंध की विशेषता नहीं है–

   (क) आत्मीयता (ख) औपचारिकता

   (ग) अनौपचारिकता (घ) सहजता

19

शतरंज के खिलाड़ी

(ललित निबंध)

बोलना/सुनना	पढ़ना	लिखना	व्याकरण	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• हिंदुस्तानी भाषा • मुहावरों-लोकोक्तियों का सही प्रयोग	• गद्य/कहानी • पात्रानुकूल भाषा • आगत शब्दों का सही उच्चारण	• स्थितियों का देशकाल के अनुसार वर्णन	• संवादों की गतिशीलता • शब्द-चयन और भाषा-वैविध्य • उर्दू-फ़ारसी-अरबी आदि भाषाओं के शब्दों का अर्थ-बोध तथा प्रयोग • विराम चिह्न • मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	• कर्मण्यता और अकर्मण्यता में अंतर स्पष्ट करना • विलासिता एवं निष्क्रियता से उबरना • परवशता के कारणों की पहचान • संस्कृति की पहचान

सारांश

यह कहानी वातावरण-केंद्रित है, जिसमें मीर और मिरज़ा आदि पात्रों के आचरण के माध्यम से तत्कालीन लखनऊ की परिस्थितियों की ओर संकेत किया गया है। उन परिस्थितियों में सामान्य नागरिक हो या शासक-वर्ग– सभी भोग-विलास में डूबे हैं। शासकों एवं अमीरों की अकर्मण्यता तथा दायित्व-विमुखता ने सामान्य जनता को भी अपनी गिरफ़्त में ले रखा है और मनोरंजन ने समाज का राजनीतिक अध:पतन कर दिया है। देश के कर्णधारों को इस प्रकार भोग-विलास में डूबे हुए दिखाकर प्रेमचंद गुलामी के कारणों की अभिव्यक्ति करते हैं। साथ ही, दायित्व-निर्वाह तथा कर्त्तव्यपरायणता के महत्त्व की ओर हमारा ध्यान ले जाते हैं।

मुख्य बिंदु

- कहानी में मुख्य रूप से कथावस्तु, पात्र, चरित्र-चित्रण, संवाद-योजना, भाषा-शैली और परिवेश आदि तत्त्वों को दृष्टि में रखते हुए उसकी समीक्षा की जाती है। कभी-कभी इनमें से किसी एक तत्त्व पर विशेष बल दिया जाता है। इस कहानी में कहानी के अन्य सभी तत्त्व परिवेश को अभिव्यक्त करते हैं।
- कहानी में जिस भारत का चित्रण किया गया है, उसमें नाच-गाने, खेल-तमाशे, नशा-जुए, विलासिता में डूबे रहने वाला वर्ग सभी पर अपनी करनी का असर डालता है। आम आदमी, कलाकार, साहित्यकार, व्यापारी– सभी अपनी-अपनी हैसियत से विलासिता में डूबे हैं।
- कहानीकार कहना चाहता है कि यदि देश को गुलामी से बचाना है, तो प्रत्येक नागरिक को अपनी ज़िम्मेदारी का बोध होना चाहिए। प्रेमचंद शासक और प्रजा की इस स्थिति को दुखद मानकर उसका चित्रण करते हैं।
- कहानी में लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह को अंग्रेज़ों द्वारा कैद कर लेने का उल्लेख है। मीर-मिरज़ावाजिदअली शाह की गिरफ़्तारी पर दुखी न होकर उसका मज़ाक उड़ाते हैं। लेखक ने इस स्थिति की विडंबना का मार्मिक उल्लेख किया है।
- यह कहानी मिरज़ा साहब और मीर साहब जैसे मुख्य पात्रों के माध्यम से आलसी, अकर्मण्य एवं

कामचोर इन्सानों की वृत्ति को उजागर करती है। बाप-दादाओं की संपत्ति ने ऐसे बहुत से लोगों को कायर, डरपोक और विलासी बना दिया था। प्रेमचंद ऐसे लोगों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी भी करते हैं।

- यह कहानी वातावरण को अभिव्यक्त करने वाली है, इसलिए इसमें संवाद कम हैं; किंतु जो हैं, वे व्यंग्यात्मक, चुटीले तथा कहानी को गति देने वाले हैं। उदाहरण के लिए बेगम साहिबा के संवाद उनकी मन:स्थिति–क्रोध, झल्लाहट, विवशता, बेचैनी आदि– को प्रकट करते हैं। मिरज़ा साहब के अपमानित होने का डर, उनकी चापलूसी और झूठी सहानुभूति उनके संवादों से ही प्रकट होती है।
- कहानी में उर्दू और फ़ारसी के शब्दों का भरपूर प्रयोग है। यह शब्द-चयन तत्कालीन परिवेश तथा जीवन-शैली को प्रकट करता है। भाषा और संवाद-योजना स्वाभाविक है, कृत्रिम नहीं।
- कहानी में अनेक मुहावरे तथा लोकोक्तियों का रचनात्मक प्रयोग विषयवस्तु, परिवेश तथा उद्देश्य को स्पष्ट करने में पूर्णत: सार्थक सिद्ध होता है।

आइए समझें

- 'शतरंज के खिलाड़ी' प्रेमचंद की एक प्रतीकात्मक कहानी है। व्यवस्था की त्रुटियों-ख़ामियों को कहानीकार ने पात्रों एवं संवादों के माध्यम से बख़ूबी उजागर किया है।
- कहानी तत्कालीन परिवेश से परिचय कराती है और भारतीय इतिहास को और गहराई से पढ़ने-समझने के लिए प्रेरित करती है।
- कहानी हमारे भाषा-ज्ञान का विस्तार करती है। नए-नए शब्दों, प्रयोगों तथा अवधारणाओं से अवगत कराती है।
- संवादों को चुटीला बनाने वाले मुहावरों-लोकोक्तियों के प्रयोगों की समझ पैदा करती है।
- हिंदुस्तानी भाषा के स्वरूप एवं वैशिष्ट्य से हमारा परिचय कराती है। भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्द-प्रयोगों से भाषा में प्रभाव पैदा करने की कला का बोध कराती है।
- गद्य-भाषा का सौंदर्य तथा उसका लालित्य उसकी शैली के वैशिष्ट्य में, पात्रानुकूल भाषा-चयन एवं प्रयोग में ही होता है।
- देशकाल का चित्रण कहानी को जीवंत एवं प्रामाणिक बना देता है। संवाद कहानी को गतिशील बना देते हैं।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- हिंदुस्तानी भाषा : जो हिंदी और अरबी-फ़ारसी के लोकप्रचलित शब्दों से बनी है।
- तत्सम, तद्भव, क्षेत्रीय शब्द।
- इस कहानी में मुहावरे-लोकोक्तियाँ अपने साथ समाज और संस्कृति को तो लाते ही हैं, परिवेश को जीवंत एवं विश्वसनीय बनाने का काम भी करते हैं।

संप्रेष्य

कहानी यह संदेश देती है कि सुख-सुविधाओं में डूबे, संघर्ष से बचते रहने वाले, परस्पर भिन्न बने रहने वाले, व्यक्तिगत राग के शिकार लोग ही व्यक्ति और देश– दोनों को डूबो देते हैं। ऐसी बुरी आदतों का असर जनसामान्य पर तुरंत होता है। शासक का धर्म और दायित्व क्या है– प्रेमचंद इसकी ओर भी संकेत करते हैं। उसका आचरण कैसा होना चाहिए, राज्य तथा प्रजा के लिए उसकी संघर्षशीलता क्यों अपेक्षित है, गुलामी से बचने के लिए राजा को राजधर्म का निर्वाह कैसे करना चाहिए– ऐसे अनेक संदेश इस कहानी से संप्रेषित होते हैं।

यह भी जानिए

- प्रेमचंद की कहानियों में अनेक प्रकार की समस्याओं, मनोवैज्ञानिक दुविधाओं, प्रवृत्तियों तथा व्यवहारों को बख़ूबी वर्णित किया गया है। प्रेमचंद का साहित्य भारतीय जनता की स्थितियों एवं समस्याओं का विश्वकोश है।
- यह कहानी प्रेमचंद की अन्य कहानियों से भिन्न एक नवीन समस्या को उजागर करती है। नवाबों की अकर्मण्यता के कारण शहर अंग्रेज़ों के कब्ज़े में कैसे गया और वहाँ के निवासी कैसे गुलाम बन

गए– इसका चित्रण प्रेमचंद ने अत्यंत प्रभावी एवं बोधगम्य रूप में किया है।

- उस समय के परिवेश, नवाबी आचरण, जनसामान्य की दशा तथा ऐतिहासिक घटनाक्रम आदि की जानकारी इतिहास-ग्रंथों से भी ली जा सकती है।

योग्यता बढ़ाएँ

- अरबी-फ़ारसी शब्दावली का प्रयोग, मुहावरे-लोकोक्तियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति कहानी को कैसे संप्रेष्य बनाकर प्रासंगिक बना देती है– इस ध्यान देना आवश्यक है।
- प्रेमचंद के साहित्य-सरोकारों का संबंध व्यापक समाज, संस्कृति, इतिहास, राष्ट्रीय चेतना तथा माननीय आचरण से रहा है– यह जानिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- कहानी के तत्त्वों को ध्यान में रखते हुए इस कहानी को पढ़िए।
- कहानी में अभिव्यक्त परिवेश पर विशेष ध्यान दीजिए।
- कहानी की प्रतीकात्मकता को अच्छी तरह से हृदयंगम कीजिए।
- मार्मिक स्थलों को पहचानिए।
- 'हिंदुस्तानी' भाषा के लक्षणों को जानकर कहानी की भाषागत विशेषताओं पर ध्यान दीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. मीर और मिरज़ा की चारित्रिक विशेषता का ज़िम्मेदार आप किसे मानते हैं और क्यों? उल्लेख कीजिए।
2. कहानी के अंत का आप पर क्या प्रभाव पड़ता है? तर्कसहित 25-30 शब्दों में टिप्पणी लिखिए।
3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   निम्नलिखित में से कौन-से विकल्प में मुहावरे का प्रयोग नहीं है–

   (क) रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी। ☐

   (ख) यहाँ तो लोग विलासिता के नशे में चूर थे। ☐

   (ग) किसी के कानों पर जूँ न रेंगती थी। ☐

   (घ) नवाब साहब इस वक्त ख़ून के आँसू रो रहे होंगे। ☐

20

उनको प्रणाम

(कविता)

व्याकरण-बिंदु	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• टेक वाली कविता	• कविता	• विशेष्य-विशेषण • समानार्थक शब्द • सामासिक शब्द • तत्सम शब्द	• सफलता और सार्थकता में • समानार्थक शब्द अंतर स्पष्ट करना • सामासिक शब्द • साहस, संकल्प, संघर्ष की • तत्सम शब्द सराहना • प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना • उपेक्षितों का महत्त्व

मूल भाव

इस कविता में कवि ने उन लोगों के प्रति आदर और सम्मान का भाव प्रकट किया है, जिन्होंने अपने जीवन में साहस वीरता, उत्साह, परिश्रम, निष्ठा और ईमानदारी के साथ संघर्ष तो किया, लेकिन संसाधनों के अभाव और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके। कविता की दृष्टि में सफलता-असफलता से अधिक महत्त्व किसी उद्देश्य के लिए किए गए प्रयासों का है।

इस भाव को व्यक्त करने के लिए कवि ने योद्धाओं, नाविकों, पर्वतारोहियों, क्रांतिकारियों आदि के उदाहरण दिए हैं। इन क्षेत्रों में कामयाबी पाने वाले लोगों के नाम दुनिया जानती है, लेकिन इन कामों को शुरू करने वाले और आगे बढ़ाने वाले लाखों ऐसे लोग थे, जो गुमनाम रह गए। कवि ऐसे लोगों को आदर और सम्मान देते हुए उन्हें बार-बार प्रणाम करता है।

मुख्य बिंदु

- जीवन में सफलता का ही नहीं, संघर्ष का भी महत्त्व है– ऐसा मानते हुए कवि उन लोगों के प्रति आदर प्रकट करता है, जिन्होंने जीवन के अनेक क्षेत्रों में उत्साह से कार्य किया, लेकिन असफल रह गए।
- जीवन में कभी-कभी ऐसे मौके भी आते हैं, जब उद्देश्य-प्राप्ति के लिए अपेक्षित साधनों की कमी हो जाती है।
- कुछ लोग केवल उत्साह के बल पर बड़े-से-बड़े उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते हैं।
- बलिदान करने वाले लोग वे ही नहीं हैं, जिन्हें हम याद रखते हैं, बहुत से बलिदानी ऐसे भी हैं, जिन्हें दुनिया भूल गई है।
- अनेक साहसी और दृढ़व्रती लोगों की दृढ़ता का अंत भीषण यातनाओं ने कर दिया। इन लोगों ने कभी अपने लाभ और साहस का विज्ञापन नहीं किया– दुनिया चाहे इन्हें असफल माने, कवि इन्हें प्रणाम करता है।

आइए समझें

- कविता के आरंभिक दो अंशों में कवि ने दो तरह के लोगों का उल्लेख किया है। एक तो वे, जो रणक्षेत्र में पूरी तैयारी और साहस से जाते हैं, पर युद्ध समाप्त होने से पहले ही साधनहीन हो जाते हैं। दूसरी तरह के वे हैं, जो छोटी-सी नैया के आधार पर समुद्र को पार करने की मन में ठान लेते हैं। ऐसे लोग चाहे अपने उद्देश्य में असफल रह जाएँ, पर कवि इनके उद्देश्य से अधिक इनकी तैयारी, साहस और कुछ कर गुज़रने के निश्चय को महत्त्वपूर्ण मानता है और इनके प्रति आदर व्यक्त करता है।
- कवि ऐसे लोगों का भी उल्लेख करता है, जो ऊँचे-से-ऊँचे शिखर पर पहुँचने के लिए पूरे उत्साह से बार-बार प्रयास करते हैं। ये लोग शिखर पर न पहुँचे हों, बीच में ही इन्होंने समाधि ले ली हो या असफल होकर नीचे उतर आए हों– ये स्तुत्य हैं, क्योंकि इन्होंने आदर्शों तथा जीवन-मूल्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास किया।
- ऐसे भी देशभक्त हुए हैं, जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी। ये आज़ादी का सुख नहीं ले पाए। इनके संघर्ष और बलिदान से मिली आज़ादी का सुख हम सब उठा रहे हैं और यह विडंबना ही है कि इन लोगों को हम भूल गए हैं। कवि ऐसे लोगों को याद करते हुए उन्हें प्रणाम करता है। ऐसे लोगों में वे लोग भी आते हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन कारागार में ही बिता दिया। निरंतर जूझते रहने वाले लोगों की स्वाधीनता-प्राप्ति की धुन का अंत करने के लिए इन्हें हमेशा के लिए बंदी बना लिया गया।
- कविता के अंतिम अंश में ऐसे लोगों के प्रति सम्मान व्यक्त किया गया है, जिन्होंने निस्वार्थ-समर्पित भाव से समाज और राष्ट्र की सेवा की। यह सेवा अतुलनीय है। इन लोगों ने अपने कार्यों का कभी प्रचार भी नहीं किया अर्थात् अपने त्याग और बलिदान को देश के प्रति अपना कर्त्तव्य समझा, अतः श्रेय पाने की चिंता कभी नहीं की।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण.बिंदु

- **विशेष्य — विशेषण**

  तीर — कुंठित, लक्ष्य भ्रष्ट, अभिमंत्रित

  नैया — छोटी-सी

  शिखर — उच्च

  उत्साह — नव-नव

- **समानार्थक शब्द**

  समुद्र = जलधि, अंबुधि, वारिधि→
  जल, अंबु, वारि (पानी) + धि (धारण करने वाला)

  बादल = जलद, अंबुद, वारिद→
  जल, अंबु, वारि (पानी) + द (देने वाला)

  कमल = जलज, अंबुज, वारिज→
  जल, अंबु, वारि (पानी) + ज (उत्पन्न या पैदा होना)

- **सामासिक-पद**

  पूर्ण-काम, उदधि-पार, कृत-कृत्य, हिम-समाधि आदि।

सराहना-बिंदु

- यह कविता बने-बनाए सोच को तोड़कर आम आदमी का ध्यान इस ओर ले जाती है कि समाज-निर्माण में उन लोगों का योगदान कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, जो जीवन-भर जूझते रहे और संकटों के बावजूद जिन्होंने हार नहीं मानी। कवि परिणाम को नहीं, कर्म अथवा प्रयास को महत्त्व देता है। इसी भाव को व्यक्त करने के लिए कवि ने अनेक उदाहरणों का प्रभावशाली उपयोग किया है। कविता में 'उनको प्रणाम' बार-बार आता है। इसके माध्यम से कवि इस बात पर बल देता है कि जिनकी उपेक्षा की गई है, मैं उनको प्रणाम करता हूँ। यानी वे प्रणम्य हैं।
- इस कविता में भावों के अनुकूल तत्सम तथा बोलचाल के शब्दों का प्रयोग किया गया है। शब्द-चुनाव भी संगत है।

क्या जानना ज़रूरी है

- आजकल जीवन के अनेक क्षेत्रों में उपेक्षितों को महत्त्व दिलाने के प्रयास हो रहे हैं। इस प्रयास से लोकतंत्र सार्थक होता है। इतिहास-लेखन में भी इस संदर्भ में प्रयास किया गया है।
- बिना जाने-बूझे किसी भी व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, उसमें अनंत संभावनाएँ हो सकती हैं।
- किसी भी व्यक्ति के प्रयास की महत्ता उसकी सफलता में नहीं, बल्कि उसकी सार्थकता में होती है।

योग्यता बढ़ाएँ

- इसी भाव-संवेदना से मिलती-जुलती कोई अन्य कविता ढूँढकर पढ़िए।
- राष्ट्रीय स्वाधीनता-संघर्ष में बलिदान देने वाले उन क्रांतिकारियों के विषय में जानिए और बताइए, जिनकी चर्चा प्रायः नहीं की जाती।
- किसी स्वाधीनता-सेनानी की प्रतिकूल परिस्थितियों का उल्लेख कीजिए।
- कविता में आए अन्य शब्दों के समानार्थी ढूँढने का अभ्यास कीजिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- वर्तनी और भाषा की शुद्धता का ध्यान रखिए।
- कविता के आशय और संवेदना को अच्छी तरह समझिए।
- शब्दों के अर्थ एवं अभिप्राय को समझिए।
- कविता के उद्देश्य का उल्लेख कीजिए।
- कविता में आए उद्धरणों का क्रम याद रखिए।
- कविता के सौंदर्य-पक्ष को समझिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. अपने आस-पास के किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखिए, जिसने जीवन में अथक संघर्ष किए, लेकिन सफल नहीं हो सका
2. आपकी नज़र में किसका महत्त्व अधिक है—सफलता का या सार्थकता का, 20-25 शब्दों में लिखिए।
3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   दुनिया किन लोगों को जल्दी ही भूल गई?

   (क) फाँसी पर झूलने वालों को

   (ख) बंदी जीवन जीने वालों को

   (ग) रिक्त तूणीर होने वाले वीरों को

   (घ) हिम-समाधि ले लेने वालों को

21

पत्र कैसे लिखें

(लेखन-कौशल)

पढ़ना	लिखना	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• पत्र पढ़कर आवश्यक सूचनाएँ ग्रहण करना	• औपचारिक और अनौपचारिक पत्र-लेखन • ई-मेल लेखन • एस.एम.एस. लेखन	• व्यक्तिगत भावनाओं को समझना और उनकी अभिव्यक्ति • सामाजिक जीवन में जागरूकता • समस्याओं का स्पष्टीकरण • व्यावसायिक माँग और आपूर्त्ति के विषय में संप्रेषण-कौशल

सार

जीवन के विभिन्न अवसरों पर हमें पत्र-लेखन की आवश्यकता होती है। कुछ पत्र हम व्यक्तिगत संबंधों में लिखते हैं, तो कुछ व्यावसायिक या अन्य आवश्यकताओं के संबंध में। इन्हें क्रमशः 'अनौपचारिक' और 'औपचारिक' पत्र कहते हैं। इन पत्रों में कथ्य की विविधता होती है, लेकिन कुछ ढाँचागत आवश्यकताएँ भी होती हैं, जैसे प्रेषक के विषय में जानकारी, पत्र लिखने की तिथि, पत्र का संदर्भ आदि। औपचारिक पत्रों में व्यक्तिगत भावनाओं को व्यक्त करने की गुंजाइश नहीं होती। व्यावसायिक पत्रों में सूचनाओं का अत्यधिक महत्त्व होता है। समय के साथ-साथ हो रहे प्रौद्योगिक विकास ने भी पत्रों के प्रारूप में परिवर्तन किया है। इन्टरनेट पर ई-मेल तथा मोबाइल पर एस.एम.एस. पत्रों के ही नए रूप हैं, इनकी लेखन-कला भी भिन्न है।

मुख्य बिंदु

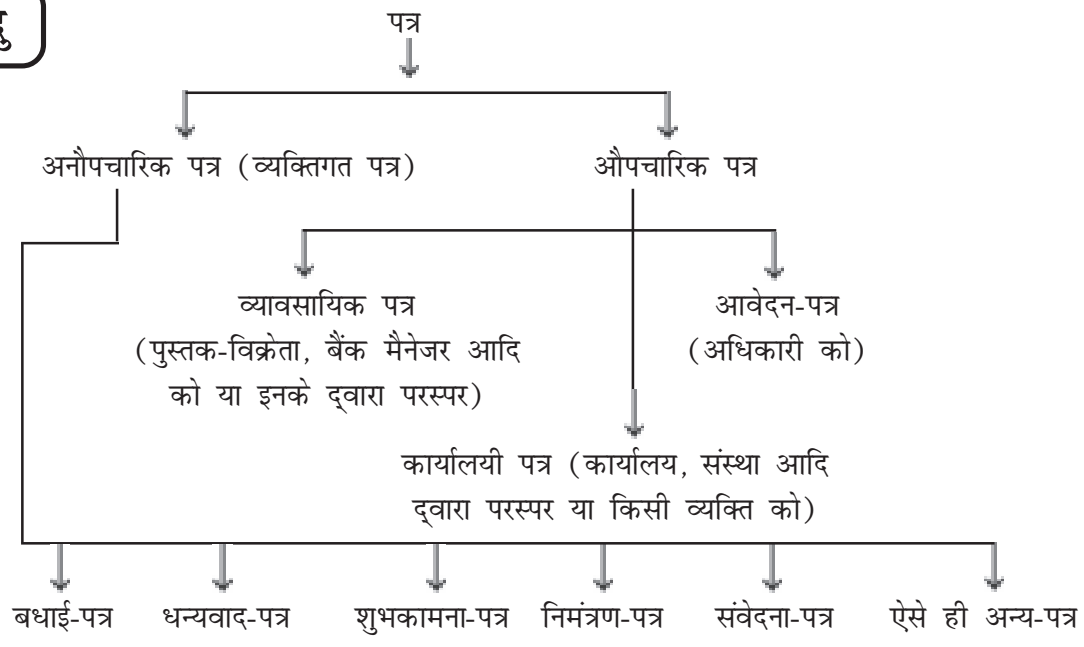

पत्र के अंग

- पता और तिथि
- संबोधन तथा अभिवादन
- विषयवस्तु
- समापन

आइए समझें

संबोधन

अनौपचारिक संबोधन

बड़ों के लिए–पूज्य/पूजनीय/आदरणीय/श्रद्धेय आदि

छोटे या बराबर वालों के लिए–प्रिय+नाम/प्रियवर/प्यारे+नाम आदि

औपचारिक पत्र

कार्यालयी पत्रों में – प्राय: नहीं/अर्द्ध सरकारी पत्रों में – प्रिय+नाम/महादेय

व्यावसायिक पत्रों में प्रिय+नाम/महोदय/प्रिय महोदय

अभिवादन

अनौपचारिक पत्र

बड़ों के लिए–नमस्कार/नमस्ते/प्रणाम/आदाब/सत श्रीअकाल आदि/चरण-स्पर्श आदि

छोटों के लिए–स्नेह/शुभाशीष/आशीर्वाद/चिरंजीव रहो/खुश रहो/सदा सुखी रहो/प्रसन्न रहो आदि

औपचारिक पत्र–संबोधन के बाद तुरंत शुरू

विषयवस्तु के अंत में आने वाले वाक्यांश/शब्द–शेष अगले पत्र में/अपना ख्याल रखना/हार्दिक शुभकामनाओं सहित/सधन्यवाद/पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में आदि

समापन शब्द

अध्यापक को	–	आपका आज्ञाकारी शिष्य	निमंत्रण-पत्र में	–	दर्शनाभिलाषी
माता-पिता को	–	आपका बेटा/बेटी	औपचारिक पत्रों में	–	भवदीय/आपका
मित्र को	–	तुम्हारा/तुम्हारा मित्र	आवेदन पत्र में	–	भवदीय/प्रार्थी/विनीत/निवेदक
छोटों को	–	शुभचिंतक/शुभेच्छु आदि			

यह जानना ज़रूरी है

- व्यक्तिगत भावनाओं की अभिव्यक्ति तथा परिवार की बातें सिर्फ़ अनौपचारिक पत्रों में होती हैं।
- औपचारिक पत्र या तो कार्यालय से संबंधित होते हैं या व्यावसायिक।
- पत्र में पता ज़रूरी है, क्योंकि उसी पर दूसरा व्यक्ति पत्र या वांछित सूचना/सामग्री भेजेगा।
- तिथि विषयवस्तु को समझने में मददगार होती है।
- पहली बार पूरा पता लिखना आवश्यक है। घनिष्ठ लोगों को केवल शहर का नाम लिखने पर भी काम चल सकता है।
- पहले पता व दिनांक दाईं ओर ऊपर लिखे जाते थे, पर अब इन्हें बाईं ओर भी लिख दिया जाता है।
- संबोधन की कोटियाँ तो नहीं बदलतीं, पर उनके लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्द बहुत-से हो सकते हैं।
- अत्यधिक आत्मीय संबोधनों (प्यारे भैया, मेरी प्यारी माँ आदि) के बाद कई बार अभिवादन का शब्द नहीं भी लिखा जाता।
- संबोधन के बाद अल्पविराम (,) का प्रयोग किया जाता है।
- अभिवादन के शब्द के बाद पूर्णविराम (।) या संबोधन-चिह्न(!) अवश्य लगाया जाना चाहिए।
- समापन शब्द हमेशा संदेश की समाप्ति के बाद नई पंक्ति में लिखा जाता है। इसके बाद अल्पविराम (,) या निर्देश चिह्न (–) लगाते हैं।
- समापन-शब्द के नीचे हस्ताक्षर/नाम लिखा जाता है।
- अनौपचारिक पत्रों का विशिष्ट गुण है–अंतरंगता।
- औपचारिक पत्रों का विशिष्ट गुण है–संक्षिप्तता और स्पष्टता।
- ई-मेल में पत्र का प्रारूप वही रहता है, पर उसे संक्षिप्त रखा जाता है।
- एस.एम.एस. लघु संदेश हैं, इनमें सिर्फ़ उतना ही लिखते हैं, जिससे संदर्भ स्पष्ट हो जाए।

आइए समझें

- औपचारिक पत्रों में अधिकारी/संबंधित संस्था प्रमुख का पदनाम और पता बाईं ओर ऊपर लिखा जाता है।
- इसके उपरांत विषय का संक्षिप्त उल्लेख आवश्यक है। इससे उस पत्र को संबंधित विभाग/प्रभाग/संभाग /अनुभाग में भेजने की सुविधा रहती है।
- यदि पत्र पहली बार लिखा जा रहा है, तो संदेश का आशय पहले अनुच्छेद में स्पष्ट कर देना चाहिए।
- पहले से पत्राचार हो, तो पिछले पत्र के संदर्भ के लिए तिथि का उल्लेख ज़रूरी है।
- सरकारी पत्र हो, तो पत्र सं. तथा दिनांक का उल्लेख कीजिए।
- यदि विषयवस्तु अधिक हो, तो दो या तीन अनुच्छेदों में संदेश को बाँट लीजिए।
- नई बात नए अनुच्छेद से शुरू कीजिए।
- समापन-शब्द के नीचे हस्ताक्षर करते हैं और उसके नीचे कोष्ठक में अपना नाम तथा पदनाम लिखते हैं।
- यदि यह आवेदन-पत्र है, तो कोष्ठक में नाम के उपरांत अपनी प्रासंगिक स्थिति तथा पता लिखा जाता है।
- लैटर हैड पर लिखे पत्र में भेजने वाले को नाम-पता लिखने की ज़रूरत नहीं होती।
- आवेदन-पत्रों के लिए प्रायः तैयार प्रपत्र (Pro-forma) होते हैं।

अधिकतम अंक कैसे पाएं

- पाठ में दी गई सूचनाओं को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
- औपचारिक और अनौपचारिक पत्रों में अंतर के बिंदुओं को पहचानिए।
- पत्र के अंगों को याद कीजिए।
- अच्छे पत्र के गुणों पर विशेष ध्यान दीजिए।
- अनेक प्रकार के पत्र लिखने का अभ्यास कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्र में अंतर स्पष्ट कीजिए।

2. 'तकनीकी सुविधाओं ने पत्र-लेखन के क्षेत्र में परिवर्तन ला दिया है' –इस कथन के पक्ष में 20–25 शब्दों में अपने विचार लिखिए।

3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   कौन-सा विकल्प औपचारिक पत्र है–

   (क) संवदेना-पत्र ☐ (ख) बधाई-पत्र ☐

   (ग) आवेदन-पत्र ☐ (ख) निमंत्रण-पत्र ☐

22

निबंध कैसे लिखें

(लेखन-कौशल)

पढ़ना/लिखना	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• गद्य • निबंध	• वर्णन, विचार एवं भावों की क्रमबद्धता • जीवन से उदाहरणों का चुनाव • उपयुक्त भाषा का चुनाव

सार

निबंध का अर्थ है– ऐसी रचना, जिसमें विषय का क्रमबद्ध वर्णन हो। निबंध गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। निबंध के माध्यम से हम अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप में, उदाहरणों के माध्यम से प्रभावशाली एवं आत्मीय भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। निबंध अनेक प्रकार के होते हैं, जैसे–वर्णनात्मक, विचारात्मक तथा भावात्मक आदि। इसके अतिरिक्त भी निबंध के अनेक प्रकार हो सकते हैं। निबंध के तीन प्रमुख अंग है–भूमिका, विषयवस्तु, उपसंहार। निबंध को व्यवस्थित रूप से लिखने के लिए इन प्रमुख बिंदुओं के भी अन्य अनेक उप बिंदु बनाकर उसे आसानी से लिखा जा सकता है। निबंध लिखने से पूर्व उसके विषय का चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए। निबंध लिखने से पूर्व उसकी रूपरेखा के बिंदुओं का निर्धारण भी कर लेना चाहिए। निबंध लिखते समय उसकी भाषा तथा आकार का ध्यान रखना आवश्यक है।

मुख्य बिंदु

- विषय के मुख्य बिंदुओं पर विचार
- क्रमबद्ध वर्णन करना
- प्रभावशाली भाषा में अभिव्यक्ति
- निबंध के विभिन्न रूपों को समझना
- निबंध के आकार को ध्यान में रखकर विस्तार देना।

आइए समझें

- निबंध लिखने के लिए भूमिका, विषयवस्तु व उपसंहार के विभाजन को समझना आवश्यक है।
- क्रमबद्ध वर्णन के लिए क्रमानुसार निबंध को पाँच या छह अनुच्छेदों में बाँट लेना उचित होगा।
- निबंध के विषय के अनुसार उसे वर्णनात्मक, भावात्मक, विचारात्मक रूप प्रदान किया जा सकता है।
- प्रत्येक निबंध के मुख्य बिंदुओं को भी उपबिंदुओं में विभाजित किया जाए, तो इससे लिखने में सुविधा होगी।
- निबंध को पठनीय बनाने के लिए है उसे सरल व सहज भाषा में लिखा जाना चाहिए।

यह जानना ज़रूरी है

- मुहावरों का यथास्थान प्रयोग करने से निबंध में प्रभावोत्पादकता बढ़ जाती है।
- निबंध में एक बिंदु पूरा होने पर ही दूसरे बिंदु को शुरू करना चाहिए।
- वाक्य-रचना में कसावट व सहजता का ध्यान रखा जाना चाहिए।
- भूमिका और उपसंहार में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

- निबंध के विषय के अनुरूप वर्णन, उदाहरण, कल्पना अथवा विश्लेषण का प्रयोग करना चाहिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- निबंध की भूमिका अत्यंत आकर्षक, विषयानुसार हो इसका ध्यान रखिए।
- पूरा निबंध छोटे-छोटे अनुच्छेदों में बाँट लीजिए।
- काव्य-पंक्तियाँ, सुभाषित, उदाहरण इत्यादि इस प्रकार लिखिए कि पढ़ने वाले की दृष्टि उन पर अवश्य पड़े।
- विषय का चयन सावधानीपूर्वक कीजिए, जिससे आपको अपने ज्ञान को अभिव्यक्त करने का पूरा अवसर मिल सके।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   'निबंध' शब्द में 'बंध' का अर्थ क्या होगा–

   (क) बंधन

   (ख) क्रमबद्धता

   (ग) अनुच्छेद

   (घ) जोड़ना

2. 'राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान' से आप कैसे और क्यों जुड़े– इस विषय पर एक निबंध की रूपरेखा बनाकर लिखिए।
3. आपने अपनी पाठ्यपुस्तक में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध 'नाख़ून क्यों बढ़ते हैं?' पढ़ा है। इसमें लेखक ने निबंध के किन प्रमुख तत्त्वों को प्रधानता दी है– संक्षेप में लिखिए।

प्रश्नपत्र का प्रारूप

कुल अंक :- 100 *समय : 3 घंटे*

1. उद्देश्यानुसार अंक विभाजन

क्र.म.	*उद्देश्य*	*अंक*	*अंक प्रतिशत*
1.	ज्ञान	30	30%
2.	अर्थग्रहण/बोध	35	35%
3.	अभिव्यक्ति/अनुप्रयोग	25	25%
4.	सराहना एवं जीवन कौशल	10	10%
	कुल	100	100

2. प्रश्नों के प्रकारानुसार अंक विभाजन

प्रश्न-प्रकार	*प्रश्न संख्या*	*अंक*
बहुविकल्पी प्रश्न (MCQ)	11	11
अति लघूत्तर (VSA)	33	33
लघूत्तर (SA)	14	31
निबंधाात्मक (E)	04	25
योग	62	100

प्रश्नपत्र	कठिनाई स्तर	अंक प्रतिशत
	कठिन	15%
	औसत	50%
	सरल	35%

3. प्रश्नों के प्रकार के अनुसार विवरण

कविता-पठन:

(i) पाँच अंक के पाँच बहुविकल्पीय ज्ञानात्मक प्रश्न 1 x 5 = 5

(ii) छह अंक के छह अतिलघूत्तरीय ज्ञानात्मक प्रश्न 1 x 6 = 6

(iii) किन्हीं दो पाठों में से दिए गए काव्यांशों में से एक पर आधारित कवि और कविता का नामोल्लेख करते हुए काव्य-सौंदर्य का स्पष्टीकरण 5 x 1 = 5

(iv) चार बोधात्मक प्रश्नों में से कोई तीन प्रश्न 2 x 3 = 6

(v) दो अनुप्रयोग संबंधी प्रश्नों में से कोई एक प्रश्न 3 x 1 = 3

गद्य-पठन: (i) छह अंक के छह बहुविकल्पीय ज्ञानात्मक प्रश्न 1 x 6 = 6

(ii) सात अंक के सात लघूत्तरीय ज्ञानात्मक प्रश्न 1 x 7 = 7

(iii) किन्हीं दो पाठों में से दिए गए दो अनुच्छेदों में से एक पर आधारित पाठ तथा लेखक का नामोल्लेख करते हुए मूलभाव तथा अनुप्रयोग-संबंधी प्रश्न 5 x 1 = 5

(iv) पाँच बोधात्मक प्रश्नों में से कोई चार प्रश्न 2 x 4 = 8

(v) चार बोधात्मक प्रश्नों में से कोई तीन प्रश्न 3 x 3 = 9

अपठित-पद्य : कोई काव्यांश देकर, उस पर आधारित पाँच बोधात्मक अति-लघूत्तरीय प्रश्न 1 x 5 = 5

अपठित-गद्य : कोई गद्यांश देकर, उस पर आधारित पाँच बोधात्मक अति-लघूत्तरीय प्रश्न 1 x 5 = 5

व्याकरण : दिए गए पाठ्यक्रम पर आधारित अनुप्रयोग के दस अति-लघूत्तरीय प्रश्न 1 x 10 = 10

सार-लेखन : किसी गद्यांश (150 से 200 शब्दों का) का एक तिहाई शब्दों में सार-लेखन 5 x 1 = 5

पत्र-लेखन : दिए गए दो पत्रों (एक औपचारिक और एक अनौपचारिक) में से कोई एक पत्र 5 x 1 = 5

निबंध-लेखन : दिए गए किन्हीं चार-पाँच विषयों में से एक विषय पर लगभग 300 शब्दों का एक निबंध 10 x 1 = 10

4. विषय वस्तु के अनुसार अंक विभाजन

इकाई/उप इकाई		निर्धारित अंक	योग
• **पठन-बोध : पाठाधारित**		गद्य - 35 कविता - 25	60
• **पठन-बोध : अपठित**		गद्य - 05 कविता - 05	10
• **व्याकरण तथा भाषा प्रयोग**			
भाषा/राजभाषा/संपर्क भाषा	1		
शब्द-भेद	1		
संधि/समास	1		
उपसर्ग / प्रत्यय	1	10	10
वाक्य-भेद - संरचना के आधार पर	1		
वाक्य : अशुद्धि-शोधन	2		
विराम-चिह्न	1		
मुहावरे-लोकोक्तियाँ	2		
• **लेखन**			
सार-लेखन	5		
पत्र-लेखन	5		
निबंध-लेखन	10		20
			100

टिप्पणी :- यह महत्वपूर्ण है कि 2012 परीक्षा से हिंदी के प्रश्नपत्र के स्वरूप में कुछ परिवर्तन किए गए हैं। प्रश्नों के अंतर्गत यथास्थान जीवन कौशलों (निर्णय क्षमता, समस्या समाधान, दबाव या भावनाओं के साथ तालमेल, परस्पर संबंध, स्व जागरुकता, समानुभूति इत्यादि) के तत्वों को शामिल किया जाएगा।

इसका लक्ष्य इस बात की परख करता है कि शिक्षार्थी ने जीवन की परिस्थितियों के साथ कितने बेहतर ढंग से तालमेल बनाने की क्षमता विकसित की है। जीवन कौशलों को बोधात्मक तथा अनुप्रयोग संबंधी प्रश्नों में सम्मिलित किया जाएगा।

इस बात का ख्याल रखा जाएगा कि प्रश्नपत्र में अलग-अलग तरह के जीवन कौशलों को शामिल किया जाए। जीवन कौशल पर आधारित कुछ प्रश्न इस प्रकार हैं–

1. 'बूढ़ी पृथ्वी का दु:ख' कविता में बूढ़ी पृथ्वी का दुख चित्रित किया गया है। इस दुख को दूर करने के लिए आप कौन-कौन से उपाय सुझायेंगे और क्यों? 3 अंक

   (जीवन कौशल : आलोचनात्मक चिंतन)

2. 'आजादी' कविता में जिस आजादी का वर्णन है? क्या आप उससे सहमत हैं? वास्तविक आजादी की चुनौती से जूझने के लिए आप कौन-कौन से रास्ते उपयोगी मानते हैं? 4 अंक

   (जीवन कौशल : समस्या समाधान)

3. 'गिल्लू' संस्मरण न केवल पशु-पक्षी का उल्लेख करता है बल्कि हमारी संवेदना को जगाता है।' इस कथन से क्या आप सहमत हैं और क्यों? 4 अंक

   (जीवन कौशल : समानुभूति)

   (टिप्पणी:- उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर में शिक्षार्थी की तर्क क्षमता, विश्लेषण क्षमता तथा अभिव्यक्ति कौशल के आधार पर अंक दिए जाएँगे।)

माध्यमिक स्तर

हिंदी

नमूने का प्रश्न पत्र

समय: 3 घंटे कुल अंक: 100

निर्देश: सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सामने दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए: $1 \times 5 = 5$

   (i) 'इसे जगाओ' कविता में सूरज, पवन और पंछी को 'भई' कहा गया है, यह संबोधन है:

   (क) आत्मीय (ख) श्रद्धासूचक

   (ग) औपचारिक (घ) आदरसूचक

   (ii) 'आह्वान' कविता में 'दीपक' भाग्य है, 'तेल' क्या है?

   (क) विधाता (ख) प्रेम

   (ग) कर्म (घ) शांति

   (iii) 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता में विवाह के रूपक में प्रकृति किसकी भूमिका निभा रही है?

   (क) दुल्हन की (ख) माँ की

   (ग) सहेली की (घ) प्रेमिका की

   (iv) कबीरदास ने घर में बढ़ते धन की तुलना किससे की है?

   (क) पानी में घिरी नाव से (ख) अँजुरी में भरे पानी से

   (ग) अनेक प्रकार की बुराइयों से (घ) नाव में भरते पानी से

   (v) 'बीती विभावरी जाग री', कविता में 'नागरी' किसे कहा गया है?

   (क) भँवरों को (ख) भोर को

   (ग) सुंदर स्त्री को (घ) मालिन को

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अधिकतम एक वाक्य में लिखिए : $1 \quad 6 = 6$

   (i) 'आज़ादी' कविता के अंत में शागिर्द द्वारा सुई में धागा पिरोने लगना क्या सूचित करता है?

   (ii) कबीर ने निंदक को निकट रखने का परामर्श क्यों दिया है?

   (iii) 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में हवा को किस रोग से ग्रस्त दिखाया गया है?

   (iv) 'उनको प्रणाम' कविता में किन लोगों के प्रति श्रद्धा का भाव है?

(v) वृंद के अनुसार चतुर और ज्ञानी बनने के लिए क्या आवश्यक है?

(vi) 'खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा...' में कौन-सा अलंकार है

3. निम्नलिखित काव्यांश किस पाठ से लिया गया है, इसके कवि के नाम का उल्लेख करते काव्यांश का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। 5

आओ, मिल सब देश-बांधव हार बनकर देश के,
साधक बनें सब प्रेम से सुख-शांतिमय उद्देश्य के।
क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो!
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?

अथवा

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 25-25 शब्दों में लिखिए : 2 3=6

(क) 'उनको प्रणाम' कविता में असफल लोगों के प्रति अभिव्यक्त दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण कीजिए।

(ख) 'बीती विभावरी जाग री' कविता में कवि किसे और क्यों जगाना चाहता है?

(ग) कबीर ने गुरु की तुलना कुम्हार से क्यों की है?

(घ) 'इसे जगाओ' कविता में कवि ने सोए हुए आदमी को जगाने का आग्रह किस-किस से किया है और क्यों?

5. निम्नलिखित प्रश्न का लगभग शब्दों में दीजिए : 3

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में बूढ़ी पृथ्वी का दुख चित्रित किया गया है। इस दुख को दूर करने के लिए क्या-क्या उपाय हो सकते हैं?

अथवा

'आज़ादी' कविता के आधार पर आज़ादी और कर्म के संबंध का स्पष्टीकरण कीजिए।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए: 1 6=6

(i) 'सुखी राजकुमार' कहानी में गोरैया ने मिस्र जाने का विचार त्याग दिया, क्योंकि
(क) वह नगर की निर्धन जनता की सहायता करना चाहती थी।
(ख) वह परोपकारी राजकुमार को असहाय नहीं छोड़ना चाहती थी।
(ग) उसका अपने साथियों के पास पहुँचने का समय बीत चुका था।
(घ) वह अत्यधिक अशक्त और बीमार हो चुकी थी।

(ii) कौन-सा तत्त्व नाटक को अन्य गद्य विधाओं से अलग करता है?
(क) संवाद (ख) कथानक
(ग) भाषा-शैली (घ) अभिनेयता

(iii) 'रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी' - 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में यह किसके बारे में कहा गया है?

(क) बेगम (ख) मीर साहब

(ग) मिरजा (घ) शतरंज

(iv) 'गिल्लू' पाठ में किन दो विधाओं का संयोग है?

(क) रेखाचित्र और संस्मरण (ख) संस्मरण और रिपोर्गज

(ग) रेखाचित्र और रिपोर्ताज (घ) रेखाचित्र और जीवनी

(v) पुस्तकें मँगवाने के लिए पुस्तक-विक्रेता को लिखा गया पत्र किस प्रकार का होगा?

(क) व्यक्तिगत पत्र (ख) अनौपचारिक पत्र

(ग) व्यावसायिक पत्र (घ) प्रार्थना पत्र

(vi) 'ऐसा न हो कि यह बेवकूफ़ इस बात पर सारे नगर को फूँक दे या फाँसी दे दे'– 'अंधेर नगरी' नाटक में यह कथन है–

(क) महंत का (ख) मंत्री का

(ग) गोबरधनदास का (घ) कोतवाल का

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में लिखिए: 1 7=7

(i) 'मास्ट हेड' किसे कहते हैं?

(ii) अनौपचारिक पत्र के किन्हीं दो संबोधनों का उल्लेख कीजिए।

(iii) 'सुखी राजकुमार' कहानी में गोरैया राजकुमार को छोड़कर क्यों नहीं जाती?

(iv) किस खास तरह के प्रोटीन के माफ़िक न आने से होने वाले रोग को क्या कहते हैं?

(v) मदर टेरेसा का जन्म किस देश में हुआ था?

(vi) गिल्लू ने गर्मियों में लेखिका के पास रहने का क्या तरीका निकाला?

(vii) किशोर ने बहादुर की पिटाई क्यों की?

8. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 1+2+2=5

मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा? बड़े-बड़े नेता कहते हैं, वस्तुओं की कमी है, और मशीन बढ़ाओ, और उत्पादन बढ़ाओ और धन की वृद्धि करो, और बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाओ। एक बूढ़ा था। उसने कहा था- बाहर नहीं, भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ, क्रोध और द्वेष को दूर करो, लोक के लिए कष्ट सहो, आराम की बात मत सोचो, प्रेम की बात सोचो, आत्म-तोषण की बात सोचो, काम कने की बात सोचो। उसने कहा- प्रेम ही बड़ी चीज़ है, क्योंकि वह हमारे भीतर है। उच्छृंखलता पशु की वृत्ति है, 'स्व' का बंधन मनुष्य का स्वभाव है। बूढ़े की बात अच्छी लगी या नहीं, पता नहीं। उसे गोली मार दी गई, आदमी के नाखून बढ़ने की प्रवृत्ति ही हावी हुई। मैं हैरान होकर सोचता हूँ- बूढ़े ने कितनी गहराई में बैठकर मनुष्य की वास्तविक चरितार्थता का पता लगाया था।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम बताइए।

(ख) गद्यांश का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(ग) आज के परिवेश में बढ़ती हिंसा को रोकने के क्या-क्या उपाय हो सकते हैं? 60 शब्दों में लिखिए।

अथवा

वाजिदअली शाह का समय था। लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था। छोटे-बड़े, गरीब-अमीर सभी विलासिता में डूबे हुए थे। कोई नृत्य और गान की मजलिस सजाता था, तो कोई अफ़ीम की पिनक ही में मज़े लेता था। जीवन के प्रत्येक विभाग में आमोद-प्रमोद का प्राधान्य था। शासन-विभाग में, साहित्यिक क्षेत्र में, सामाजिक अवस्था में, कला-कौशल में, उद्योग-धंधों में, आहार-व्यवहार में सर्वत्र विलासिता व्याप्त हो रही थी। राज कर्मचारी विषय-वासना में, कविगण प्रेम और विरह के वर्णन में, कारीगर कलाबत्तू और चिकन बनाने में, व्यवसायी सुरमे, इत्र, मिस्सी और उबटन का रोज़गार करने में लिप्त थे। सभी की आँखों में विलासिता का मद छाया हुआ था। संसार में क्या हो रहा है, इसकी किसी को खबर न थी।

(क) यह गद्यांश किस पाठ से है? इसके लेखक कौन हैं?

(ख) उपर्युक्त गद्यांश की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) गद्यांश में वाजिदअली शाह के समय में समाज के पतन के कारणों की ओर संकेत किया गया है। आज के समय में सामाजिक पतन के कारणों का उल्लेख कीजिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 20-20 शब्दों में लिखिए : 2 4=8

(क) 'अपना-पराया' पाठ के आधार पर बताइए कि एलर्जी किसे कहते हैं? इसके दो लक्षण भी लिखिए।

(ख) 'अंधेर नगरी' नाटक में अंग्रेज़ों के कुशासन पर व्यंग्य किया गया है- दो उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

(ग) प्राचीन काल में नाखून बढ़ाना उचित था और आज काटना- ऐसा क्यों हैं? 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' पाठ के आधार पर लिखिए।

(घ) सार-लेखन का आशय स्पष्ट करते हुए सार-लेखन की प्रक्रिया के प्रारंभिक दो चरणों का उल्लेख कीजिए।

(ङ) मीर और मिरज़ा ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय क्यों लिया?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 30-30 शब्दों में लिखिए : 3 3=9

(क) 'भारत की ये बाहदुर बेटियाँ' पाठ के आधार पर कल्पना चावला के व्यक्तित्व की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) समाचारों के चयन में बरती जाने वाली किन्हीं तीन सावधानियों पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'मूर्ति और मनुष्य' कहानी में गौरैया के व्यवहार में आए परिवर्तन के कारणों पर एक टिप्पणी लिखिए।

(घ) 'बहादुर' कहानी के आधार पर मध्यवर्गीय परिवार की किन्हीं तीन प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

11. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1 5=5

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली
दरवाज़े खिड़कियाँ खुलने लगे गली-गली
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए।
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी, घूँघट सरके,
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

(क) मेघों के आगमन की तुलना किससे की गई है?

(ख) गली-गली के दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने का कारण क्या है?

(ग) 'बाँकी चितवन उठा नद ठिठकी' में कौन-सा अलंकार है?

(घ) गाँव में मेघों के आने की सूचना कौन दे रहा है?

(ङ) गाँव के बड़े बुज़ुर्गों की भूमिका कौन निभा रहे हैं?

12. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1 5=5

हमारे गाँव आत्मनिर्भर नहीं हैं। कहीं-कहीं स्वास्थ्य-शिक्षा तो छोड़िए, भोजन-पानी की बुनियादी सुविधाएँ भी नहीं है। इतनी असुविधाओं में जीवनयापन दुष्कर है। इसीलिए लोग गाँव छोड़कर शहरों की ओर आते हैं। वे विवशता में अपना घर छोड़ते है। कोई भी अपनी जड़ें नहीं त्यागना चाहता। जड़ों से कटकर लोगों में भावनात्मक खिन्नता भी आ जाती है। व्यक्तिगत रूप से मेरा मानना है कि हम सभ्य समाज में रहते हैं, इसलिए हमें अपने देश को गाँवों और शहरों में बाँटकर नहीं देखना चाहिए। इसके लिए यह भी जरूरी है कि हमारे जो भी संसाधन हैं, सुविध ाएँ या असुविधाएँ हैं, सीमाएँ या उपलब्धियाँ हैं- उनका इस्तेमाल भी बराबरी से हो। यह नहीं कि शहरों में अधि क और गाँवों में कम। शहरों की पब्लिक तो रिपब्लिक के मज़े ले रही है और गाँव के गण अभी गणतंत्र से दूर हैं। गाँव और शहर की यह दूरी पाटने के लिए हमें गाँवों की ओर ध्यान देना होगा।

(i) गाँवों से शहरों की ओर आने पर प्रमुख कारण क्या है?

(ii) गाँवों और शहरों को बाँटकर न देखने के लिए क्या करना ज़रूरी है?

(iii) 'गाँव के गण अभी गणतंत्र से दूर हैं'– आशय स्पष्ट कीजिए।

(iv) 'कोई भी अपनी जड़ें नहीं त्यागना चाहता'- इस वाक्य में 'जड़ें' से क्या तात्पर्य है?

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

13. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1 10=10

(i) संधि-विच्छेद कीजिए : जन्मोत्सव, स्वाधीन

(ii) विग्रहपूर्वक समास का नाम लिखिए : <u>देशभक्ति</u> अथवा <u>रात दिन</u>

(iii) 'अनु' उपसर्ग से दो शब्द बनाइए।

(iv) वह गोरों की फौज थी जो लखनऊ पर अधिकार जमाने आई थी।

(सरल वाक्य में बदलिए)

(v) चार का गजर बज ही रहा था कि फौज की वापसी की आहट मिली।

(रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए)

(vi) अरे तुम इतने बड़े हो गए

(यथास्थान उपयुक्त विराम चिह्न लगाइए)

(vii) दाँत खट्टे करना, नाक कटाना, (किसी एक मुहावरे का वाक्य-प्रयोग कीजिए)

(viii) दुर्जन लोग किसी का भला नहीं करते। (वाक्य को शुद्ध रूप में लिखिए)

(ix) मदन, गोपाल और गीता जा रही है। (वाक्य को शुद्ध रूप में लिखिए)

(x) 'इक' प्रत्यय से दो शब्द बनाइए।

14. निम्नलिखित गद्यांश का सार लगभग एक तिहाई शब्दों में लिखिए : 5

मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनंद-प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है। पर, उस सुख और उत्सव के इस आनंद में बड़ा अंतर है। आवश्यकता अभाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि हममें किसी बात की कमी है। मनुष्य-जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि अब उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। एक के बाद दूसरी वस्तु की चिंता उसे सताती ही रहती है। इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है, वह अत्यंत क्षणिक होता है,, क्योंकि तुंरत ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। यही नहीं, उस दिन हम अपने काम-काज छोड़कर विशुद्ध आनंद की प्राप्ति करते हैं। यह आनंद जीवन का आनंद है, काम का नहीं। उस दिन हम अपनी सारी आवश्यकताओं को भूलकर केवल मनुष्यत्व का ख़्याल करते हैं। उस दिन हम अपनी स्वार्थ-चिंता छोड़ देते हैं, कर्त्तव्य-भार की उपेक्षा कर देते हैं तथा गौरव और सम्मान को भूल जाते हैं। उस दिन हममें उच्छृंखलता आ जाती है, स्वच्छंदता आ जाती है। उस रोज़ हमारी दिनचर्या बिलकुल नष्ट हो जाती है। व्यर्थ घूमकर, व्यर्थ काम कर, व्यर्थ खा-पीकर हमलोग अपने मन में यह अनुभव करते हैं कि हम लोग सच्चा आनंद पा रहे हैं।

15. टी.वी. पर बढ़ती हिंसा और अश्लीलता के विरोध में अपने विचार व्यक्त करते हुए 'दैनिक हिन्दुस्तान' के संपादक के नाम एक पत्र लिखिए। 5

अथवा

आप ग्रीष्मावकाश में नैनीताल के पर्यटन पर जाना चाहते हैं। निदेशक, पर्यटन विभाग, नैनीताल को पत्र लिखकर नैनीताल और आसपास के दर्शनीय स्थलों तथा आवास और भोजन आदि की व्यवस्था के बारे में जानकारी प्रदान करने का अनुरोध कीजिए।

16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए: 10

(क) सब पढ़ें, सब बढ़ें

(ख) समाचार पत्र

(ग) क्या नहीं कर सकती नारी!

(घ) मोबाइल फ़ोन : लाभ और हानियाँ

प्रश्नपत्र अंक योजना

1.	उत्तर	अंक
	(i) (क)	1
	(ii) (ग)	1
	(iii) (ख)	1
	(iv) (ग)	1
	(v) (ग)	1

2.	(i)	अपने काम पर लग जाना	1
	(ii)	उसकी निंदा सुनकर हम अपनी बुराइयाँ दूर कर सकेंगे।	1
	(iii)	तपेदिक या टी.बी. से	1
	(iv)	पूरा प्रयास करने पर भी जो सफलता प्राप्त नहीं कर पाए	1
	(v)	अभ्यास करना	1
	(vi)	यमक, अनुप्रास (किसी एक का उल्लेख)	1

3. आओ, मिलें ..... सुमनों की कहो? ½

कविता : आह्वान ½

कवि : मैथिलीशरण गुप्त

काव्य-सौंदर्य : विविध प्रकार के फूलों के हार के रूप में विभिन्न जाति-संप्रदाय के लोगों की कल्पना। भिन्नता एकता में बाधा नहीं। सुख और शांति के लिए मिलकर प्रयासरत होने पर बल। धर्मों के अलग होने के बावजूद राष्ट्र के रूप में एकता का आह्वान। सरल भाषा। दृष्टांत का सुंदर उपयोग। प्रश्न के माध्यम से संदेश देना।

3

अभिव्यक्ति 1

अथवा

पावस देखि ..... पूछत कौन।

पाठ : दोहे

कवि : रहीम

काव्य-सौंदर्य : बरसात के मौसम में कोयल के मौन साध लेने और मेंढकों के टर्राने लगने के दृष्टांत के माध्यम से ज्ञानी व्यक्ति के व्यक्तित्व का उल्लेख। मूर्खों के शोर मचाने पर विद्वान चुप हो जाता है, क्योंकि शोर-शराबे में ज्ञान की बातें खो जाती हैं। वह उपयुक्त समय की प्रतीक्षा में चुप होता है, ज्ञान की व्यर्थता महसूस करके नहीं।

दोहा छंद, ब्रजभाषा, सरल अभिव्यक्ति, दृष्टांत

अभिव्यक्ति

4. क. – उनके प्रति आदर भावना (1+1)=2

– उनके योगदान को याद करना (1+1)=2

ख. – युवती को, क्योंकि सुबह हो चुकी है। (1+1)=2

ग. कुम्हार जिस प्रकार घड़ा बनाने में सहारा भी देता है और थपकी भी, उसी प्रकार गुरु भी शिष्य का व्यक्तित्व संवारने में सहारा भी देता है और डाँट-डपट भी करता है। (1+1)=2

घ. – सूरज, पवन, पंछी से

– ये प्रात:काल होने के और गति-प्रगति के सूचक हैं। (1+1)=2

5. पेड़ों, पहाड़ों, नदियों को मनुष्य द्वारा नष्ट किया जाना और हवा प्रदूषित करना,

उपाय- पेड़ों की रक्षा, पहाड़ों को बचाना, नदियों की रक्षा करना प्रदूषण में कमी,

पौधारोपण, जल स्रोतों की खोज।

(समग्र के आधार पर) 3

अथवा

– आजादी कर्म या श्रम की विरोधी नहीं

– कर्म करने वालों का अधिकार है- सुख भोगना

– जो श्रम नहीं करते वे आजादी के अधिकारी नहीं

– आजादी का अर्थ उच्छृंखला या स्वार्थ नहीं बल्कि कर्त्तव्यपालन

(समग्र के आधार पर)

6.

	उत्तर	अंक
(i)	(ख)	1
(ii)	(घ)	1
(iii)	(ख)	1
(iv)	(क)	1
(v)	(ग)	1
(vi)	(ख)	1

7. (i) मुख पृष्ठ पर ऊपर अखबार की पहचान के लिए दिया जाने वाला उसका नाम 1

(ii) प्रिय/पूजनीय/आदरणीय/मेरे प्यारे ..... कोई दो ½ + ½

(iii) वह परोपकारी राजकुमार को असहाय अवस्था में नहीं छोड़ना चाहती। 1

(iv) एलर्जी 1

(v) जर्मनी 1

(vi) सुराही पर लेट जाना 1

(vii) साइकिल को प्राथमिकता पर साफ न करने के कारण 1

8. (क) नाखून क्यों बढ़ते हैं, हजारीप्रसाद द्विवेदी

(ख) मनुष्य के सुख के कारणों की खोज करते हुए लेखक दो तरह के दृष्टिकोणों की पहचान करता है– मशीनें लगाकर उत्पादन बढ़ाना यानी बाहरी ताकत बढ़ाना और प्रेम, जो बड़ी चीज है, क्योंकि वह हमारे मन में रहता है।

महात्मा गांधी अहिंसा के समर्थक थे, पशुता के विरोधी थे। उनकी हत्या की गई यानी पाशविक प्रवृत्ति ही हावी हुई। 2

(ग) उपाय- असमानता, उपभोक्तावाद और अपरिचय आदि को दूर करके– (समग्र के आधार पर) 2

अथवा

(क) शतरंज के खिलाड़ी, प्रेमचंद ½ + ½

(ख) कथा कहने की शैली, विपरीतार्थक और समान अर्थ वाले शब्द-युग्मों का प्रभावी उपयोग, तत्सम शब्दावली का प्राधान्य, कम शब्दों में व्यापक परिवेश का चित्रण। (समग्र के आधार पर) 2

(ग) अधिक-से-अधिक सुविधाओं को प्राप्त करने की होड़, संयम एवं संतोष का अभाव, असमानता, बेरोज़गारी, राजनीतिक दृष्टिकोण में जनहित की चिंता नहीं, अपरिचय आदि। (समग्र के आधार पर) 2

9. क. किसी वस्तु का माफ़िक न आना 1

छींकें आना, आँख-नाक से पानी बहना, कोई और परेशानी होना। (1+1)=2

ख. नगर का दूर से ही सुंदर दिखाई पड़ना; हाकिम, कर्मचारी, महाजन, व्यापारी, एडिटर, साहबों, पुलिसवालों का उल्लेख करते हुए व्यवस्था पर व्यंग्य मानो राजा विदेश में रहते हैं कहानी के माध्यम से अव्यवस्था पर व्यंग्य। (समग्र के आधार पर) कोई दो उदाहरण देते हुए उल्लेख। (1+1)=2

ग. प्राचीन काल के नाखून हथियार के रूप में प्रयुक्त होते थे, आज वे पशुता की निशानी है। (1+1)=2

घ. किसी कथन/छपी सामग्री के मूलभाव को संक्षेप में कहना

– मूलभाव का चयन

– संबंधित बिंदुओं का चयन ½+½ (1+1)=2

ङ – घर में खेलना बेगम को पसंद नहीं था, नवाब दबाए तलबी से बचने के कारण, (1+1)=2
गोमती के किनारे एकांत था।

10. क. कल्पना चावला के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

– दृढ़ इच्छाशक्ति (1+1+1)=3

– आदम्य साहस और आत्मविश्वास

– कर्त्तव्यनिष्ठा

ख. समाचार चयन की 3 सावधानियाँ (1+1+1)=3

– संवाददाता अपने विवेक के आधार पर

– प्रमुख संवाददाता द्वारा छँटनी

– संपादक के परामर्श से निर्णय

ग. – पहले आत्मसीमित, संसार के दुख-दर्द से अपरिचित

– आत्मविस्तार

– दूसरों के दुख-दर्द से परिचय

– कारण: सुखी राजकुमार का सपंर्क 3

घ. – दिखावा

– उपभोक्तावादी

– वर्गभेद की भावना (1+1+1)=3

11. (i) शहर से गाँव आए 'पाहुन' से 1

(ii) हवा का चलना/पाहुन को देखने की उत्सुकता 1

(iii) मानवीकरण 1

(iv) नाचती-गाती बयार 1

(v) पेड़ 1

12. (i) गाँवों में बुनियादी सुविधाओं का अभाव 1

(ii) संसाधनों, सुविधाओं, उपलब्धियों का इस्तेमाल गाँव और शहर दोनों में समान हो। 1

(iii) गणतंत्र में 'गण' अर्थात आम आदमी महत्त्वपूर्ण है किंतु गाँव के आम आदमी को कोई नहीं पूछता, वे गणतंत्र की सुविधाओं से दूर हैं। 1

(iv) जन्मस्थान, वह स्थान जहाँ उसके पुरखे/पूर्वज जन्मे और रहे। 1

(v) गाँव और शहर/हमारे गाँव/कोई अन्य उपयुक्त शीर्षक। 1

13. (i) जन्म+उत्सव, स्व+अधीन ½+½ =1

(ii) देश के लिए भक्ति- तत्पुरुष

अथवा

रात और दिन - द्वंद्व ½+½ =1

(iii) अनुभव, अनुकरण (कोई दो शब्द) ½+½ =1

(iv) गोरों की वह फौज लखनऊ में अधिकार जमाने आई थी। 1

(v) मिश्रवाक्य 1

(vi) अरे, तुम इतने बड़े हो गए! ½+½ =1

(vii) मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करने वाले वाक्य 1

(viii) दुर्जन किसी का भला नहीं करते। 1

(ix) मदन, गोपाल और गीता जा रहे हैं। 1

(x) सामाजिक, ऐतिहासिक, नैतिक, धार्मिक आदि जैसे किन्हीं दो का उल्लेख ½+½ =1

14. **सार लेखन**

मूल-बिंदुओं का उल्लेख 2

एक तिहाई शब्दों में सार 2

भाषा-शुद्धता 1

15. **पत्र लेखन**

– पत्र की औपाचारिकताएं 2

– प्रश्नानुसार विषयवस्तु 2

– प्रस्तुति और भाषा 1

16. **निबंध लेखन**

– प्रारंभ/भूमिका 2

– विषयवस्तु 4

– प्रस्तुति 2

– भाषा-कौशल 2

❑❑❑